मरजादक भोज

नन्द विलास राय



मरजादक भोज

नन्द विलास राय



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-55-1

दाम : ₹ 250/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MARJADAK BHOJ
Collection of Short Stories by Sh. Nand Vilas Roy.

परम पूज्य पिता स्व. बच्चा राय एवम् पूज्यनीया माता
स्व. दुर्गादेवीक स्मृतिमे

अग्रज श्री नन्द कुमार राय
भातीज द्वय- वीरेन्द्र, धीरेन्द्र
पुत्री द्वय- किरण आ वन्दनाकें
ससिनेह

संगे
समस्त मैथिलीभाषीकें
सादर समर्पित

कथाक सत्तैर-

मदन अमर/19

दिव्या/25

सभसँ बड़का भीआईपी गेष्ट/33

अपन जाति/44

इनारक पानि/52

हमर पत्नीक मनोरथ/65

चरित्तर कक्काक ब्लडपेसर/77

कटही साइकिल/83

सरकार हम पापी छी/90

शिक्षाक अन्तिम उदेस/99

हमर लॉटरी निकलल/105

टेट्रा हीरो/116

मरजादक भोज/131

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिलामे भपटियाही गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जनम भेल। पिताजी स्व. बच्चा राय मेहनती आ स्वाभिमानी छला। तीन भाँइक भैयारीमे हम सभसँ छोट छी। माए-बाबू बेसी पढ़ल तँ नै रहैथ मुदा नाम-गाम लिखब-पढ़ब अबैत रहैन। हमरा पढ़बैमे माए-बाबूक संग भैयारी सबहक सेहो सहयोग रहल।

नरहिया हाई स्कूलसँ मैट्रिक केला पछाइत निर्मली कौलेज निर्मलीमे नाओं लिखेलौं। किछु दिन निर्मली बजारमे एकटा भाड़ाक कोठरीमे रहलौं पछाइत श्री रामजी प्रसाद मण्डलक घरमे रहए लगलौं। अपनो पढ़ी आ हुनको वालक सभकेँ पढ़ाबी। रामजी प्रसाद मण्डलजी निर्मली कौलेजमे पुस्तकालयाध्यक्ष पदपर नौकरी करै छला। जइसँ रंग-बिरंगक पोथीसँ लगलगाउ रहल। जइसँ छोट-छीन कविता हिन्दी भाषामे लिखए लागलौं। निर्मली कौलेजसँ बी.एस-सी केला पछाइत घोघरडीहा आइ.टी.आइ.सँ टर्नर ट्रेडमे प्रशिक्षण सेहो प्राप्त केलौं।

जखन इण्टरमे पढ़ैत रही तहिए बिआह भऽ गेल। दू बरख पछाइत दुरागमन भेल। पत्नी तरही (नेपाल)सँ आबि भपटियाहीमे रहए लगली। बी.एस-सी आ आइ.टी.आइ. केला पछाइत सरकारी नौकरी लेल प्रयास करए लगलौं। वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा परियोजना लौकहीमे अंशकालिन पर्यवेक्षक पदपर चयन भेल। मात्र

तीन सए टाका मानदेय भेटै छल। तीन सत्र ओ काज केलौं। आशा रहए जे सरकार हमरा सभकेँ नियमित कऽ देत अथवा दोसर कोनो विभागमे देत। मुदा से किछु ने भेल।

पर्यवेक्षक पदसँ हटला पछाइत संस्कृत उच्च विद्यालय धमौरामे विज्ञान शिक्षक पदपर काजरत् भेलौं। पाँच बरख धरि ओतए रहलौं। काज केलौं। विद्यालयकेँ प्रस्वीकृतिओ भेटल मुदा शिक्षक आ कर्मचारीकेँ वेतनक भुगतान नै भेल। थाकि-हारि हम सभ वर्ग संचालन बन्न कऽ देलौं। भुखे भजन न होइ गोपाला। आखिर केतेक दिन पेटमे जुन्ना बान्हि काज करितौं।

हमर ससुर महराज नेपालक सांसद भेला। हम हुनका लग नेपाल गेलौं। सोचने रही ओतै कोनो व्यवसाय-वेपार करब। कऽ तँ सकैत रही गामोमे मुदा पूजी नै रहने नेपाल गेलौं। ससुरपर आश समीचिन बुझाइत रहए। तीन बरख धरि नेपालमे रहलौं। सासुरमे बेसी दिन रहैबलाकेँ कोन-कोन अपमान सहए पड़ै छै से हमरो सहए पड़ल। मुदा रही लोभमे फँसल तँए नै गुदानिऐ। भेटल तँ किछु नै मुदा तीन बर्खक समए बेरबाद भऽ गेल। जेतेक दिन नेपालमे रहलौं ओतेक दिन हमरा जीवनक कारी अध्यायक रूपमे अखनो बुझना जाइत अछि।

नेपालसँ गाम एला पछाइत, गामे धेलौं। माए-बाबूजी वृद्ध सेहो भऽ जाइ गेल छेला। हिनका सभकेँ छोड़ि दिल्लीओ-पंजाव गेनाइ उचित नै बुझि पबी। तीन बरख पछाइत माए-बाबू एक्के सालक अन्तरालपर स्वर्गवास भऽ गेला। स्थिति आरो बिगड़ि गेल। कोनो अवलम्ब नै देख आने-आन जकाँ दिल्ली विदा भेलौं। दिल्लीओमे रहल नै पार लगल। किएक तँ जाइते बोखार पकैड़ लेलक। डेंगूक हवा बहि गेल रहै। डरे महिने दिन पछाइत गाम चलि एलौं। पत्नीक जेबरसँ आ किछु हथपैंच लऽ नरहिया बजारमे खादक दोकान खोललौं।

हलाँकि ओहो नै चलल कारण कम पूजीक चलैत जे समस्या अबै छै तही सभमे लटपटाइत बन्न भऽ गेल।

खेतीवारी सँ थोड़-थाड़ लाट गाममे रहने भऽ गेल रहए जहीपर धियान दऽ ओकरे पकैड़ अखनो चलि रहल छी।

छात्रे जीवनसँ राजनीतिसँ लगाउ रहल अछि। जय प्रकाश बाबूक आन्दोलनमे सेहो भाग नेने छी। जखन २००१ई.मे बिहारमे पंचायत चुनाव भेल तँ हमहूँ अपना पंचायत छजनासँ पंचायत समितिक सदस्य लेल ठाढ़ भेलौं। जीतलौं। पंचायत विकास कार्यमे पाँच बरख धरि अपसियाँत रहलौं।

पहिनहियेँ कहल अछि जे विद्यार्थीए जीवनसँ किछु-किछु लिखै-पढ़ैक रूचि रहए। से मुदा हिन्दीमे लिखैत रही आ लिखि-लिखि रखैत रही। कहियो प्रकाशन लेल प्रयास नै केलौं। फुलपरास उच्च विद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहमे कवि सम्मेलनक आयोजन भेल रहए। पहिल कविताक पाठ ओतइ केलौं।

१४ अप्रिल २००८ई.कैं रानीगढ़ी मेला, मझौरामे डॉक्टर अम्बेदकर जयन्तीक अवसरपर श्री जय प्रकाश मण्डल विचार गोष्ठीक आयोजन केने छला। ओही आयोजनमे उमेश मण्डलजी सँ परिचए भेल। विदेह ई पत्रिकाक सम्बन्धमे जनतब भेल। मैथिली रचना प्रकाशनक बाट देखते जेना जोश आबि गेल। तहिएसँ मैथिलीमे छी।

उमेश मण्डल जीक खबरिपर कबिलपुरक 'सगर राति दीप जरए' कथा गोष्ठीमे गेलौं। ओतए बहुतो कथाकारक अलाबे श्री गजेन्द्र ठाकुरसँ सेहो मिलन भेल। गप-सप्प भेल। प्रभावित तँ रहबे करी जे आरो प्रभावित भेलौं। वास्तवमे, आधुनिक मनुखक माने सभ्य मनुखक जे चालि-बेवहार हेबाक चाही से हुनकामे देखलौं। पहिल कथा गोष्ठी छल। पैघ-पैघ साहित्यकार सभ रहैथ। जहिना चन्द्रमाक

सामने भगजोगनी रहैत तनाहियेँ हम हुनका सबहक सोझहामे छेलौं। भोरहरबामे कथा पाठक समए भेटल। कथाक शीर्षक रहए- 'जे विद्वान से बेइमान।' समीक्षक लोकैन कथापर टिप्पणी नै कऽ शीर्षकपर अड़ि गेला। ओना किछु गोरे शिल्पक तँ किछु गोरे बनाबटि तँ किछु गोरे अकारपर सेहो किछु शब्द रखलखिन मुदा विषय-वस्तुपर सेहो नहि। बड़बढ़ियाँ, कथाक पाठक अवसरसँ जोश बढ़ल। आरो-आरो गोष्ठीमे जाए-आबए लगलौं।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी पोथी कबिलपुरमे लोकापर्ण भेल। एक प्रति हमरो भेटल। चौथा-पचमामे पढ़ै छेलौं तँ गणीतक कुंजी देख-देख हिसाब बनाबी। तेनाहियेँ आइ कथा लिखैमे गामक जिनगी बुझाइए। एकटा गुरुक काज दऽ रहल अछि।

1968-69 इस्वीक बात छी। मौसीक बिआहमे मामा गाम गेल रही। तहिया बरियाती बिआहक राति अबै छल, दोसर दिन रूकै छल आ तेसर दिन जलखै खा कऽ विदा होइत छल। मौसीक बिआहक विहान भनेक बात छी, बरियाती सभ जलखै खा कऽ आराम कए रहल छला। एक घन्टाक पछाइत सियालाल दास गबैया अपन गान-बजानक संग कार्यक्रम प्रस्तुत केलैन। हमहूँ जलखै खा नेने रही। पितियौत मामक दरबज्जापर गेलौं तँ दू गोरेकेँ केराक छाजाकेँ टोनियबैत देखलौं। हम ओतए ठाढ़ भऽ गेलौं। दुनू गोरे, जे केराक पात टोनिया रहल छला ओइमेसँ एक गोरे उठि कऽ चुन आनए उठि कऽ आँगन गेला। तैबीच हम हाँसू लऽ केराक पातकेँ टोनियाबए लगलौं। दोसर बेकती जे पात टोनिया रहल छला बजला-

"बौआ, पात छोट होइ छह। ऐ पातपर मरजादक भोज खाएल जाएत। तँए पात नमहर हेबाक चाही।"

पुछलयैन-

“पात किएक नमहर हेबाक चाही, मरजादक भोजमे एहेन कोन विशेषता छइ?”

तैपर ओ बजला-

“जखन साँझमे मरजाद भोज खेबहक ने तखन अपने बुझि जेबहक।”

साँझमे मरजाद भोज शुरू भेल। बर, बरक पिताजी, बरक मामा, बरक बहनोइ मिला कऽ सात गोरे मरबापर खेनाइ खाइले बैसला। बाँकी बरियाती आ सर-कुटुम सभ आँगनसँ लऽ कऽ दरबज्जा धरि बैसला। तैसंग, गौंआँ नोतहारी सभ सेहो खरिहाँनमे बैसला। हमहूँ अँगनेमे मरबाक निच्चामे बैसलौं। मरबापरसँ पात बाँटब शुरू भेल। पातक पाँछा एक गोरे डोलमे पानि लेने पातपर छिच्चा देबए लगल। तेकर पछाइत बासमती चाउरक भात, भातक पाछाँ राहैरक दालि आ डलना बाँटल गेल। डलना कोबी, अल्लु, कदीमा, केरा आ बदामक मिश्रीत तरकारी रहए। तेकर बाद तिलक चटनी, औराक अँचार, अल्लुक अँचार, कोबी, अल्लु, बैगन आ केराक तरूआक संग बड़ सेहो बाँटल गेल। बड़ तेबरखा दालिक कचरीक आकारक बनल रहए। ई सभ विन्यास बँटलाक बाद एक गोरे पापड़ आ तेकर पाछाँ शुद्ध देशी घी बाँटए लगल। तरूआ, भुजुआ आ अँचारसँ पातपर कनिक्को जगह नइ बँचल। आब हमरा बुझबामे आएल जे केराक पात नमहर किएक टोनियबैले कहने रहैथ। घी पड़लाक बाद भोजन शुरू भेल। जखन दालि खेनाइ लोक बन्न केलक तखन बैगन-अदौरी बाँटल गेल, तेकर बाद बरी-झोरी चलल। बरी-झोरीक बाद दही-चीनी आ सकरौरी चलल। मरजादक भोजमे किछ नोनगर, किछ खटगर, किछ मीठगर आ किछ चहटगर विन्यास सभ रहए।

जहिना मरजादक भोजमे विभिन्न तरहक विन्यास खुऔल

जाइत अछि तेनाहियेे प्रस्तुत पोथीमे विभिन्न तरहक कथा परसबाक परियास केलौं हेन। तँए ऐ पोथीक नाओं 'मरजादक भोज' राखलौं। ई तँ अपनहि लोकैन निर्णय करब जे मरजादक भोजमे कोन विन्यास (कथा) केतेक चहटगर भेल आ मरजादक भोज बनल की नहि, भोजैत जशक भागी भेल की नहि ई तँ... ।

पोथी लिखलाक बाद प्रकाशनक लेल आर्थिक समस्या उत्पन्न भेल। मुदा आभारी छिऐन श्री नारायण यादवजीक जे पोथीक प्रकाशनक हेतु किछु सहयोग केलैन। हुनका कोटि-कोटि साधुवाद।

पोथी प्रकाशनमे श्री नारायण बाबूक संगे 'उ' अक्षरसँ नाम शुरू होमएबला तीन बेकती आरो सहयोग केलैन। पहिल हमर पत्नी छैथ जेकर नाओं उषा छिऐन। ओना, हिनका कथा गोष्ठी आ कवि सम्मेलनमे हमर भाग लेब नै सोहाइ छैन, किएक तँ ऐ सभसँ हमर पत्नीक परिवारिक काज हर्जा होइ छैन तँए ओ हमरापर बिगड़लो रहै छैथ। मुदा पोथी प्रकाशनक लेल अपन रखलाहा कोशलियासँ एक हजार टाका देली। अत: हुनका बहुत-बहुत धैनवाद।

दौसर बेकती छैथ उमेश पासवानजी। ओ हमर बड़ सम्मान करै छैथ। ओना तँ छैथ ग्रामीण पुलिस मुदा मैथिलीक स्थापित कवि छैथ। फरवरी 2018 मे दिल्लीमे आयोजित युवा कवि महोत्सवमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल छेलैन। श्री उमेश पासवानजी सेहो पोथी प्रकाशनमे आर्थिक सहयोग कलैन। हुनका हार्दिक धैनवाद।

तेसर बेकती छैथ उमेश मण्डलजी। आइ जेतए हम ठाढ़ होबए लेल परियास कए रहलौं हेन तइमे सभसँ अहम भूमिका हिनके अछि। हम 'ए-प्लस बी होल-स्क्वाइर बराबर ए-स्क्वाइर प्लस-टू-ए-बी प्लस बी-स्क्वार' बला लोक रही। यानी हम विज्ञानक छात्र रहलौं। साहित्यसँ

हमरा दूर-दूर धरि सम्बन्ध नइ रहल अछि। मुदा उमेश मण्डलजीक संसर्गमे एलासँ आइ हम छोट-क्षीण आलेख, कथा आ कविता लिख रहल छी। प्रस्तुत पोथीक प्रकाशनमे ओ मात्र आर्थिके सहयोग नहि, अपितु मानसिक आ शारीरिक रूपसँ सेहो सहयोग केलैन। हुनका कोन शब्दसँ धैनवाद दिऐन ओ शब्द हमरा शब्द कोषमे नहि अछि।

श्री दुर्गानन्द मण्डल आ श्री राम विलास साहुजीकेँ सेहो धैनवाद दइ छिऐन किएक तँ ई दुनू बेकती पोथी पढ़ि शाब्दिक अशुद्धिकेँ दूर केलैन। तैसंग निर्मली महाविद्यालयक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शिव कुमार प्रसाद आ सी.एम.बी. महाविद्यालय डेबढ़, घोघरडीहाक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र कुमार राय सेहो हमर मनोबलकेँ बढ़बैत रहला, दुनू विद्वतजनकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

जहियेसँ मैथिली लिखनाइ शुरू केलौं श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मोबाइलपर मार्गदर्शन करैत रहला अछि। हमरा सभ लेल जहिना आशाक किरण छैथ तहिना आगूओ रहता से विश्वास हृदयमे जमि गेल अछि। श्री गजेन्द्रजीकेँ कोटि-कोटि साधुवाद।

साहित्य सम्राट श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, हिनक आर्शीवादसँ आइ हमरा एकटा छोट-क्षीण कथाकार आ कविक रूपमे पहचान भेटल, हुनका शत्-शत् नमन।

पल्लवी प्रकाशनक श्रीमती पुनम मण्डलकेँ हार्दिक धैनवादक संग उज्जवल भविष्यक कामना अछि। बरमहल प्रोत्साहित करएबला साहित्यकार श्री ओम प्रकाश झा एवम् शुभेक्षु श्री रामजी प्रसाद मण्डलजीक सेहो आभारी छी। हुनका लोकैनकेँ साधुवाद।

श्रीमती आशा देवी उर्फ बेबी, प्रो. उपेन्द्र नारायण राय-व्याख्याता गणित विभाग, महिला कॉलेज बेगूसराय, डॉ. योगानन्द झा- समालोचक, श्री शम्भुनाथ मिश्र, अध्यक्ष कोसी विकास समिति,

हटनी, श्री राजनन्दन लाल दास, सम्पादक कर्णामृत, श्री चन्द्र मोहन कर्ण सम्पादक देसिल वयना, श्री राजदेव मण्डल साहित्यकार, समाजसेवी श्री बिनोद कुमार साह, आपका दवाखाना- निर्मली, हिनका सबहक सिनेहकेँ सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। आशा अछि जे हिनका लोकनिक सिनेह सदैत बनल रहत। अत: हिनका सभकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।

श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ श्री नागेन्द्र कुमार झाजीक सभसँ बेसी आभारी छी जे हमर पहिल पोथी- 'सखारी-पेटारी' केर प्रकाशन केलैन। हिनक उपकार हम नहि बिसरब किएक तँ ओइ पोथीक प्रकाशनक पछाइत जे हमर मनोबल बढ़ल ओ केना बिसैर सकै छी। ऐ लेल दुनू बेकतीकेँ बहुत-बहुत साधुवाद।

-नन्द विलास राय
गाम-पोस्ट- भपटियाही,
भाया- नरहिया,
जिला- मधुबनी।
मोबाइल नम्बर- 9931909671

मदन अमर

रमणजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर छैथ। हुनका एक बेटा आ एक बेटी छैन। बेटाक नाओं मदन आ बेटीक मीरा रखने छैथ। मीरा आ मदन इलाहेबादक एकटा कॉनवेन्टमे पढ़ैए। मदन स्टैन्डर्ड पाँच आ मीरा स्टैन्डर्ड चारिमे पढ़ैए।

रमणजीक सासुर मिथिलांचलक कोयलरव गाममे अछि। रमणजीक ससुर महराज रमणजी सँ गर्मी छुट्टीमे आम खाइले कोयलरव अबैले आग्रह केलखिन। रमणजी सपरिवार कोयलरव एला।

नानी गाममे मीरा आ मदन दुइए-चारि दिनमे गामक धिया-पुता संग तेना ने मिलि गेल जेना पानिमे चीनी मिलैए। मदन नानी गामक धिया-पुता संगे कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल खेलाइत रहए। मदन तँ इलाहाबादमे बैडमिन्टन आ क्रिकेट देखैत रहए। करवनो-काल क्रिकेट खेलबो करए। ओकरा लेल कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल नव छेलै, मुदा ओकरा नीक लगैत रहइ।

नानी गाममे मदनकेँ अमर नामक एकटा बालकसँ दोस्ती भऽ गेल। एक दिन अमर मदनकेँ अपना अँगना लऽ गेल। अमरक घर फूसक रहए। ओकर बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे काज करै छथिन। अमरक माए एकटा गाए पोसने छथिन। आइ-काल्हि गाए लगबो करै छैन। खेत-पथारक नाओंपर अमरकेँ बाधमे दस कट्ठा खेत, दू कट्ठा गाछी आ दू कट्ठा घराड़ी। अँगनामे दूटा घर। अमरक माए नीकहा-नीकहा आम मदनकेँ खाइले देलखिन। मदन अमरकेँ माएसँ बड्ड

प्रभावित भेल रहए।

मदनक नानाकेँ पक्काक घर। चारू भागसँ पोखरा-पाटन। ऊपरोमे चारि कोठरी। गामक लोक मदनक नानाक घरकेँ हबेली कहैत अछि। मदनक नाना गोकूलबाबू पुरान जमीन्दारक बेटा, तहूमे रिटारयर डिप्टी कलक्टर। गामक गरीब-गुरबा हुनका हाकिम मालिक कहैत छेलैन।

एक दिन मदन अपना संग अमरकेँ अपना नानीक घर लऽ जाइत छल। मैल-कुचैल कपड़ामे अमर। ऐसँ पहिने ओ कहियो हबेली नै गेल रहए। ओ धखाइते-धखाइत मदनक संगे हबेलीक सीढ़ीपर चढ़ल। आगू बढ़ल। देखते मदनक नानी मदनकेँ पुछलखिन-

"ई छौड़ा के छी। तोँ एकरा भीतर किए अनै छेँ?"

तैपर मदन बाजल-

"नानी ई अमर छी। हम एकरा संगे खेलाइ छी। एकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल अछि।"

मदनक बात सुनि नानी मदनकेँ डँटैत कहलखिन-

"समूचा कोयलखमे तोरा यएह छौड़ा दोस्ती करैले भेटलौ। छोट लोकसँ दोस्ती करै छेँ!"

तैपर मदन बाजल-

"नानी ई छोट कहाँ अछि। ई तँ हमरे अतेटा अछि।"

"तोँ नै बुझलेँ। ई सभ छोट जाति छी। एकरा सभकेँ हम सभ अपना हबेलीक भीतर नै आबए दइ छिऐ।"

अमर दिस देखैत नानी फेर बजली-

"रे छौड़ा, केकर बेटा छीही?"

अमर बाजल-

"भोला चौपालक।"

"कह तँ खतबे जातिक छौड़ाकेँ हबेलीक भीतर अनै छेँ। हवेलियो छुआ जाइत। रे छौड़ा भोलबा बेटा, जो भाग एतएसँ।"

अमर ओतएसँ चलि देलक। मदन किछु बुझि नै पौलक। बकर-बकर नानीक मुँह दिस तकैत रहल। नानी ओकर हाथ पकैड़ हबेलीक भीतर लऽ गेली।

अमर अपना आँगन जा माएकेँ सभ गप कहलक। माए पुछलखिन-

"तूँ हबेली गेलही किए?"

तैपर अमर बाजल-

"माए, हमरा तँ मदन लऽ जाइत रहए। हम कहियो कहाँ हबेली दिस जाइ छी।"

माए- "बाउ रौ, उ सभ पैघ लोक छथिन। हम पनरह बर्खसँ कोयलखमे छी मुदा आइ धरि हबेलीक भीतर नै गेलौं। कहियो काल खेरही तोड़ए हाकिम मालिकक खेतमे जाइ छी तँ हेवलीक ओसारक निच्चेसँ खेरही राखि आ बोइन लऽ घुमि जाइ छी।"

अमर माएक बात नै बुझि सकल। पुछलक-

"पैघ लोक केकरा कहै छै?"

माए जवाब देलखिन-

"पैघ लोक माने बड़का आदमी। धनीक आदमी। पढ़ल-लिखल हाकिम-हुकूम।"

अमर- "हमहूँ पैघ लोक बनब।"

माए- "पढ़बीही तब ने पैघ लोक बनमेँ। देखै छीही ने जीतनीक मामा पढ़ि-लिख कऽ हाकिम बनलखिन। ओ अबै छथिन तँ हाकिमो

मालिक हुनका चाह-पान करबै छथिन। तहूँ मनसँ पढ़-लिख आ हाकिम बन।"

माएक बात सुनि अमर बाजल-

"तूँ तँ हमरा किताबो-कॉपी ने आनि दइ छीही। टीशनो ने धरा दइ छीही। कहैत रहै छीही गाए चरा आन।"

तैपर माए बजली-

"तूँ मोनसँ पढ़। तोरा किताप-कॉपी सभ आनि देबौ। गाइयो चरबए नै कहबो। टीशनो धरा देबौ।"

अमर बाजल- "हम मोनसँ पढ़ब आ हाकिम बनब।"

अमर पढ़ए लगल। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। मैट्रिक आ इण्टरमे अपना जिलामे पहिल स्थान लौलक। चटिया सभकेँ टीशन पढ़ा कऽ बी.ए. आनर्स फस्ट क्लाससँ पास भेल। जीतनीक मामा हरियरीबला बीडीओ साहैबसँ भेँट केलक। ओ कहलखिन-

"कोनो भी कम्पीटीशनक तैयारी लेल पटनामे बैसए परतह। तइले ढौआ चाही।"

ई सभ गप्प अमर अपना माए-बाबूसँ कहलक। अमरक बाबू दस कट्ठा जमीनमे सँ पाँच कट्ठा जमीन बेच देलक। अमर पटनामे रहि बी.पी.एस.सी.क तैयारी करए लगल। गाममे कुट्टी-चालि चलए लगलै, जे जमीन बेच कऽ सभटा बेरबाद करैए फल्लमा। मुदा तेकर परवाह नै केलक अमरक पिता।

पहिले खेपमे अमर सफल भऽ गेल, बी.डी.ओ.क पदपर चयन भऽ गेलइ।

प्रशिक्षणक बाद अमरक पदस्थापना निर्मली अनुमण्डलमे भेल। योगदानक दोसरे दिन हुनका चेम्बरमे हुनकर सहायक संचिका लऽ

कऽ आएल। बी.डी.ओ. साहैबकेँ ओ चेहरा जानल-पहचानल लगलैन। ओ गौर करि कऽ सहायक दिस ताकए लगलखिन। आ दिमागपर जोर देलखिन जे हिनका तँ केतौ देखने छिऐन। मुदा केतए से मोने ने पड़नि। सहायकसँ पुछलखिन-

"अहाँक नाओं की छी?"

सहायक जवाब देलखिन-

"मदन कुमार ठाकुर।"

मदन नाओं सुनिते बी.डी.ओ साहैबकेँ बचपनक सभटा बात मोन पड़ि गेलैन। हुनका भेलैन शाइत ओ वएह मदन छी जे हमरा हबेली लऽ जाइत छल, मुदा ओकर नानी हमरा डपैट कऽ भगा देने रहए। मुदा शंकाक समाधान दुआरे पुछलखिन-

"अहाँक मामा गाम केतए अछि?"

सहायक जवाब देलखिन- "जी, हमर मामा गाम कोयलख भेल। आ नाना स्व. गोकूल प्रसाद ठाकुर।"

आब तँ बी.डी.ओ साहैबकेँ कोनो शंके ने रहलैन। ओ सभ संचिका पढ़ि कऽ ओइपर दसखत करैत कहलखिन-

"साँझमे हमरा डेरापर आएब।"

तैपर सहायक मदन पुछलकैन- "सर, कोनो खास गप्प छै की?"

बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"अहाँ आएब तँ ओतए आम आ खास मालूम भऽ जाएत।"

सहायककेँ छातीक धड़कन बढ़ि गेलैन। ओ सोचए लगला की बात छिऐ। किएक साहैब डेरापर बजौलैन। कियो चुगली तँ ने कऽ देलक।

साँझमे मदन बी.डी.ओ साहैबक डेरापर पहुँचला। बी.डी.ओ.

साहैब हुनका बड़ प्रेमसँ भीतर लऽ गेलखिन। एकटा कुरसीपर अपना बैसला आ दोसरपर इशारा करैत मदनकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू गोटे कुरसीपर बैसला। बी.डी.ओ. साहैब पत्नीकेँ सोर पाड़ैत कहलखिन-

"चाह-जलखैक ओरियान करू। मदन एला हेन।"

मदनकेँ किछु बुझेबे ने करए। ओ बाजल-

"सर, कथी लऽ बजेलौं। की आदेश छइ।"

तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"सर नै अमर बाजू अमर। हम वएह अमर छी जेकरा संगे अहाँ मामा गाममे कबड्डी, हाथी चुक्का खेलैत रही। एक दिन अहाँ अपना नानीक हबेली लऽ जाइत रही तँ अहाँक नानी अहाँपर बिगड़ैत हमरो डँटने रहैथ। की अहाँकेँ ओ घटना मोन अछि?"

मदनकेँ ममहरक सभ गप मोन पड़ि गेल। ओ ठाढ़ भऽ कऽ हाथ जोड़ैत बाजल-

"सर, हमरा माफ कऽ दिअ। हम बड्ड लज्जित छी।"

तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"फेर सर! अमर बाजू। अमर।"

कहि बी.डी.ओ. साहैब ठाढ़ होइत पुनः बजला-

"आउ मदन, गला मिलू।"

कहि दुनू बाँहि फैला देलखिन। मदन झिझकैत अमरसँ गला मिलल। मदनक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलै।



शब्द संख्या : 1045

दिव्या

निर्मली टीशनक पाछू, रेलबे परिसरेमे गुरु-चेलाक खेल भऽ रहल छल। गुरू लूंगी आ झोलंगा जकाँ कुरता पहीरि हाथमे डमरू नेने छला। लगभग दस बर्खक बालक चेला छल। ओकर समुच्चा देह कपड़ासँ झाँपल छल। चारू दिससँ लोक ठाढ़ भऽ खेलक मजा लेबए लेल तैयार छल। गुरु डमरू बजा चेलासँ पुछलखिन-

“बोल चेला की हाल-चाल छौ?”

चेला जवाब देलक-

“गुरुजी, हमर हाल-चाल एकदम टनाटन अछि। अहाँ अपन कहू।”

गुरु कहलखिन-

“हमहूँ ठीक छी। अच्छा ई बता अखन तों छेँ केतए।”

चेला बाजल-

“अखन हम बरही गाममे छी।”

गुरु-

“ई बरही गाम केतए छै?”

चेला-

“बरही गाम नेपाल अधिराज्यक सप्तरी जिलामे पड़ै छइ। राजविराजसँ लगधग तीन किलोमीटर दच्छिन। बरही गामसँ उत्तर पछिमी कोसी नहर छइ।”

गुरु-

“अच्छा ई बता ओतए की कऽ रहल छेँ।”

चेला-

“विदेह इन्टरनेट पत्रिकामे खबैर जुटाबक समदियाक काज करए लगलौं हेन। नेपालक दौरापर छी।”

गुरु-

“तँ बरही गाममे एहेन कोन घटना भेलै जे तों बरही गाममे छेँ।”

चेला-

“घटना अथवा दुघर्टना तँ नै भेलै मुदा एकटा नव चीज जरूर भेलइ।”

गुरु-

“कोन नव चीज भेलै हेन, कनी फरिछा कऽ बाज।”

चेला-

“बरही गाम सप्तरी जिलाक सदरमुकाम राजविराज बजारक लग रहितो मुख्य रूपसँ किसानक गाम छी। पश्चिमी कोसी नहरिसँ दच्छिन छइ। सिचाईक भरपुर साधन रहैक कारण गरमा धान आ अगहनी धानक उपज बड़ नीक होइ छइ।”

गुरु-

“कोन खेती गिरहस्तीक गप शुरू कऽ देलँह। नव बात जे भेलै से ने बाज।”

चेला-

“हम सभ गप फरिछा कऽ कहै छी। अहाँ धैर्यसँ सुनू। बरही गाममे रूपलाल नामक एकटा किसान छैथ। हुनका एकटा बेटा आ

एकटा बेटी छैन। बेटाक नाओं विवेक अछि। ओ विराटनगर अस्पतालमे पेथोलौजिष्ट छैथ। अपन प्राइवेट जाँच-घर सेहो रखने छैथ। रूपलालक बेटी दिव्या बी.ए. पास कऽ राजे-विराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन।"

गुरु-

"कोन आहे-माहेक कथा पसारि देलँह से नै जानि। हम कहै छियौ नव बात बता।"

चेला-

"एतएसँ शुरू होइत अछि नव बात। अखन हम नव बात जे भेल तेकर पृष्ठभूमिमे चलि रहल छी। अहाँ कनी धैर्यसँ सुनियौ।"

गुरु-

"अच्छा बता। आब हम बीचमे नै टोकबौ।"

चेला-

"हँ तँ हम कहैत रही जे रूपलालक बेटी जेकर नाओं दिव्या छी, राजेविराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन। साल भरि पहिने दिव्याक बिआहक बात-चीत ठील्ला गामक रामअवतारक बेटाक संग चलल। रामअवतारक बेटा अनिल भोपालमे इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ रहल छला। दस लाख नेपाली टकामे बात पक्का भऽ गेल छल। दुनू दिससँ छेका-छुकी सेहो भऽ गेलइ। छह महिना पहिने अनिल इंजीनियरिंगक डिग्री लऽ भोपालसँ नेपाल आएल। दूर संचार विभागमे भैकेन्सी भेल। ओहो आवेदन देलक।

अनिलक पिताजी रामअवतार तेज आदमी अछि। ओ दौग-धूप केलक। चारि लाख टका घूस मांगलकै। रामअवतार दौगल बरही आएल। रूपलालकेँ कहलखिन- अहाँ जमाएकेँ नोकरी भऽ रहल

अछि। चारि लाख टका घूस लगै छइ। अहाँ दस लाख टका जे बिआहमे देब तइमे सँ चारि लाख टका अखन दऽ दिअ। बाँकी छह लाख टका बिआहसँ दस दिन पहिने दऽ देब। जमाएकेँ नोकरी भऽ जाएत तँ बेटी रानी भऽ कऽ रहत। रूपलाल विवेककेँ फोनपर सभ बात बतौलखिन। विवेक कहलकैन, ठीक छै, अहाँ रामअवतार बाबूकेँ विराटनगर भेज दियौ। हम चारि लाख टका दऽ देबैन। रामअवतार विराटनगर जा विवेकसँ चारि लाख टका आनि बेटाकेँ संग कऽ काठमाण्डू गेला। घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी लगौलैन।

गुरु बजला-

“अच्छा, ई बता दिव्याक बिआह रामअवतारक बेटा अनिलसँ भऽ गेल ने।”

चेला-

“असलका गप तँ आब सुनाबै छी। कनी धियानसँ सुनियौ ने। आइसँ दस दिन पहिने रूपलाल अपना भातीजकेँ संग कऽ ठील्ला पहुँचला। रामअवतारकेँ बिआहक दिन पक्का करैले कहलखिन। ओ तीनटा दिनक प्रस्ताव रामअवतार लग रखलैन। आ कहलखिन अही तीनू दिनमे जे दिन अहाँकेँ सहुलियत हुअए से दिन तँइ करि लिअ। ढौआ जे बाँकी अछि ओ नगद लेब आकि चेक, सेहो कहि दिअ।”

रामअवतार कहलखिन-

“यौ रूपलाल बाबू, हमरा बेटाक भठियन गामबला पनरह लाख टका नगद, एकटा पल्शर मोटर साइकिल आ पाँच भरि सोन दऽ रहल अछि। अहाँक बेटीसँ हमरा बेटाक बिआहक गप पक्का अछि। अहाँ अनिलक नोकरी लेल आब चारि लाख टका देने छी। तँए अहाँसँ मात्र पनरह लाख टके टा लेब। गाड़ी आ सुन छोड़ि देब। जँ अहाँ पनरह लाख टकापर बिआह करैले तैयार छी, तँ फागुन दस गतेक दिन पक्का

भेल। हमरा नगद टका दी अथवा चेक दी, हम सभमे तैयार छी। अहांकेँ जइमे सुविधा हुअए से करब।”

तैपर रूपलाल बजला-

“अहाँसँ तँ हमरा दसे लाखपर बात भेल अछि। आब अहाँ मन नै बढ़ाउ। हम बँकियौता छह लाख टकाक चेक भातीज मार्फत भेज देब।”

रूपलालक गप सुनि रामअवतार तैशमे बजला-

“जँ हमरा बेटाक संग अहाँकेँ अपना बेटीक बिआह करबाक अछि तँ मोल-मोलाइ छोड़ू आ पनरह लाख टकामे बात पक्का करि तीन दिनक भीतर बाँकी एगारह लाख टका पहुँचाउ। नहि तँ कुटुमैती नै हएत। अहाँक चारि लाख टका हम अगिला महिनामे आपस कऽ देब।”

आब तँ रूपलाल झमा गेला। आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलैन। किछु फुड़बे ने करनि।

गुरु फेर टोकलखिन-

“अँइ रौ चेला, ई रामअवतार तँ बड़ नीच आदमी बुझाइत अछि।”

चेला बाजल-

“आगू सुनियौ ने।”

गुरु-

“अच्छा कह, आगू की भेलइ।”

चेला कहए लगल-

“कनीकालक बाद रूपलाल अपनाकेँ सम्हारैत बजला, ठीक छै हम गाम जाइ छी। बेटासँ विचार करब। ओ जे कहत सएह करब।”

रूपलाल आपस गाम आबि गेला। मुँहक उदासी देख हुनकर पत्नी बुझि गेली जे शाइत दिन पक्का नै भेल। कोनो झंझट लगि गेल। दिव्या राजविराजसँ पढ़ि कऽ आपस नै आएल छेली। रूपलाल सभ बात पत्नीकेँ बतौलखिन। पत्नी कहलकैन, विवेकसँ फोनपर गप करू। तैपर रूपलाल बजला, अखन तँ ओ क्लिनिकपर हएत रातिमे निचेनसँ गप करब। रूपलाल दुनू परानी रातिमे खेबो ने केलैन।

रातिमे रूपलाल मोबाइलपर विवेकसँ गप करए लगला। गप करिते-करिते ओ कानए लगला। जखन ओ बेटासँ मोबाइलपर गप करै छला, तखन दिव्या अपना कोठरीमे पढ़ै छेली। कोनो गपक पता नै छेलैन। जखन पिताजीकेँ कानब सुनली तखिन कान पाथि कऽ सभ गप सुनए लगली। सभ गपक थाह लगि गेलैन जे पिताजी फोनपर किए कनै छैथ। दिव्याकेँ भरि राति नीन नै भेलइ। ओ भरि राति सोचिते रहली। रामअवतार केते नीच आ कमीना अछि। चारि लाख टका हमरे बाबूजी सँ लऽ घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी दियौलक। आइ बेटा नोकरी करए लगलैन तँ मन बढ़ि गेलैन। पाँच लाख टका बेसी कऽ हमरा बाबूजी सँ मंगै छथिन। एहेन नीच आ लोभी मनुखक बेटासँ हम अपन बिआह किन्नौं ने करब, चाहे जिनगी भरि कुमारिये किए ने रहि जाइ।

गुरु फेर बजला-

“वाह! वाह! दिव्या बड़ नीक बात सोचलक।”

चेला बाजल-

“आगू सुनियौ ने।”

गुरु-

“अच्छा सुना।”

चेला कहए लगल-

“विवेक फोनपर पिताजीकेँ कहलकैन, बाबू अहाँ जुनि कानू। हमरा एकेटा बहिन अछि दिव्या। अहाँक पएरक कृपासँ हम चारि-पाँच हजार टका डेली कमाइ छी। की करबै रामअवतार बाबूकेँ लोभ भऽ गेलैन। हम पाँच लाख टका आरो देबइ। अहाँ शुक्र दिन रामअवतार बाबूकेँ बरही बजा लियौ। हम नगद एगारह लाख गिन देबइ। चारि लाख तँ देनेहियेँ छिऐन। शुक्र दिन साँझ धरि हमहूँ गाम पहुँच जाएब।”

शुक्र दिन साँझमे रामअवतार बरही पहुँचला। सोचने रहैथ जे नगद ढौआ देता तँ राजेविराज नेपाल बैंक लिमिटेडमे ड्राफ्ट बनबा लेब। नगद ढौआ लऽ जाइमे खतरा अछि। साँझमे विवेको गाम पहुँचला।

खेनाइमे रामअवतारकेँ खूब सुआगत भेलैन। तरूआ, भुजुआक अलाबे खस्सीक मासु सेहो रहए। मुदा दिव्या एकदम गुमशुम।

शनि दिन दस बजे रामअवतारकेँ पराठा आ अल्लुक भुजिया, हलुआ, सेबैक खीर आ रसगुल्लाक जलखै खुआएल गेल। जलखै करा एकटा कोठरीमे विवेक, रामअवतार आ रूपलाल बैसला। विवेक पुछलकैन-

“ढौआ केना लऽ जेबइ?”

तैपर रामअवतार कहलखिन-

“ढौआ दऽ दिअ आ अहाँ चलू राजविराज, नेपाल बैंकमे ड्राफ बनबा देब।”

तैपर विवेक बजला-

“आइ तँ शनि छी। छुट्टीक दिन छी। बैंक बन्न हएत।”

रामअवतार बजला-

“अच्छा अहाँ टका गिन कऽ दिअ। हम समधीकेँ संग कऽ ठील्ला चल जाएब। दू गोटे रहब तँ डर कम रहत।”

विवेक आलमारी खोलि रूपैआ निकालि गिन कऽ रामअवतारकेँ देबए लगला आकि हहाएल-फुहाएल दिव्या पहुँच कऽ बजली-

“रूकू भैया, रूकू। रूपैआ राखू। हम एहेन लोभी आ कमीना आदमीक बेटासँ अपन बिआह किन्नौं नै करब। चाहे जिनगी भरि कुमारि किएक ने रहि जाइ।”

दिव्याक गप सुनि, सभ कियो अवाक् भऽ गेल। विवेक आ रूपलाल समझाबैक परियास केलैन तँ दिव्या अपना हाथमे एकटा शीशी देखबैत कहलकैन-

“ऐ शीशीमे जहर छी। जँ अहाँ सभ जिद्द करब तँ हम जहर पीब लेब।”

रामअवतार बाबू दिस घुमि बजली-

“सुनू रामअवतार बाबू, अहाँ हमरा बाबूजीसँ चारि लाख टका लऽ गेल छी। जाबे धरि चारि लाख टका आपस नै करब अहाँ बरहीसँ आपस ठील्ला नै जा सकै छी।”

गुरु डमरू बजबैत नाचए लगला। थोड़े काल नाचि बजला-

“बड़ नीक बड़ सुन्नर। दिव्याकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।”



शब्द संख्या : 1350

सभसँ बड़का भीआईपी गेष्ट

हम आँगनमे चाह पीबैत रही। तखने पत्नी आबि टोकली-

"यै, सुनै छिऐ?"

हम कहलयैन-

"हँ, कहू ने की कहै छी।"

पुछलैन-

"बम्बइ आम लऽ कऽ जीतू बौआ ओतए कहिया जेबइ?"

अकचकाइत हमरा मुँहसँ बहराएल-

"हँ। ठीके मोन पाड़लौं। परसू रबि दिन भोरुका बस पकैड़ लेब। बारहे बजे तक पटना पहुँच जाएब। बम्बइ आमो खूब पाकए लगल अछि। चारि आना आम गाछेमे पाकि कऽ खसि पड़ल। काल्हि केकरो बजा कऽ आम तोरा कऽ रखि लेब आ परसू छह-बजिया बस पकैड़ लेब।"

पत्नी कहलैन-

"दस-बीस गो गछपकुओ लऽ लेबइ।"

हँ-मे-हँ मिलबैत कहलयैन-

"हँ-हँ अबस्से लऽ लेबइ।"

हम आ जीतू दू भाँइ। हमर नाओं भोगेन्द्र आ हमर छोट भाए जीतेन्द्र। माए-बाबू हमरा भोगी आ जीतेन्द्रकेँ जीतू कहै छला। माए-बाबूक देखा-देखी आनो-आन लोक हमरा भोगी आ ओकरा जीतूए

कहैत अछि। हम गाममे रहि कऽ खेती-गिरहस्ती करै छी। खेती की करब। अपना तँ मात्र एक्के बीघा खेत अछि। दू बीघा खेत लालबाबूसँ मनकूतपर नेने छी। जीतू पटनामे पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ अछि।

दोसर दिन हम एकटा गछचढ़ा लड़िकाकेँ बजा आम तोड़ेलौं। लगधग पाँच साए आम भेल। जइमे साए-सबा-साए पकले रहए। सभटा आम एकटा बोरामे लऽ मुँह बान्हि कऽ रखि लेलौं। एकटा झोरामे पचासटा गछपकू आम सेहो ओरिया कऽ रखि लेलौं।

अगिला दिन साइकिलपर आम लऽ नवटोली चौकपर गेलौं। चौकेपर एकटा चिन्हारए ऐठाम साइकिल रखि सतबजिया बसपर चढ़लौं। लगधग डेढ़ बजे दूपहरमे पटना पहुँचलौं। जीतू डेरेपर छल। हमरा देखते आबि कऽ गोर लगलक आ गामक समाचार पुछलक। हम असिरवाद दैत कहलिऐ-

“गामक सभ समाचार ठीके अछि। तों अपन समाचार कहह, सभ कियो नीके-ना छह किने?”

जीतू कहलक-

“अहाँक असिरवादसँ हम दुनू गोटे कुशल छी।”

हम कहलिऐ-

“भगवानक किरपा।”

जीतू बाजल-

“केकरो मोबाइलसँ फोन केने रहितिऐ तँ खाना बनल रहितए।”

हम कहलिऐ-

“केकरा मोबाइलसँ फोन करितौं।”

जीतू फेर बाजल-

“एमकी गाम जाएब तँ एकटा मोबाइल नेने आएब। मोबाइल

रहत तँ दुनू भाँइक बीच गप-सप्प होइत रहत। भौजियोसँ गप हाएत। अहाँ फ्रेश भऽ कऽ चाह पीबू। चाह पी कऽ जाबे स्नान करब ताबेमे खेनाइ बनि जाएत।"

हम बाथरूम जा फ्रेश भेलौं। फ्रेश भऽ ड्राइंग रूममे आबि बैसलौं। जीतूक कनियाँ एकटा प्लेटमे दालमोट आ छह-सात गोट बिस्कुट रखि हमरा गोर लगली। हम कहलयैन-

"नीके रहू।"

जीतू एक जग पानि आ एकटा गिलास नेने आएल आ कहलक-

"ताबे पानि पी कऽ चाह पीब लिअ।"

हम दालमोट आ बिस्कुट खाए लगलौं। पाँचे मिनटक पछाइत कनियाँ दू कप चाह दऽ गेली। हम दुनू भाँइ चाहो पीबी आ गाम-घरक गपो-सप्प करी।

करीब पनरह-बीस मिनटक पछाइत कनियाँ आबि कऽ बजली-

"भात-दालि बनि गेल अछि। जाबे भायजी स्नान करथिन, तरकारियो बनि जाएत।"

हम बजलौं-

"एते जल्दी केना बनि गेल।"

जीतू कहलक-

"भैया, गैसपर प्रेशर कुकरमे भात-दालि बनबैमे देरी नै लगै छइ। आब अहाँ जल्दी-जल्दी नहा लिअ।"

हम बाथरूममे जा कऽ स्नान कऽ कपड़ा बदैल ड्राइंगरूममे आबि कऽ बैसलौं। हमरा बसिते देरी जीतू एक जग पानि आ गिलास टेबुलपर रखि भीतर चलि गेल। कनियाँ एकटा थारीमे भात, कटोरीमे दालि आ एकटा प्लेटमे तरकारी आ दोसर प्लेटमे भुजिया, पापड़ दऽ

गेली। जीतू एकटा कटोरीमे घी नेने आएल। किछु घी भातमे ढारि बाँकी दालिमे ढारि बाजल-

“आब भोजन करू।”

हम भोजन करए लगलौं। जाबे धरि हम खेनाइ खेलौं जीतू हमरा लग ठाढ़ रहल। कनियाँ परसनपर परसन आबि कऽ दैत रहली। भोजन केला बाद हम हाथ-मुँह धोइ कुरसीपर बैसलौं।

जीतू लगमे आबि बाजल-

“आब अपने अराम करू।”

कहलिऐ-

“जा तहूँ, अराम करए।”

हम ओछाइनपर अराम करए लगलौं। हमरा पछिला सभ गप मोन पड़ि गेल। इण्टरमे पढ़ैत रही। जीतू सेहो अठमामे पढ़ैत रहए। जीतू पढ़ैमे चन्सगर रहए। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। हमर बिआह भऽ गेल रहए। बाबूजी हमरा बिआहेमे धुर-बहुर करा दुरागमनो करा देने रहैथ। मुदा हमर कनियाँ तैयो नैहरेमे रहै छेली। बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे मोटियाक काज करै छला। हुनका ओतए बोखार लगि गेलैन। ठीकसँ इलाज नै करा सकला। तेकर नतीजा भेलैन जे बड़ कमजोर भऽ गेला। डाक्टर कहलकैन-

“कालाजार हो गया है।”

तरवन हमरे एकटा गौआँ बहादूर काका हुनका नेने निर्मली टीशनपर उतरला। ओइ समैमे सवारीक सुविधा नै छेलइ। हमर बाबूजी तेतेक कमजोर भऽ गेल छला जे पएरे गाम नै आबि सकला। तरवन बहादूर काका बाबू जीकेँ मोसाफिर खानामे बैसा अपने गाम आबि हमरा माएकेँ सभ बात कहलखिन। हम खेनाइ खा कऽ निर्मली

कौलेज जाइले साइकिल निकालने छेलौं। माए हमरा लग आबि कहलक-

“भोगी, केकरो टायरगाड़ी लऽ कऽ निर्मली टीशन चलि जा। गाड़ीपर बैसा कऽ बाबूकेँ आनए पड़तह। बाबूजी मोसाफिर खानामे छथुन। बड़ दुखित छथिन। चललो ने होइ छैन। कहाँदन कालाजार भऽ गेलैन। बहादूर बौआ दिल्लीसँ संगे नेने एलैन। वएह आबि कऽ कहि गेला हेन।”

हम साइकिल रखि मने-मन हियासए लगलौं जे केकर टायर गाड़ी लऽ जाइ। हमर नजरि बेचन काकापर गेल। हम बेचन काका ओइठाम विदा भेलौं। बेचन काका सोकबामे बैस कऽ बाँसक पातक कुट्टी कटै छला। हमरा देखते बजला-

“आबह-आबह भोगी। कहऽ की हाल-चाल छह। आइ कौलेज नै गेलह की?”

कहलयैन-

“काका हमर हाल-चाल नीक नै अछि। बाबूजी बड़ दुखित छैथ। कहाँदुन कालाजार भऽ गेलैन हेँ। चललो-फिरल नै होइ छैन। दिल्लीसँ आबि निर्मली टिशनपर बैसल छथिन। बहादूर काका संगे एला हेन। वएह अखन कहि गेला हेन।”

बेचन काका बजला-

“तँ टायरगाड़ी लऽ जेबहक बाबूकेँ आनैले?”

कहलयैन-

“हँ, काका। तँए एलौं हेन।”

कहलैन-

“ठीक छै कनी जलखै कऽ लइ छी। ताबे बरदो खाइ छइ।”

हम कहलयैन-

“हमहूँ गामपर सँ भेल अबै छी। अहाँ जलखै करि कऽ तैयार रहब।”

“ठीक छइ।” ओ बजला।

हम गामपर आबि माएकेँ कहलिऐ-

“बेचन काका जलखै करै छथिन। जलखै कऽ टायर जोति देथिन। किछु पाइ-कौड़ी छौ तँ दे। हएत तँ बाबूकेँ लऽ रामानन्द डाक्टरसँ देखा देबैन।”

माए घर गेली। घरसँ एकटा फुच्ची निकालि अनली। फुच्चीकेँ उनैट दस-टकही, पँच-टकही, दू-टकही, एक-टकही आ सभटा सिक्का सभ निकालि गिनलैन। सभटा मिला कऽ पाँच साए पचपन रूपैआ भेल। सभटा पाइ दैत माए कहली-

“बाबूकेँ डाक्टरसँ जँचा दबाइ कीनि लिहेँ।”

पाइ लऽ बेचन काका ओतए विदा भेलौं। बेचन काका टायरपर पुआर दऽ एकटा सतरंजी बिछा हमरे बाट तकैत रहैथ। हमरा देखते बजला-

“गाड़ीपर बैसह। जोइत दइ छिऐ।”

हम टायरपर बैसलौं। बेचन काका टायर जोइत विदा भऽ गेला। साढ़े बारह बजे हम सभ निर्मली टीशन पहुँचलौं। हम मोसाफिर खाना गेलौं। हमर बाबूजी मोसाफिर खानामे तौनी ओछा पड़ल छला। एकदम नरकंकाल जकाँ हुनकर शरीर भऽ गेल रहनि। हम लगमे जा टोकलयैन-

“बाबू, बाबू?”

ओ उठि कऽ बैसला आ बजला-

“के भोगी! गाड़ी अनलह की?”

बाबू जीक पएर छूबि गोर लागि कहलयैन-

“हँ बाबू। बेचन कक्काक टायर अनलिऐ हेन। अहाँ किछु पानि-तानि पीलिऐ किने?”

बाबूजी बजला-

“हँ। एक गिलास बदामक सतुआ पी कऽ एक कप चाह पीने रहिऐ।

“अच्छा उठू चलू टायरपर बैसू गऽ। डाक्टर रमानन्द बाबू लग चलै छी। हुनकासँ देखा दइ छी। तेकर पछाइत खेनाइ खाएब।” -हम कहलयैन।

बाबूजी बजला-

“मुदा हमरा लग ढौआ कहाँ छह। दू महिनासँ बैसले छेलौं। जेहो ढौआ छल, सभ दबाइमे खरच भऽ गेल।”

हम कहलयैन-

“अहाँ ढौआक चिन्ता जुनि करू। हमरा माए किछु ढौआ देलक हेन। ओइसँ ताबे इलाज करा दइ छी। डाक्टर साहैब की कहै छथि, तेकर बाद आगूक बात आगू सोचब।”

बाबू जीकेँ लऽ कऽ हम डाक्टर रामानन्द बाबूक क्लिनिकपर एलौं। जाँचि कऽ डाक्टर साहैब कहलखिन-

“हम दबाइ लिखि दइ छी। दबाइ लऽ कऽ हमरासँ देखा कऽ शुरू कऽ दियौ। मुदा हिनकर इलाज नीकसँ करबए पड़त। दरभंगा लऽ जा कऽ अस्पतालमे भर्ती करा दियौ।”

डाक्टर साहैबक फीस दऽ दबाइ कीनिलौं। किशन होटलमे खेनाइ खेलौं। खेनाइ खा तीनू गोटे टायरपर बैस विदा भेलौं। गोसाँइ

डुमैसँ पहिने गाम पहुँचलौं। माए बाबूक हालत देख बोम फाड़ि कऽ कानए लगली। माएकेँ कनैत देख जीतूओ कानए लगल। हमरो आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल छल। बेचन काका हमरा सभकेँ चुप करबैत बजल छला-

"कनने, खीजनेसँ किछ ने होइ जेतह। पाँच-सात हजार टाकाक ओरियान कऽ दरभंगा लऽ जाहुन आ नीकसँ इलाज कराबहुन।"

पाँच कट्ठा खेत सात हजारमे भरना रखि चारिम दिन हम, माएकेँ संग कऽ बाबूकेँ लऽ दरभंगा गेलौं। बाबू जीकेँ दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करेलौं। डाक्टर साहैबसँ पुछने रहिऐ-

"सर, बाबूजी केतेक दिनमे ठीक भऽ जेथिन।"

डाक्टर साहैब बजल रहथिन-

"रोगीकेँ रोग गरसि नेने अछि। लीवर सेहो ठीकसँ काज नै करै छइ। तँए किछु कहब मोसकिल।"

दरभंगा जाइसँ पहिने माए बेचन काका आ जीतूकेँ हमरा सासुर भेज हमरा कनियाँकेँ विदागरी करा अनने रहथिन। दिल्लीसँ एलाक मासे दिनक भीतर बाबूजी हमरा सभकेँ छोड़ि दुनियाँसँ चलि गेला। जीतू बाबू जीक पएरपर माथा पटैक-पटैक कनैत रहए।बेचन काका जीतूकेँ समझबैत कहने रहथिन-

"तोरा तँ बाप तुल जेठ भाए भोगी छेबे करथुन। चुप भऽ जा। भोगी तोरा सभ किछु करतऽ। पढ़ेतह-लिखेतह, बिआह-शादी करतऽ।"

जीतू हमर पएर पकैड़ कानए लगल रहए। हम जीतूकेँ भरि पाँजमे लऽ कनैत कहने रहिऐ-

"तों चिन्ता जुनि कर। हम तोहर जेठ भाय छियौ। तोहर सभ

जवाबदेही हमरापर दऽ बाबूजी चल गेला। हम अपन फर्ज पूरा करब।”

बाबू जीक मरला बाद हम पढ़ाइ छोड़ि खेती-गिरहस्ती करए लगलौं।

बाबू जीक सोगे माए जे सोगेली से ओहो छबे मासक भीतर हमरा सभकेँ छोड़ि बाबूएजी लग स्वर्ग चल गेली। जीतूक दुनू आँखि कनैत-कनैत फूलि गेल छल। ओ माइक पएरपर माथ पटैक-पटैक कानै छल। हमर कनियाँ जीतूकेँ सम्हारने छली। मरैसँ पहिने माए हमरा कहने छेली-

“बौआ भोगी, जीतूकेँ पढ़ा-लिखा कऽ हाकिम बनाबिहह।”

हम माएकेँ कहने छेलिऐ-

“माए चिन्ता जुनि कर। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा डीहो बेचए पड़त तँ बेच लेब।”

जीतू पढ़ैमे तँ चन्सगर रहबे करए। ओ मैट्रिकसँ लऽ कऽ एम.काँम. धरि फर्स्ट डिविजनसँ पास केलक। एम.काँम. केला बाद जीतू पटनामे रहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करए लगल। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा एक बीघा खेत बेचए पड़ल।

एम.काँम. केलाक बाद साले भरिक भीतर जीतू पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ, पदपर बहाल भऽ गेल। जइ बैंकमे ओकरा नोकरी भेटल ओ पटने शहरमे अछि।

हाजीपुरक स्टेट बैंक मैनेजरक बेटी संग जीतूक बिआह भेल। जीतूक एकटा जेठका सार पी.एम.सी.एच.मे डाक्टर छथिन। ई सभ सोचैत-सोचैत हम नीन पड़ि गेलौं। नीन टुटल तँ सुनलिऐ, जीतू अपना कनियाँकेँ कहैत रहनि-

“भैया रबि दिनकेँ माछ-मासु नै खाइ छथिन। तीमन तरकारीमे की सभ आनए पड़त।”

कनियाँ बजली-

“अल्लू-पीऔज तँ अछिए। परोर, रामझुमनी, करैला आ सजमैन लऽ लेब।”

जीतू बाजल-

“अच्छा झोरा दऽ दिअ। हम जंक्सन जाइ छी ओम्हरेसँ तरकारी कीनने आएब। हँ, भैया सुति कऽ उठथिन तँ चाह बना कऽ दऽ देबैन।”

कनियाँ बजली-

“अहाँ कहबै तब हम भायजी केँ चाह बना कऽ दऽ एबैन। हमरा एतबो विवेक नै अछि की।”

जीतू बाजल-

“नै से नै। सएह कहलौं। ठीक छै हम जाइ छी।”

कनियाँ बजली-

“कनी सबेरे आएब। आन दिन जकाँ आठ राति नै बजा देबइ।”

“हमरो धियान रहतै जे भैया आएल छथिन।” - ई कहि जीतू झोरा लऽ कऽ चलि गेल।

जीतूकेँ गेलाक पनरह-बीस मिनटक पछाइत हम ओछाइनपर सँ उठि गेलौं बाथरूममे जा हाथ-मुँह धोइ कऽ कुरसीपर आबि बैसले रही आकि तखने कनियाँ एक गिलास पानि आ एक कप चाह दऽ गेली। चाह पीब हम कनियाँकेँ कहलयैन-

“हम टहैल अबै छी।”

कहि हम कपड़ा बदैल डेरासँ निकैल गेलौं। सात-सबा-सात बजे

आपस डेरापर एलौं। जीतूओ जंक्सनसँ आबि गेल रहए। ओ कनियाँकेँ कहैत रहए-

"एक लीटरबला सुधा दुधक पैकेट आ सेबैक दूटा पैकेट नेने आएल छी। चीनी सेहो नेने एलौं हेन। तरकारीमे परोर, रामझुमनी, करैला आ सजमैन अछि। सोल्हन्नी देसी-घी मे पुरी छानि दियौ। अल्लू-परोरक तरकारी आ रामझुमनीक भुजिया बना दियौ। सेबैक खीर सेहो बना दियौ।"

कनियाँ बजली-

"कनीए देशी घी घर-वेद रखने छी। जौं अखन खरच करि लेब तँ कोनो भी.आई.पी. गेस्ट औत तँ केतएसँ आनब।"

"कोन भी.आई.पी. गेस्ट?" - जीतू पुछलकैन।

"अहाँक बैंक मैनेजर आ हमर डाक्टर भैया।" - कनियाँ बजली।

"हमरा लेल सभसँ बड़का भी.आई.पी.गेस्ट हमर भैया छैथ, जे माए-बाबूक मुइला बादो हमरा पढ़ैमे कहियो ढौआक कमी नै हुअए देलैन। हमरा पढ़बै खातिर एक बीघा खेत बेच देलैन। हुनके कृपासँ आइ हम बैंकमे पी.ओ. छी।"

जीतूक बात सुनि हमर छाती सूप सन भऽ गेल।



शब्द संख्या : 1881

अपन जाति

पंचायत चुनावक प्रचार-प्रसार जोर-सोरसँ भऽ रहल अछि। आइसँ आठम दिन मंगलकेँ मतदान हएत। उम्मेदवार सभ जन-सम्पर्क -अभियानमे लागल छैथ। पुरुखक कोन गप कही जे जनानियोँ सभ टीम बना-बना अँगने-अँगने जा-जा अपना उम्मेदवारकेँ जितबैले निहोरा कऽ रहली अछि। हमर पत्नी तँ बुझू चाह बनबैत-बनबैत फिरिशान भऽ गेली अछि। किएक तँ एकटा उम्मेदवार जाइ छैथ तँ दोसर उम्मेदवार अपना दल-बलक संग आबि जाइ छैथ। जखन दरबज्जापर कियो औता आ एक कप चाहोसँ आग्रह नै करबैन तँ दरबज्जाक प्रतिष्ठा रहत। भरि दिनमे पचासो कप चाह बनैत अछि। अपना दुआरिपर जे महींस अछि, ओ एक संझू भऽ गेल अछि आ दूधो दुइये डिब्बा लगैत अछि। तँए नेबो रखने छी आ नेबोएबला चाह चलबै छी।

गाममे जे चौक अछि- कदमपुरा चौक, ओकर रौनक बढ़ि गेल अछि। बढ़बो केना ने करत रामनगर आ छजना पंचायतक चौक तँ छीहे मुदा अखन परसा उत्तरीक उम्मेदवार सभ अपन दल-बलक संगे अही चौकपर होइत पंचायतक पुबरिया भागसँ पछबरिया भाग आ पछबरिया भागसँ पुबरिया भाग जाइ-अबै छैथ। पुबरिया भाग आ पछबरिया भागक दूरी कमतीमे पाँच किलोमीटर तँ हेबे करत। तँए ऐ चौकपर जलखै आ चाह-पान करबे ने करता। जलखै आ चाह-पानक दोकानदार सभ तँ बुझू उठि बैसल। भरि सालक कमैनी बुझू पनरहे-

बीस दिनमे भऽ जेतइ। पैछला पंचायत चुनावमे तँ दारूओक दोकान रहइ। दारूबला नेहाल भऽ गेल रहए। मुदा अप्रिल 2016 सँ नीतीशजी दारू बेचनाइ-पीनाइपर प्रतिबन्ध लगा देलखिन तँए एमकी दारू नै भेटै छइ। हँ, दारूक बदलामे कोल्ड ड्रिंक जरूर भेटै छइ। दारू बन्द भेलासँ उम्मेदवार सभकेँ बड़ फैदा भेलइ। किएक तँ आब भोँटर सभकेँ दारू नै पियाबए पड़ै छइ। दारूक बदलामे कोल्ड ड्रिंक पिअबै छथिन जइमे कम ढौआ खर्च होइ छैन।

केतेक गोरे तँ दुइये बजे चौकपर पहुँच जाइ छैथ। ओतए उम्मेदवार सभ ठंढाक संग जलखै आ चाह-पान करबै छथिन। अनकर गप की कही हम अपने कइयेक दिन गामपर रौतुका खेनाइ नइ खाइ छी। चौकेपर तीन बेर-चारि बेर जलखै आ चाह-पान खा लइ छी तखन भूख केना रहत जे रातिमे खेनाइ खाएब। अहाँ सभ कहबै तीन बेर-चारि बेर जलखै आ चाह-पान के करबै छैथ? तँ सुनू, एकटा उम्मेदवार भेल मुखियाक, दोसर सरपंचक, तेसर पंचायत समितिक सदस्यक, चारिम-पाँचम भेल वार्ड सदस्य आ वार्ड पंचक। जिला परिषदक उम्मेदवार सभ दिन नै भेटै छैथ, तँए ओ नहियेँ गीनू। बाँकी सभ उम्मेदवार जलखै आ चाह-पान लऽ आग्रह करै छथिन। आब अहीं कहू किनका मना करबैन। जिनके मना करबैन हुनके हेतैन जे नन्दजी हमरा भोँट नै देता। तँए जे जे आग्रह करै छैथ तिनकर-तिनकर जलखै-चाह-पान खाइ छिऐन। हँ, एकटा इमानदारी जरूर रखने छी जे एक पदक एकेटा उम्मेदवारक खाइ छिऐन, दोसर उम्मेदवारक नइ।

मतदानक पाँच दिन पहिलुका गप्प छी। चौकक चाहक दोकानपर बैरियाही गामक विनोद, आ पकड़िया गामक रूपचन्द भेँट भेला। अहिना भोँट-भाँटक गप-सप्प होमए लगल। हम विनोदसँ पुछलिऐ-

"की हौ विनोद भाय, की हाल-चाल छै भोँट-भाँटक? केकरा-केकरा भोँट देबहक?"

विनोद बजला-

"हौ भाय, आन पदक गप तँ नै कहबह मुदा सरपंचक लेल हम सभ निर्णए कऽ लेने छी।"

तैपर रूपचन्द पुछलकैन-

"की निर्णए कऽ नेने छहक?"

विनोद बजला-

"हौ रूपचन्द भाय, सरपंचक लेल चारिटा उम्मेदवार अछि। बैरियाही गामसँ जीतन कामत, रामनगरसँ झमेली चौपाल, पकड़ियासँ कपिल मण्डल आ ननपट्टीसँ मोहन भगत।"

हम कहलिऐ-

"हँ, यएह चारू उम्मेदवार रामनगर पंचायतसँ सरपंच पदक लेल ठाढ़ छैथ।"

विनोद बजला-

"देखियौ, झमेली चौपाल जे चुनाव लड़ै छैथ, सभ कियो हुनका झगरौआ झमेलिया कहै छैन। रामनगर पंचायतक कोन गप जे रामनगर गामोमे कियो हुनकासँ खुश नै छैथ। भरि दिन एक-दोसराक टीक-मे-टीक ओझरी लगबैत रहै छथिन। एहेन लोककेँ भोँट के देत। ओ जँ सरपंच भऽ जाएत तँ भरि दिन एक-दोसराकेँ झगड़ा लगौत।"

तैपर रूपचन्द बजला-

"से तँ ठीके कहै छहक। हम काल्हि भोरमे रामनगर गाम एकटा गाए तकैले गेल रही। तीन-चारि गोरेसँ गप भेल। सभ कहलक जे हम सभ झमेली चौपालकेँ भोँट नै देबइ। गौआँ छी तँ की भेल। तैपर हम

पुछबो केलिऐ जे बाँकी जे तीनटा उम्मेदवार बँचल तइमे के नीक अछि।”

विनोद बजला-

“बाँकी बँचल जीतन कामत, कपिल मण्डल आ मोहन भगत।”

विनोदक गप खतमो ने भेल छल कि बिच्चेमे रूपचन्द बजला-

“कपिल मण्डल तँ दस बर्ख पहिनहियोँ सरपंच भेल छला। हुनका तँ हम सभ पाँच बर्ख धरि देखनहियेँ छिऐन। एकोटा पंचैती हुनकासँ नै फरियेलैन। हुनका समैमे केतेको मामला थाना आ कोट-कचहरी पहुँचल।ओ तँ एकदम अक्षम सरपंच साबित भेला। एहेन लोक सरपंच भऽ कऽ की करत?”

विनोद बजला-

“से तँ ठीके कहै छहक। हमरे गाममे कपिल मण्डलक समैमे चारिटा मामला थाना पहुँचल छल।”

हम कहलिऐ-

“बाँकी बँचलह दूटा उम्मेदवार- बैरियाही गामसँ जीतन कामत आ ननपट्टी गामसँ मोहनभगत। मोहन भगत अखनो सरपंच छथिन।”

विनोद बजला-

“हँ, मोहनजी अखन निवर्तमान सरपंच छैथ। जीतन कामत जे हमर गौआँ छी, ओकरा तँ हम रग-रग जनै छिऐ। एक नम्बरक दलाल, उचक्का आ बेइमान अछि। केतेक गोरेसँ इन्दिरा अवासक नाओंपर पाइ लेलक आ काज नै भेल। जँ पाइ देनिहार पाइ आपस मंगलक तँ कहि देलक पाइ कोनो हम रखलिअ, पाइ तँ हम हाकिमकेँ देलिअ, तखन आपस केतएसँ करब। तैपर जँ कियो कहलक, तँ हाकिमे सँ मांगि कऽ आनि दिअ। तँ जवाब देलक, हौ कुत्ता खेलहा चाम आ

हाकिम खेलहा दाम केतौ आपस होइ छै, जे तोहर आपस हेतह। दलाली आ बेइमानी कऽ फटफटिया मेन्टेन करैत अछि। केहेन-केहेन जमीनबलाकेँ मकान बनाएले ने होइ छै आ ओ चारि कोठरीक मकानो बना लेलक। हौ ओकरा तँ बैरियाहीमे पच्चिसोटा भोँट नइ हेतइ।”

“आ जे अखन सरपंच छथुन मोहन भगत, हुनका बारेमे की विचार छह?”- हम पुछलिऐ।

रूपचन्द बजला-

“सरपंच लायक सभसँ नीक लोक वएह छैथ। हम सभ पाँच बर्खसँ हुनकर क्रिया-कलाप देखलिऐ हेन। बड़ नीक पंचैती करै छथिन। हिनका समैमे एकोटा मामला थाना आकि कोट-कचहरी नै पहुँचल। आदमियोँ भला-इमानदार छैथ। केकरोसँ एको पाइ घूसो नै लइ छथिन। की हौ विनोद भाय, तोहर की विचार?”

विनोद-

“हमर विचार की पुछै छहक। हम सभ मन बना नेने छी जे पाँच बर्ख मोहनजीकेँ औरो सरपंच रखबैन। हमरा गामक बारह-अना भोँट हिनके भेटतैन।”

रूपचन्द बजला-

“हौ, पौंरुकाँ सालक गप छिऐ। हमरा गामक एकटा धनिकाहाक बेटा एकटा गरीबाहाक बेटीक इज्जत लूटैक परियास केलक। इज्जत तँ लूटिये लइतै मुदा रक्ष रखलखिन भगवान जे इज्जत बँचि गेलइ।”

हम पुछलिऐ-

“की रक्ष रखलखिन भगवान? नै बुझलौं, कनी परिछा कऽ कहह।”

रूपचन्द बजला-

“छौड़ीक नाओं खैंकी छिऐ। ओकर उमेर पनरह-सोलह बर्ख हेतइ। ओ छौंड़ी असगरे खेरही खेतमे घास कटैत रहए। बेचूआ जखन ओकरा असगरे देखलक तँ ओकरा संग जबरदस्ती करए लगल। तैपर छौड़ी हल्ला केलक। हल्ला सुनि कऽ घसबैहनी सभ दौगल तँ बेचूआ पड़ा गेल। छौड़ीक ब्लाउज फाटि गेल रहइ। छौड़ीक बाप गरीब आदमी आ ओइ धनिकाहाक बटेदार, केतए जाएत। के ओकर निसाफ करतै?

किछ लोक कहलकै, सरपंच लग जा। ओ सरपंच लग गेल। पंचैती बैसल। धनिकाहा-डरे कोइ किछ बजबे ने करइ। सरपंच मोहनजी पंचैतीमे छौड़ाकेँ बजौलखिन। ओकरासँ पुछलखिन तँ ओ छौड़ा बाजल, खैंकी हमर खेरही कटैत रहए। हम ओकर छिट्टा आ हँसुआ छीनि लेलिऐ। तैपर ओ हमरा गरियाबए लगल तँ हम मारलिऐ। तँए ओ हमरापर झूठ-फूसक इलजाम लगबैए।

सरपंच साहैब घसबैहनी सभकेँ पंचैतीमे बजा पुछलखिन तँ ओ कहलकै, जखन हम सभ खैंकीक हल्ला सुनलिऐ तँ दौग कऽ गेलिऐ तँ बेचूआकेँ भागैत देलखिऐ। पंचैतीमे बेचूआ दोखी साबित भऽ गेल।

सरपंच साहैब बेचूआक बापसँ पुछलखिन, मरर जँ खैंकी अहाँक बेटी रहैत, तखन अहाँ की करितिऐ? खैंकीकेँ अपन बेटी बुझैत ई पंचैती अहीं करियौ।

एगारह हजार टाका बेचूआकेँ दण्ड आ पंचैतीमे दस बेर कान पकैड़ कऽ उठक-बैसक करैले कहल गेल रहए।”

विनोदजी बजला-

“मोहनजीक हमरोपर उपकार छैन।”

हम पुछलयैन-

"से केना?"

तैपर विनोदजी बजला-

"हमरा घरसँ पाँच हजार टाका आ मोबाइल चोरि भऽ गेल रहए। चोर पड़ोसियेक बेटा फेकूआ रहए। जखन फेकूआ मोबाइल बेचए नरहिया बजारक अर्चना मोबाइल रिपेयरिंग सेन्टरपर गेल तँ दोकानदार पिन्टूजी हमर मोबाइल चिन्ह गेला। किएक तँ हम अर्चने मोबाइल रिपेयरिंग सेन्टरमे मोबाइल रिचार्ज आ चार्ज करबैत रहै छी। पिन्टूजी फेकूआसँ पुछलखिन-

'ई मोबाइल केतएसँ अनलिऐ?'

तैपर फेकूआ बाजल-

"हमरा भेटल।"

पिन्टूजी मोबाइल रखि कऽ हमरा फोन केलैन। जखन पिन्टूजीक फोन आएल ओइ समैमे हम सभ घरेमे मोबाइल खोजैत रही। मोबाइलक संग पाँच हजार रूपैओ गायब रहए। हम रामनगर ग्राम कचहरीमे पेटीशन देलौं। पंचैती बैसल। फेकूआ बाजल-

"मोबाइल हमरा रस्तापर भेटल।"

मुदा सरपंच साहब जखन डपटलखिन तँ फेकूआ मोबाइलक संग रूपआ सेहो गछलक। पाँच हजार टकाक संग हमर मोबाइल आपस भेल। फेकूआकेँ एगारह साए एकावन टका दण्ड भेल।"

काल्हि भोँट गिरत। रातिमे विनोदजी अपना पत्नीसँ पुछलखिन-

"सरपंचक लेल केकरा भोँट देबइ?"

तैपर पत्नी कहलकैन-

"केकरा देबइ! मोहनजीक छापपर देबइ, ठेलीगाड़ी छापपर मोहर मारि कऽ भोँट गिरेबै। धनि मोहनजी सरपंच साहैब जे चोरि भेल

पाँच हजार टकाक संग मोबाइल आपस भेल। नइ तँ चोरौनिहार दइतए?"

विनोदजी बजला-

"हँ से तँ ठीके कहै छिऐ।"

भोँटक विहान-भने चौकपर विनोदजी भेटला, पुछलयैन-

"कहह विनोद भाय, भोँट-भाँटक समाचार। सरपंचमे केहेन रहलैन मोहनजीक?"

विनोदजी बजला-

"हौ नन्द भाय, तोरासँ छाम की, हम सभ सरपंचक लेल जीतन कामतकेँ भोँट देलिऐ।"

हम क्षुब्ध भऽ गेलौं। पुन: पुछलयैन-

"आ मोहनजी?"

तैपर विनोदजी बजला-

"छोड़ह मोहनजीक बात। हौ जीतन कहुना छी तँ अप्पन जाति छी।"

हम विनोदजीक मुँह तकैत रहि गेलौं..!



शब्द संख्या : 1424

इनारक पानि

नेपालक सप्तरी जिलामे एकटा गाम छै- तरही। बेस झमटगर गाम। गाम दू टोलमे बँटल अछि। विभिन्न जातिक बसोबास करैबला गाम। ओना तँ ऐ गामक लोक मुख्य रूपसँ खेतीपर निर्भर अछि मुदा सरकारियो नोकरी करनिहारक संख्या साए-सबा-साएसँ कम नइ हएत। ऐ गाममे नीक-नीक विद्वान सेहो छैथ। कृषि विभाग आ शिक्षा विभागमे ऊँच्च पदपर नोकरी करनिहार। पढ़ल-लिखल आ नीक-नीक विद्वानकेँ रहितो गामक लोकक विचार आ बेवहारमे संकीर्णता ऐछे।

ओना तँ ऐ गाममे बेसी जाति पनिचल्ले अछि मुदा एक घर डोम आ एक घर चमार सेहो बसल छैथ। डोम एक घरसँ पाँच घर भऽ गेला हेन मुदा चमार एक घरक एके घर छैथ। किएक तँ चमारक खनदान एक पुरखियाह। पनिचल्लाक मतलब ई भेल जे जइ जातिक पानि दोसर जातिमे चलैत होइन।

चमार तँ जमीन-जथाबला छैथ, मुदा डोम सभकेँ मात्र अपन घराड़ीएटा छैन। चमारक जीविकाक मुख्य आधार खेती छैन, जखन कि डोम सभ सूप, चालैन, कोनियाँ, छिट्टा, चंगेरा, डाल-दौरा, गुड़चल्ला आदि बीन बेच अपन गुजर करै छैथ। एकर अलाबे अगहन आ अखाढ़मे धनकटनी आ धनरोपनी करैले जनमे सेहो खटै छैथ। एकटा बात छै, ऐ गामक डोम सुगर नइ पोसने छैथ, आ ने दारू पीबै छैथ।

ऐ गाममे पीबैबला पानिक बड़ दिक्कत। किएक तँ चापाकल

लेल लेअर सर-जमीनसँ दू साए पचास फीट निच्चाँ अछि। तँए चापाकलक संख्या बड़ कम अछि। केकरो-केकरो चापाकल अछि जे अन्दरेमे गड़ौने अछि। नइ तँ बेसी लोक इनारेक पानि पीबै छैथ। एकटा इनार पछबरिया टोलक कामतपर आ दोसर पुबरिया टोलमे स्कूलपर अछि। पुबारि टोल आ पछबारि टोलक दूरी लगधग एक किलोमीटर भरि हएत।

चमार तँ जमीन-जथाबला लोक तँए अपने कल गड़ौने छैथ मुदा गामक डोमकेँ पीबैबला पानिक बड़ दिक्कत। डोमटोली पुबारि टोलसँ कनिक्के उत्तर अछि। चौकसँ साए लग्गा दक्षिण मिडिल स्कूल अछि। स्कूलेक बगलमे इनार अछि। इनार पक्काक बनल अछि। इनारेपर बाल्टीमे कड़ी लगा इनारसँ पानि भरैक बेवस्था छइ।

डोमक परिवारक औरत घैल आकि बाल्टी लऽ कऽ इनारपर एली, जँ पनिचल्ला जातिक कियो पुरुख आकि महिला रहल तँ इनारसँ पानि भरि कऽ घैल आकि बाल्टीमे ढारि दइले निहोरा केली। जँ कियो इनारसँ पानि भरि कऽ घैल आकि बाल्टीमे ढारि देलक तँ ओ औरत पानि लऽ कऽ अपना अँगना एली, नइ तँ ओतए बैसल रहली। पानि भरि दइक एबजमे बाँसक बेना सेहो देमए पड़ै छेन। कहियो-कहियो तँ घन्टो भरि इनारपर बैसए पड़ै छैन।

फगुआसँ एक दिन पहिने, चारि बजे दिनमे नेताजी मोटर साइकिलसँ लौकही जाइ छला। जखन ओ स्कूल लग एला तँ एकटा औरत हुनका 'नेताजी मालिक', 'नेताजी मालिक' कहि अबाज देलकैन।

नेताजी गाड़ी रोकि अकानए लगला तँ इनारक चबुतराक निच्चाँमे दूटा घैल राखल आ एकटा औरतकेँ ठाढ़ देखलखिन।

नेताजी गाड़ी ठाढ़ कऽ इनार लग एला तखन ओइ औरतकेँ

चिन्हलखिन। ओ जीतन मल्लिकक पत्नी ठेहोवाली छैथ। नेताजी ठेहोवालीसँ पुछलखिन-

“की बात? किए हाक देलह?”

ठेहोवाली कहलकैन-

“नेताजी मालिक, हिनकासँ कहैत लाज होइए, मुदा एक घन्टासँ एतए बैसल छी। केतेको गोरे आएल आ पानि लऽ लऽ गेल मुदा कियो पानि भरि कऽ हमर घैलमे नइ देलैन। अपने इनारसँ पानि भरि कऽ दुनू घैलमे ढारि दैतैथ तँ बड़ गुण मानितिऐन।”

नेताजी सोचमे पड़ि गेला। ओ सोचए लगला- कहू ईहो मनुखे छी। जेहने खून हमरा सबहक शरीरमे अछि तेहने खून एकरो शरीरमे छै किने। तखन ई अपनेसँ पानि किएक ने भरत! डोम भेल तँ की भेल? छी तँ ओहो मनुखे।

नेताजी सोचमे डुबल रहैथ कि ठेहोवाली टोकलकैन-

“मालिक बड़ अबेर भऽ गेल!”

नेताजी किछ सोचलखिन आ बजला-

“तों अपनेसँ पानि भरि कऽ घैलमे लऽ लएह।”

तैपर ठेहोवाली डराइत बजली-

“नइ गिरहत, हम अपनेसँ पानि नै भरब! कियो देखत तँ जुलुम भऽ जाएत! गामक लोक हमरा गरियौत आ मारबो करता। हमरासँ पानि छुबा जेतइ! हमरा सभकेँ गाममे रहब मोसकिल भऽ जाएत!”

नेताजी अपन बातपर जोर दैत कहलखिन-

“तों अपनेसँ पानि भरि कऽ लऽ जाह। जँ कियो किछ कहतह तँ कहि दिहक नेताजी पानि भरैले कहलैन, तँए भरलौं। नइ बिसवास होइए तँ नेताजी सँ पुछि लिऔ। हम सभ समैझ लेब।”

ठेहोवाली सोचए लगली। नेताजी मालिक पानि भरए कहै छैथ। कोनो अद्दी-गुद्दी लोक तँ छैथ नइ। कहुना छैथ तँ गामक नेता छैथ। गाममे केकरोसँ कम धनो-सम्पैत आकि कम समांगो नहियेँ छैन। खएर जे हेतै से बुझल जेतइ, अपनेसँ पानि भरब।

ठेहोवाली इनारसँ पानि खींच घैलमे ढारए लगली। जखन दोसर घैलमे पानि ढारैत रहैथ तखने लुचबा साइकिलसँ केतौ जाइत रहए, ओ देखलक, मुदा बाजल किछ ने।

लुचबा एक्कैस-बाइस बर्खक अछि। जहिना नाओं लुचबा तहिना एक नम्बरक लुच्चा सेहो ऐछे। भरि दिन एम्हरका बात ओमहर आ ओमहरका बात एम्हर करैबला। तँए लोक लुचबा कहै छइ। ओना असली नाओं जीबछ छिऐ। पुबारिये टोलमे ओकर घर पड़ै छइ। एक नम्बरक पीयक्कर सेहो अछि।

लुचबा चौकपर पहुँच साइकिलसँ उतैर बाजल-

“बड़का जुलुम भऽ गेल! आब हम सभ केतएसँ पानि आनि कऽ पीअब!”

एकटा गाछतर किछ लोक तास खेलाइत रहए। चारि गोरे खेलनिहार आ तीन-चारि गोरे देखनिहारो। दस बारह गोरे चाहो-पानक दोकानपर रहए। सबहक धियान लुचबाक बातपर चलि गेल।

फोचाइ दास पत्ता फेकैत बाजल-

“की जुलुम भऽ गेल? की कियो स्कूलक इनारमे जहर दऽ देलक हेन जे तों बजै छेँ, आब कोन पानि पीअब?”

तैपर लुचबा बाजल-

“नइ यौ, फोचाइ भैया। कियो पानिमे जहर नइ देलक हेन। इनारक पानि छुबा गेल। जीतना डोमक बौहु अपनेसँ पानि भरि

लेलक। हम अपना आँखिसँ देखलौं हेन।"

तैपर भुटकुन पुछलक-

"आर कियो देखलक की तोहींटा देखलिहीन?"

लुचबा-

"नेताजी सेहो देखलैन। ओकर मोटर साइकिल खड़ा छेलै आ ओ डोमिनियासँ गप्प करै छला।"

बिलट पुछलक-

"नेताजी डोमिनियाकेँ किछ ने कहलखिन?"

लुचबा बाजल-

"नइ यौ, ओ किछ ने कहलकै। डोमिनियाँ घैल भरि गाम दिस विदा भेल आ नेताजी फटफटिया स्टाट कऽ दक्षिण-मुहेँ।"

तैपर टुनटुन बाजल-

"हँ, दसे मिनट पहिने नेताजी गेला हेन। चौकपर हमरेसँ तमाकुल मांगि कऽ खेने छला। पुछबो केलिऐन, केतए जाइ छी। तँ बाजल छला लौकही बजारक काज अछि।"

ई गप-सप्प होइते रहए कि ठेहोवाली दुनू घैल नेने चौकपर पहुँचली। ठेहोवालीकेँ देखते लुचबा बाजल-

"हे देखियौ, डोमिनियाँ पानि नेने जा रहल अछि।"

फोचाइ बाजल-

"ऐ पनिभरनी कनी ठाढ़ हुअ।"

ठेहोवाली ठाढ़ होइत बजली-

"हमरा माथपर भारी अछि जे कहबाक छैन से जल्दी कहौथ।"

फोचाइ-

“तोहर घैल के भरि देलकह?”

ठेहोवाली जवाब देलक-

“हम अपनेसँ पानि भरि दुनू घैल भरलौं।”

लुचबा बाजल-

“केकरा पुछि कऽ इनारसँ पानि भरलीही?”

ठेहोवाली बजली-

“हमरा नेताजी मालिक कहलखिन, तँए अपनेसँ पानि भरलौं।”

फोचाइ बाजल-

“तोँ नेताजीक मुँहपर ई बात कहबहक?”

“हँ किएक ने कहब।” ठेहोवाली मुहेँ लागल बजली।

भुटकुन बाजल-

“अच्छा तों जा। हम सभ नेताजीसँ फरिछा लेब।”

नेताजीक नाओं हरी नारायण राय छिऐन। किछ लोक हुनका हरी बाबू तँ किछ लोक नेताजी कहै छैन। बेसी लोक नेतेजी कहै छैन। हरी बाबू जखन मैट्रिक परीक्षा दऽ गाममे रहैथ, ओही समैमे बी.पी. कोइराला राजतंत्रक विरोधमे आन्दोलनक शंखनाद केने रहथिन। हरी बाबू पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि आन्दोलनमे कुदि गेला। केतेको बेर जेल गेला। लकधक आठ बर्ख धरि भारतमे निर्वासित जीवन बितौलैन। अखन सप्तरी जिलाक नेपाली कांग्रेस कमिटिक अध्यक्ष छैथ। महात्मा गाँधीक विचारधारा हिनका रग-रगमे समाएल छैन। हिनक पिताजी सेहो लोहियावादी छेलखिन।

चारि बजे बेरुका समए। चौकपर लोकक आवा-जाही शुरू भऽ गेल छल। समुच्चा चौकपर एक्के बातक चर्च जे नेताजी डोमिनियासँ इनार आ इनारक पानि छुबा देलक! चौकपर पीपरक गाछतर पचासो

गोरे जमा भऽ गेल।

धोल-फचक्का हुअ लगल। सभ-सभ रंगक गप बजैत। फोचाइ बाजल-

“नेताजी अपेन कल गड़ौने छथिन। हम सभ इनारक पानि पीबै छेलौं, जेकरा डोमिनियासँ छुबा देलक! आब हम सभ केतएसँ पानि आनि कऽ पीअब।”

भुटकुन बाजल-

“नेताजी नीक काज नइ केलैन। हिनकापर पंचैती बैसाएल जाए।”

लुचबा बाजल-

“आइ रातिमे हम सभ केतएसँ पानि आनि भानस-भात करब?”

तैपर फोचाइ बाजल-

“जाबे धरि ऐ बातक कोनो निर्णए नइ भऽ जाएत ताबे धरि कामत परहक इनारसँ पानि आनि काज चलबै जाइ जाएब।”

तैपर लुचबा बाजल-

“कामत परहक इनार तँ अपना टोलसँ एक किलोमीटरसँ बेसिये हएत! एतेक दूरसँ कनियाँ-बहुरिया केना कऽ पानि भरि आनत।”

तैपर भुटकुन बाजल-

“नै आनत तँ स्कूलबला इनारसँ छुबेलहा पानि आनि कऽ भानस-भात करू!”

ओहीठाम बंगलोरमे इंजीनियरिंग पढ़ैबला विद्यार्थी आनन्द सेहो रहैथ। हुनका ई गप-सप्प नीक नइ लगलैन। ओ बजला-

“अँइ यौ फोचाइ भैया,डोम की मनुख नइ छी? ओकरा सबहक देहमे दोसर रंगक खून रहै छै की?”

तैपर फोचाइ बाजल-

“अहाँ चूप रहू। डोम मनुख छी तँ अहाँ अपना कलमे पानि भरए देबइ?”

आनन्द बाजल-

“हँ यौ, हम अपना कलसँ पानि भरए देबइ।”

भुटकुन बाजल-

“अहाँ अखन ने एते कुदै छी, बापक सामने सब बोलती बन्न भऽ जाएत। इंजीनियरिंगमे पढ़ै छी तँ बेसी बुझए लगलौं हेन की। हमरो भैया जिला कृषि अधिकृत छथिन।”

आनन्द बाजल-

“तँए एहेन तुच्छ विचार रखने छी।”

आनन्दक पिताजी एकटा दोकानमे चाह पीबैत रहैथ। कियो हुनका कहलकैन जे आनन्द डोमिनियाँक पाट लऽ कऽ बजै छैथ। ओ चाह पीनाइ छोड़ि गाछतर एला आ आनन्दकेँ बाँहि पकैड़ कात लऽ जा पुछलखिन-

“तों ठीके डोमिनियाँक पाट लऽ बजै छेलही आ कहलीही जे हम अपना कलमे डोमकेँ पानि भरए देब?”

आनन्द कहलकैन-

“बाबूजी हम केकरो पाट लऽ कऽ नइ बजलौं हेन। हँ, हम एतेक जरूर बजलौं जे डोमो मनुखे छी। अहूँ सोचियौ जे डोमक शरीरमे दोसर रंगक खून रहै छै?”

तैपर हुनकर पिताजी कहलखिन-

“तोँ ठीक कहै छी। मुदा ऐठाम समाजक मूभ दोसर अछि। समाज आखिर समाज छी। समाजसँ अलग भऽ कऽ कियो रहि

सकत? जखने हम अपना कलमे डोम सभकेँ पानि भरए देब तखने पूरा समाज हमरा वहिष्कार कऽ देत। गाममे असगरे भऽ जाएब। तोरा ऐ सभसँ कोन मतलब छौ। दू-चारि दिन-ले गाम आएल छेँ। अखन तोँ मात्र पढ़ैसँ मतलब राख। चल घर चल।"

आनन्द किछ ने बाजल। दुनू बापूत घर दिस विदा भऽ गेला।

आठ बजे रातिमे नेताजी गाम आपस एला। हिनका चौक परहक सभ बात मालूम भेलैन। हुनकर पिताजी कहलकैन-

"हरी, केलह तँ नीके काज मुदा समाजकेँ मंजूर नइ अछि। समाज आखिर समाज छी। तँए काल्हि पंचैतीमे समाज जे निर्णए करत ओकरा मानए पड़तह।"

दोसर दिन भोरे आठ बजे स्कूलपर समुच्चा गामक लोकक बैसार भेल। नेताजी, जीतन आ ठेहोवालीकेँ बजौल गेल। जीतन पाँचो भाँइ आएल। जीतनक कनियाँ ठेहोवाली सेहो एली। ओ बेसी डेराएल छेली। बैसारमे धोल-फचक्का हुअ लगल। गामक सभसँ बुजुर्ग गोपी बाबू खड़ा भऽ कऽ सभसँ शान्त रहैले आग्रह केलखिन। गोपी बाबू जीतनक पत्नी ठेहोवालीसँ किछ पुछए चाहलखिन तैपर नेताजी बजला-

"गोपी काका, जीतनक कनियाँक कोनो दोख नइ अछि। ओ पानि नइ भरैत रहए। हमहीं ओकरा जोर दऽ कऽ पानि भरए कहलिऐ-तोँ अपनेसँ पानि भरि लएह, तखन ओ डेराइते-डेराइते पानि भरलक।"

तैपर फोचाइ बाजल-

"ई काज अहाँ बड़ नीक केलिऐ की? भगवान अपनेकेँ सकरता देने छैथ, तँए अपने कल गड़ौने छी। कलक पानि पीबै छी। मुदा हम सभ जे इनारक पानि पीबै छेलौं तेकरो अहाँ डोमिनियासँ छुबा देलिऐ!

कहू अहाँ सन लोकक ई नीक काज भेल?”

नेताजी बजला-

“हमरा सन लोकक लेल ई नीके काज भेल। हम तँ डोम आ ब्राह्मणमे कोनो फर्के ने बुझै छी। जेहने खून डोमक शरीरमे दौगे छै, ओहने खून ने सभ मनुखक शरीरमे दौगे छइ। गाँधी बाबा ऐ छुआ-छूतकेँ तोड़लैन।”

लुचबाकेँ नइ रहल गेलै, बाजल-

“यौ नेताजी, अहाँ घरमे उड़ीस फड़त। अहाँ अपना कलमे डोम्बाकेँ पानि पीबए देबइ?”

नेताजी बजला-

“हँ! हम अपना कलमे डोमोकेँ पानि पीबए देब। अहाँ सभ कहै छिऐ जे इनारक पानि छुबा गेल तँ लाउ-ग एक लोटा पानि ओही इनारक, हम अखने सबहक सोझहेमे पीब। यौ बाबू, ओ सभ डोमो भऽ कऽ दारू नै पीबैत अछि मुदा अहाँ सभ तँ सेहो... ।”

तैपर भुटकुन बाजल-

“आँइ यौ नेताजी, अहाँ तुरूक भऽ जाएब तँ की पूरा समाज तुरूक भऽ जाएत? अहाँ गाए खा लेब तँ की पूरा समाज गाए खा लेत? अहाँ अपन नेतागीरी दुआरे ई सभ करै छी! हम सभ अहाँक विचार नइ मानब।”

पंचैतीमे उपस्थित बारह-अना लोक बाजल-

“हँ, हँ, हम सभ अहाँक विचार नइ मानब।”

पंचैतीमे किछ एहनो लोक रहैथ जे नेताजीक विचारसँ सहमत रहैथ, मुदा बेसी लोकक विरोध देख चुप्पे रहला।

नेताजी ठाढ़ भऽ बजला-

“हम गाँधीवादी लोक छी। तँए पुन: कहै छी, हम कोनो गलती नइ केलौं। मुदा रहब तँ अही समाजमे तँए समाजक जे निर्णए हएत ओकरा माथपर लेब।”

बैसारमे सँ एगारह गोरे उठि कऽ अलग गेला। ओइमे गोपियो बाबू रहैथ। लगधग अदहा घन्टाक पछाइत ओ सभ बैसारमे आपस एला। बैसारमे पुन: धोल-फचक्का हुअ लगल। गोपी बाबू ठाढ़ भऽ कऽ सभकेँ शान्त करैत बजलखिन-

“नेताजी नीक केलैन आकि अधला, हम तैपर नइ जाएब। मुदा समाजक जे निर्णए भेल अछि से बजै छी- पहिल निर्णए, नेताजी इनारक पानि उपछा कऽ इनारक कादो साफ करा देथुन। तेकर उपरान्त पाँच लीटर गंगाजल ओइ इनारमे गिरौल जाएत। तखन इनारक पानि शुद्ध मानल जाएत आ सभ गोरे पीअत। दोसर निर्णए- तीन दिनक भीतर नेताजी चौकपर एकटा चापाकल गड़ा देथुन जइमे लोक ताबे धरि पानि पीअत जाबेधरि इनारक पानि शुद्ध ने भऽ जाएत। आ तेसर निर्णए-डोम आकि चमार फेर कहियो कोनो कल अथबा इनारपर अपनेसँ पानि नै भरए।”

निर्णए सुनेलाक बाद गोपी बाबू नेताजी सँ पुछलखिन-

“की यौ नेताजी, अहाँकेँ फैसला मान्य अछि किने?”

नेताजी ठाढ़ भऽ कऽ बजला-

“समाजक जे निर्णए भेल, ओ हमरा पूर्णत: मान्य अछि।”

बैसार उसैर गेल। सभ कियो हरे-हरे कऽ अपना-अपना घर दिस विदा भऽ गेला। मुदा जीतन पाँचो भाँइ आ ठेहोवाली ठाढ़े रहल। जखन नेताजी घर जेबाले गाड़ी स्टार्ट करैत रहैथ तखने जीतन पाँचो भाँइ आएल। जीतन दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

“नेताजी मालिक, हमरा सबहक चलते अपनेकेँ एतेक गंजन

भेल। इनार साफ करबैमे जे पाइ खर्च हएत ओ हम पाँचू भाँइ तीरब।”

तैपर नेताजी कहलखिन- “तोरा सभ लग जँ ढौआ हुअ तँ पाँचो भाँइ मिलि कऽ एकटा कल गड़ा लएह।”

जीतनक भाए फेकन बाजल- “हँ मालिक हमरा लग पाँच हजार टका अछि। किछ कर्जो-बर्जो लऽ कऽ कल गड़ा लेब।”

नेताजी कहलखिन-

“लोहाबला पाइपक तँ बेसी दाम पड़तह, से नइ तँ पलास्टिके बला गड़ा लएह।”

जीतन बाजल- “सएह करब।”

नेताजी- “हमरा की भेल आ की हएत तैपर नइ जाह।”

अखाढ़ महिना बरखा नइ भेल। अर्द्रा नक्षत्रसँ अशरेश नक्षत्र धरि कहियो जोरगर बरखा नइ भेल। कहियो काल हल्का-फुल्का बरखा भेल जइसँ एतेक जरूर भेल जे बीआ नइ जरल मुदा कदबा-गजार जोकर कहियो बरखा नइ भेल। मगहा नक्षत्र चढ़िते मूसलाधार बरखा भेल। पोखैर-झाँखैर, चर-चाँचर सभ पानिसँ भरि गेल। लोक धन-रोपनीमे भीर गेल। मुदा जनक अभाव। आनो गामसँ जे जन आनत सेहो केना, परोपट्टाक यएह हाल। तरही गामक सेहो यएह हाल। जनक लेल हहाकार मचए लगल। धानक खेती पचता भऽ गेल रहए।

संझुका समए। नेताजीकेँ पिताजी कहलखिन-

“काल्हि दू बीगहा कदबा हएत। मुदा जन भेल पनरहेटा। कमतीमे चालीसटा जन चाही। तखन सभ कदबा रोपाएत।”

नेताजी कहलखिन-

“ठीक छइ। हम जीतन मल्लिकक ऐठाम जाइ छी। जँ केकरो गछने नइ हएत तँ कहबै रोपि देत।”

ई कहि नेताजी विदा भऽ गेला।

जीतन पाँचो भैयारीमे पनरहटा जन। जीतन नेताजीसँ कहलक-

“मालिक, जाधैर अहाँक धन-रोपनी रहत, हम सभ दोसर कोनो काज नइ करब। ने केकरो अनका खेतमे जाएब। काल्हि पनरहटा जन हमरा सबहक परिवारसँ अहाँक खेतमे जाएत।”

दसे दिनमे नेताजीक सभ खेत रोपा गेलैन।

एक दिन जीतन छिट्टा बीनैत रहए। तखने फोचाइ आ भुटकुन पहुँचल। फोचाइ बाजल-

“कहऽ जीतन की हाल-चाह छह?”

जीतन बाजल- “अहाँ सबहक कृपासँ ठीके अछि। अहाँ कहू, केम्हर-केम्हर एलौं हेन?”

फोचाइ बाजल-

“हौ जीतन, गजार सुखि रहल अछि। काल्हि दस कट्ठा कदबा करब मुदा जन एकोटा ने भेल हेन। दू दिन हमरो सम्हारि दइ जा।”

जीतन बाजल- “हम तँ सम्हारि दइतौं, मुदा हमरा सभसँ तँ खेते छुबा जाएत, तखन?”

फोचाइ आ भुटकुन जीतनक मुँह दिस तकैत रहि गेल। ओकरा सभकेँ पैछला सभ गप मन पड़ि गेलइ।



शब्द संख्या : 2435

हमर पत्नीक मनोरथ

हम निर्मलीमे डाक्टर रमेश बाबूक क्लिनिकपर बैसल रही। डाक्टर साहैब कोठरीमे रोगी सभकेँ जाँच कऽ रहल छला। कोठरीक आगाँ राजदेव बाबू, रामविलास बाबू आ हम बैस कऽ मैथिली साहित्यपर चर्चा कऽ रहल छेलौं कि हमर मोबाइलक घन्टी बजल।

जेबीसँ मोबाइल निकालि नम्बर देखलौं तँ मालूम भेल हमर पत्नीक फोन छी। हम मने-मन भनभनेलौं-

“आबि गेल आफत...!”

एक मन भेल जे फोन काटि दी, फेर मन भेल जे रिसिभे ने करी। मुदा डर ईहो रहए जे जँ फोन रिसिभ नै करब तँ गामपर पहुँचते देरी महाभारत शुरू भऽ जाएत आ रातिमे फेरो मच्छर सभकेँ हमर भरपूर खून पीबाक अवसर भेट जेतइ। यौ बाबू की करितौं हारि कऽ मोबाइलक हरियरका बटम टीपैत बजलौं-

“हेलौ, की कहै छी?”

ओमहरसँ पत्नीक अवाज आएल-

“फोन किए ने उठबैत रहिऐ। की करै छेलिऐ?”

बजलौं-

“फोन तँ उठेबे केलौं, हँ! पहिलुक घन्टीपर नहि उठा चारिम घन्टीपर उठेलौं। अच्छा कहू की हुकुम?”

ओमहरसँ पत्नी बजली-

"दूटा ब्रेड पकौड़ा नेने आएब। आ हँ, पोलीथीनमे चटनी सेहो लऽ लेब।"

कहलयैन-

"ब्रेड पकौड़ा तँ गरमे खाइमे नीक लगै छै, ठंढामे तँ कोनो सुआदे ने बुझाएत।"

ओ बजली-

"अहाँ नेने आउ ने चूल्ही पजारि हम ताबापर सेक लेब।"

ई कहि ओ फोन काटि देली।

हमर मुँह लटैक गेल। किए तँ जेबीमे एकोटा छेदामो ने रहए। बीसटा टका जे रखने रही ओ साइकिलक ट्यूब पंचरमे खर्च भऽ गेल रहए। सोचमे पड़ि गेलौं। सोची केकरासँ मुँह छोड़ी। जँ केकरोसँ मुँह छोड़ी आ जँ पाइ नै देत तब तँ अपने सनक मुँह हएत आ तनाव सेहो बढ़ि जाएत। फेर सोची जँ पत्नीक फरमाइस पूरा कऽ कऽ गामपर नै जाएब तँ रातिमे फेरो दलानेपर सूतए पड़त आ सूतब की कपार, भरि राति मच्छर हौंकैत परात करए पड़त। हमरा दस बर्खक पहिलुका घटना मोन पड़ि गेल।

निर्मलीमे सर्कस आएल रहइ। गामक जनीजाति सभ सर्कस देखबाक प्रोग्राम बनौलैन। हुनका सबहक प्रोगाम सौंझुका 6 बजसे 9 बजेक शो देखबाक छेलैन। मुदा गामपर सँ विदा हेती दुइये बजे, किएक तँ पहिने जेती तखन ने बजारमे अल्ता, टिकुली, लिपिस्टिक स्नो-पोडर, लवनटोकी कानमेहक, नाकमेहक आ केशमेहक कीनती...।

हमरो पत्नीकेँ मालूम भेलैन। ओ जलखैये करैकाल हमरा कहली-

"यौ सुनै छिऐ?"

हम कहलयैन-

"कोनो कि कानमे ठेकी नेने छी जे नै सुनब। बाजू ने की कहै छी?"

तैपर पत्नी बजली-

"अँइ यौ, दारू पीब कऽ आएल छी की जे एना बजै छी?"

हम कहलयैन-

"से दिन कहिया हेतै जे पुतोहु कहत ..... । ऐठाम तँ चाह पीबैले पाइये ने अछि आ अहाँकेँ दारू सुझैत अछि! कहू ने की कहै छी।"

पत्नी बजली-

"गामक लोक सभ सर्कस देखैले जाइत अछि।"

तैपर बजलौं-

"ऐमे की लगै छइ। पच्चीस टका टिकटमे आ पच्चीस टकाक चाह-नाश्ता। पचास टकाक व्योंत करि लिअ। नइ होइए तँ तीन किलो चीकने बान्हि लेब। ओकरा पल्लापर बेच लेब, पाइ भऽ जाएत।"

ई बात सुनिते-देरी पत्नीक पारा चढ़ि गेलैन। ओ तामसे भेर भऽ गेली। बजली-

"अँइ! हम चिकना लऽ कऽ सर्कस देखए जाएब! नै जाएब! हमर कपारे जरल अछि जे अहाँ संग बिआह भेल। ने कहियो सिनेमा आ ने कहियो सर्कस देखेलौं। ने स्नो, ने पाउडर, ने नाकमेहक, ने कानमेहक, ने काजर, ने ठोर रंगा, ने सेनुर आ ने टिकुली कहियो अहाँकेँ जुड़ल। अहीठाम मैलामवाली छै, ओकर दुल्हा ओकरा रंग-रंगक साबुन, तेल आ सिंगारक चीज-वौस आनि-आनि दइ छइ।

जखनी घर बलाकेँ जे कहलक तखनी घरबला हजूरमे रहै छइ। की हमरा कोनो मनोरथ नै छइ। अहाँ बुते कहियो हमर कोनो मनोरथ पुरा भेल।”

ई कहैत ओ कानए लगली। आब तँ भेल पहपैट। हम सोची आब की करी। हम कहलयैन-

“मैलामवालीक घरबला मास्टरी करै छइ। तीस-पैंतीस हजार टका महिना कमाइ छै, आ अहाँक घरबला कएटा पाइ कमाइए। अच्छा हमहीं दोकानसँ चिकना बेच कऽ आनि दइ छी, अहाँ सर्कस देख आएब।”

तैपर पत्नी बजली-

“निर्मली बजार जाएब तँ सर्कसेटा देखब आकि किछु सिंगारो-पेटारोक चीज कीनब। हमरा कमतीमे दू साए टका चाही।”

हम कहलयैन-

“अहीं कहू जे अखन हाथमे एकोटा टका नै अछि तखन दू साए टका केतएसँ देब। के देत दू साए टका। जहिया पाइक ओरियान हएत तहिया निर्मली जा कऽ सिंगारक समान लऽ आनब। आइ सर्कसटा देख आबू। हम दोकानसँ चिकना बेचि पचासटा टका आनि दइ छी।”

तैपर पत्नी बजली-

“हम जाएब तँ दू साए टका लऽ कऽ नहि तँ नै जाएब।”

हम केतेको गोरेसँ दू साए टका मंगलौं मुदा कियो ने देलक। दोकानमे चिकना बेच पच्चास टका आनि पत्नीकेँ देलिऐन तँ ओ ढौआकेँ फेक देलक आ बाजल-

“दू बजे लोक सभ सर्कस देखए विदा हएत। अहाँ जँ दू बजे तक दू साए टका आनि कऽ देब तब तँ बड्ड बढ़ियाँ नहि तँ अहाँ जानी

आ अहाँक काज जानए।”

हम बड्ड परियास केलौं मुदा कियो मुँहपर माछी नै बैसए देलक। पत्नीक तुगलकी फरमान हमरा बुत्ते पूरा कएल नै भेल।

स्नान कऽ खेनाइ खा मैलामवाली लग गेलौं आ कहलयैन-

“भौजी दू साए टकाक व्योंत कऽ दिअ। बड्ड जरूरी अछि।”

तैपर मैलामवाली कहली-

“हमरा लग पाँचे साए टका अछि आ निर्मली सर्कस देखए जाइ छी। बजारमे चूड़ी पहिरब आ किछु सिंगारक समान सेहो कीनब। हमरा तँ पाँच साए टकासँ पारो ने लागत तँ अहाँकेँ केना देब।”

हम अपन सनक मुँह लऽ कऽ अँगना एलौं आ बोलीमे हजार मन मिश्री घोरैत पत्नीक हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ कहलिऐ-

“हे समूचा गाम घूमि एलौं मुदा कियो टका नै देलक। केकरा-केकरा लग ने मुँह छोड़लौं मुदा कियो मुँहपर माछी नइ बैसए देलक। से नहि तँ अहाँ ई पच्चास टका लऽ कऽ सर्कस देख आउ, जखन पाइक व्योंत भऽ जाएत तँ दुनू गोरे फेर निर्मली चलब, सिनेमा देखब आ अहाँ सिंगारोक समान कीनि लेब।”

तैपर पत्नी हमर हाथ अपना हाथसँ झटकैत बजली-

“ईह! बेदरा जकाँ हमरा परतारए एला हेन! जाउ राखु अपन पचसटकही। नै हम सर्कस देखै छी।”

हम केतबो खुशामद केलिऐन मुदा ओ टस-सँ-मस नै भेली। आ ने सर्कसे देखए गेली। हमरो ब्लडपेसर बढ़ि गेल। मुदा दिमागकेँ स्थिर रखैत चौकपर चलि गेलौं।

एक्केबेर आठ बजे रातिमे चौकपर सँ एलौं। अँगना गेलौं तँ चूल्हा-चौका सभ बन्न रहए आ पत्नी कोप भवनमे जा कऽ सूतल

छेली। भीतरसँ बिलैया लगा नेने छली। हम केबाड़ लग जा कऽ केतबो हाक देलिऐ मुदा ने ओ केबाड़े खोलली आ ने किछु बजबे केलीह। सभसँ मोश्किल भेल जे रातिमे सूतब केतए। की करितौं हारि कऽ दलानपर जा अखड़े मोथीक पटियापर सूतलौं। सूतब की दैवक कपार भरि राति तौनीसँ मच्छर हौंकैत परात केलौं।

मनमे पत्नीक प्रति पूरा रोष भऽ गेल रहए। सोचलौं ओ पत्नी की जे पतिक दुख नै बुझलक..!

बिआहमे एकटा चारिअना भरि सोनाक औंठी देने रहए। वएह औंठी नरहिया बजारमे बन्हकी लगा दिल्ली विदा भऽ गेलौं। दिल्ली जा स्पोटमे पाँच हजार टका महिनापर काज पकड़लौं। आठ घन्टाक ड्यूटी रहए। चारि घन्टा ओभर टाइमो खटी। खा-पीब कऽ आ रूम भाड़ा दऽ कऽ चारि हजार टका बँचैत रहए।

छह मास धरि काज केला पछाइत लगधक पच्चीस हजार टका जमा भेल। एक दिन फोनसँ खबर भेल जे माए बीमार अछि। जँए छी तँए चलि जाउ।

हम दिल्लीक त्रिनगर बजारमे पत्नी-ले ब्रेसियर, स्नो, पाउडर, लाहबला चूड़ी, रोल्ड-गोल्डक नेकलस, कानक बाली, नाकमेहक नथिया, कानमेहक झुमका, गमकौआ साबून, ठोररंगा, पैररंगा आ लबन टोकी सभ सिंगारक चीज वौस कीनलौं। हँ, कपड़ा नै कीनने रही। किए तँ हमर कीनलाहा कपड़ा हमरा पत्नीकेँ पसिने नहि होइ छैन तँए सोचलौं दू हजार टका दऽ देबै अपन निर्मली जा जैन इंपोरियममे मनपसन्द कपड़ा कीनि लेती।

एकटा अटैचीमे सभ समान राखि गाम विदा भेलौं। दरभंगावाली सुपर फास्ट ट्रेनमे बैसलौं। केतेको परियास केलाक बादो रिजर्वेशन नै भेल छल मुदा जेनरले बौगीमे खिड़की लग एकटा सीट

भेट गेल रहए।

अटैचीकेँ बर्थपर रखि चौकन्ना छेलौं जे कियो चोरा ने लिअए। भरि राति सुतबो ने केलौं। मुदा बनारस अबैत-अबैत आँखि लगि गेल। सपनामे देखलिऐ हमर पत्नी आँगनमे सभ चीज-वौस रखि निहारि रहली अछि। ओ बड्ड खुश अछि। हमर हाथ अपना हाथमे रखैत बाजि रहल अछि- आइ हमर मनोरथ पूरा भऽ गेल। नीन टुटल तँ देखलिऐ एकटा बीस-बाइस बर्खक अति सुन्नैर लड़की हमरा कहि रहल छेली- कनेक हमरो बैसऽ दिअ प्लीज।

हम पहिने अटैची दिस देखलौं तँ ओ सुरक्षित बुझि पड़ल। तेकर बाद ओइ लड़की दिस धियानसँ देखलौं तँ ओ कोनो फिल्मी दुनियाँक हीरोइन जकाँ बुझि पड़ली। ताबेमे ओ लड़की फेर बाजल-

"प्लीज कनेके खिसकु ने।"

ओ गजब-कें सुन्नैर छेली। अपना आपकेँ भाग्यशाली बुझैत हम खिसैक गेलौं। ओ लड़की बैस गेली। भाग्यशाली ई बुझलौं जे एहेन दिव्य नवयौवना हमरा लगमे बैसली। हुनका शरीरसँ मधुर-मधुर सुगन्ध हमरा मदहोश करए लगल। ओ लड़की पर्स खोललक आ एकटा पत्रिका निकालि पढ़ए लगल। हमर आँखि हुनकर सुन्दरता निहारए लगल। एकदम गोर वर्ण, भरल-पूरल देह। सेव जकाँ गाल। हिरण जकाँ कजरारी आँखि। नागिनसन केश जे खुजले छल, कानमे तीन स्टेपबला झुमका, नाकमे हीरा जड़ल छक, समतोलाक फारा सन ठोर जैपर हल्का लाल रंगक लिपिस्टिक लागल। बिल्कुल पारदर्शी साड़ी आ ब्लौज पहिरने। साड़ीक भीतरसँ पेटीकोट आ ब्लौजक भीतर जे अधोवस्त्र पहिरने छेली से झलाक-झलाक देखाइत। ओ जे मेहदी लगौने रहए ओ ओकर पैरक सुन्दरतामे चारि चान लगबैत छेलइ। हमरा इण्टरमे हिन्दी क्लासक गप मोन पड़ि गेल। पूज्य गुरुदेव स्व.

टेकनारायण बाबू रश्मिरथि पढ़बै छेलखिन। कोनो बिन्दुपर युवतीक सुन्दरताक चर्चाक क्रममे कहने रहथिन-

“न पैरों में महावर रचाओ गोरी, संगमरमर का कलेजा पिघल जाएगा।”

संगमरमरक कलेजा पिघलौ वा नहि पिघलौ मुदा हमर छातीक धड़कन जरूर तेज भऽ गेल छल।

ब्लौज तेतेक ने कसल रहए जे ओकर जवानीक छातीक एक चौथाइ भाग बाहरे। जेना देखनिहारकेँ जवानीक टेलर देखबैत। ओ अपना ओढ़ब-पहिरबसँ अपन जवानीक भरपूर प्रदर्शन करै छेली। हमरा फेर कोनो कविक कविता मोन पड़ि गेल-

“जब कोई रमणी चलती है
यौवन सँवार के
मुर्दा भी देख लेता है
कफन उघार के।”

फिलहाल मुर्दा कफन उघारि कऽ देखौ वा नहि देखौ मुदा हमर नजैर बेर-बेर ओकर छलकैत जवानी दिस जरूर उठि जाइत रहए। हिन्दीमे एकटा उपन्यास पढ़ने रही- ‘छलकता जवानी’ आ उपन्यासक आवरणपर जे एकटा अर्द्धनग्न युवतीक फोटो रहइ निश्चित रूपे ई लड़की ओइ उपन्यासक आवरणक फोटो बुझाइत, एकदम साक्षात्।

हम ओइ लड़कीसँ पुछलिऐ-

“ट्रेन केतए पहुँचल अछि?”

ओ लड़की जवाब देलक-

“मुजफ्फरपुरसँ आगाँ निकैल गेल अछि। केतए उतरब।”

हमरा मुहसँ अनायास निकैल गेल-

“दरभंगा।”

तैपर ओ बजली-

“हमहूँ दरभंगे उतरब। अहाँ दिल्लीसँ अबै छी की?” ओ फेर पुछलक।

हमरा फेर बजा गेल-

“हँ दिल्लीसँ अबै छी।”

ई कहैत हम खिड़कीसँ बाहर मकैक फसल देखए लगलौं। ओ लड़की हमरा देहमे सटि गेली। हमरा जेना 440 वोल्ट बिजलीक झटका लगल, तहिना बुझना गेल। मुदा डरो हुअए तँए कनी अपनाकेँ सिकोरि लेलौं आ थोड़े ओइ लड़कीसँ देह अलग कऽ लेलौं। सोचलौं की जानि की भऽ जाए, किएक तँ कहल गेल छै- ‘त्रिया चरित्रम् देवो ने जानए.. ।’

बजलौं-

“मेडम कनेक हटिये कऽ बैसू।”

ओ लड़की हमरा दिस तकैत बजली-

“की यौ बिआह भेल अछि की नहि।”

हम सोचलौं, लड़की ई गप किए पुछैए! कहलिऐ-

“हँ बिआह तँ भऽ गेल अछि।”

ओ फेर पुछलक-

“बाल-बच्चा अछि की?”

हमरा बजा गेल-

“हँ एकटा बेटीअछि।”

तैपर ओ पुछलक-

“अपन छी की अनकर?”

आब तँ बुझू जे हमरा रिश उठि गेल। मनमे बहुत बात आएल। मुदा डर हुअए जे किछु ऊँच-नीच गप बजा गेल आ जँ ई लड़की कोनो अबलट लगा दिए तखन तँ बड़का पहपैटमे पड़ि जाएब आ सभ प्रतिष्ठा माटिमे चलि जाएत। मुदा तैयो हम पुछलिऐ-

“मेडम एना किए बजै छिऐ।”

तैपर ओ कहलक-

“अहाँकेँ देखै छी जे मौगीक महक लगैए। पत्नियोँ हेती तँ हमरासँ सुन्नैर तँ नहियेँ हेती।”

हम सकदम्म भऽ गेलौं। फेर वएह पुछलक-

“आकि अहाँक बिआह हेमामालिनीक बहिनसँ भेल अछि?”

हम बजलौं-

“नइ जानि मेडम किएक अहाँ हमरा एहेन-एहेन बात कहै छी।”

तैपर ओ लड़की बजली-

“अच्छा छोड़ू ऐ बात सभकेँ आरामसँ चलू।”

ई कहि ओ फेर हमरा देहसँ सटि गेली। डर तँ हेबे करए मुदा अपना-आपकेँ बड्ड सौभाग्यशाली सेहो बुझैत रही जे एहेन दिव्य लड़कीक सानिध्य प्राप्त भऽ रहल अछि।

थोड़ेकालक बाद ओ लड़की अपन हाथक पत्रिका हमरा दैत बजली-

“लिअ पढ़ू अहाँ बोर भऽ रहल छी।”

हम पत्रिका पकड़ैत पुछलिऐ-

“आ अहाँ?”

जवाब देली- “हम गृहशोभा पढ़ै छी।

हम पत्रिकाक पन्ना उलटाबए लगलौं। पत्रिकामे नीक-नीक लड़की सबहक अर्द्धनग्न फोटो सभ रहए। एकटा कथा रहै- लबली हेमा। कथा बड्ड रोमेन्टिक रहए। हम ओइ कथामे हेरा गेलौं। ताबेमे ट्रेन समस्तीपुर टीशनपर पहुँच गेल छल। ट्रेन रूकल। एकटा चाहबला हमरा वोगीमे चढ़ि अवाज देलक-

“चाह गरम! गरम चाह..!”

ओ लड़की चाहबला दिस तकैत बजली- “ऐ चाहबला दो कप चाह देना।”

हम मने-मन सोची जे दू कप चाह की करती। फेर मनमे भेल जे भऽ सकैए जे एक कप चाहसँ छाँक नै भरैत होइ।

चाहबला दू कप चाह ओइ लड़कीकेँ पकड़ा देलकै। एकटा कप हमरा दिस बढ़बैत ओ लड़की बजली-

“लिअ चाह पीबू। एतेक भीड़मे अहाँ अपना दिक्कत सहि हमरा जगह देलौं।”

हम कहलिऐ- “धन्यवाद। अहाँ पीबू हम चाहबलासँ लऽ लइ छी।”

तैपर ओ बजली- “यौ अहाँ हमर पाइक चाह नै पीयब तँ अहीं दियौ ढौआ, हमहीं अहाँ पाइक चाह पीब। अहाँ ने छुबा जाएब मुदा हम नै छुबाएब।”

हम ओइ लड़कीक हाथसँ चाह पकड़ैत जेबीसँ एकटा दसटकही निकालि चाहबला दिस बढ़ा देलिऐ। ओ लड़की अपना पर्ससँ चारिटा मोट-मोट बिस्कुट निकालि दूटा बिस्कुट हमरा दिस बढ़बैत बजली-

“लिअ, बिस्कुटक संग चाहक मजा लिअ।”

हम कहलिऐ-

“धन्यवाद। अहाँ खाउ।”

तैपर ओ बजली-

“की होइए जे ई छौरी बिस्कुट खिया कऽ सभटा ढौआ-कौरी छीनि लेत। यौ हम एहेन नइ छी। हम मिथिला विश्वविद्यालयमे गृह विज्ञानक पी.जी फाइनलक छात्रा छी।”

की करितौं। ओकरा हाथसँ बिस्कुट लऽ चाहमे डुबा-डुबा खाए लगलौं।

बिस्कुट खेलाक किच्छे मिनटक पछाइत हमरा नीन आबए लगल। आँखि खुजल तँ लहेरियासराय अस्पतालमे बेडपर पड़ल रही। एकटा नर्स हमरा मुँहपर पानिक छीटा मारैत रहए। ने ट्रेन रहए आ ने ओ लड़की। हमरा चीज-वौससँ भरल अपन अटैची मोन पड़ल। हम बजलौं- “हमर अटैची?”

तैपर ओ नर्स बजली- “आपको दरभंगा रेलबे स्टेशनपर बेहोशी की हालत में उतारा गया है। पूरा बौगी खाली था। आप अपने सीटपर बिल्कुल बेहोश थे। चार घन्टा उपचार के बाद आपको होश आया है।”

हम अपन जीन्स पैन्टक जेबी टटौललौं तँ ढौआबला पर्स गायब रहए। हम बजलौं- “हाय रे हमर पत्नीक मनोरथ।”

ई कहैत हम फेर बेहोश भऽ गेलौं।



शब्द संख्या : 2232, तिथि : 25.03.2017

चरित्तर कक्काक ब्लडपेसर

चरित्तर काकासँ भेँट करैले मन औनाइत रहए। हुनकासँ भेँट भेना एक माससँ बेसीए भऽ गेल छल। किएक तँ हमहूँ धनकटनी आ गहुम बाउग करबामे व्यस्त छेलौं। गहुम बाउगसँ फुरसत भेटल तँ नारक टाल लगाएब, धान दौनी कराएब, एकटा ने एकटा काज लगले रहल। दौन-दौगोनी होइत-होइत गहुम पटबै-जोकर भऽ गेल। यौ बाबू किसानी जीवनमे बड्ड भीड़। एकटा-ने-एकटा काज लगले रहत। आ जँ ओ काज समयपर नै करब तँ हानि छोड़ि लाभ नै हएत। मुदा नोकरी करैबलाकेँ से बात नहि। तहूमे सरकारी नोकरी करनिहारक तँ बुझू पाँचो आँगुर घीयेमे। आगि लागौ चाहे पाथर खसौ समयपर दरमाहा भेटबे करतै आ ऊपरका आमदनी अलगसँ। ने हर-हर आ ने खट-खट। देखै नै छिऐ प्रो. वीरेन्द्र बाबूकेँ केहेन मोछमे घी लगबै छथिन। एगारह बजे दिनमे महाविद्यालय जाइ छथिन आ तीन बजे बेरमे आपस आबि जाइ छथिन आ दरमाहा केतेक भेटै छैन...। खाएर छोड़ू ऐ बातकेँ...।

हम आ चरित्तर कक्काक बेटा विमल लंगोटिया संगी।पहलासँ बी.ए. धरि संगे पढ़लौं। ओ कलकत्तासँ बी.एड. कऽ लेलक तँए उच्च विद्यालयमे शिक्षकक पदपर नोकरी करै छैथ आ हम कोनो प्रशिक्षण नै प्राप्त केलौं तँए खेती-गिरहस्ती कऽ अपन जिनगीक गाड़ी खींच रहल छी। ओना, नोकरी-ले हमहूँ परियास कम नहि केलौं, मुदा ऐ युगमे भगवान भेटब असान अछि जखन कि नोकरी भेटब कठिन।

29 दिसम्बरकेँ जखन गहुम पटबैत रही, फोचाइ कहलक जे चरित्तर काका बेमार पड़ि गेला हेन। ब्लड पेसर बढ़ि गेल छैन। जखनेसँ कक्काक बेमारीक बात सुनलौं हुनकासँ भेँट करैले मन कछमछ करए लगल। कछमछाइत मनमे उठल- चरित्तर काका मेहनती किसान छैथ। कन्हापर कोदारि आ हाथमे खुरपी रहबे करै छैन। जीर-मरीच आ नोनक अलाबे खाइ-पीबैक कोनो वस्तु नै कीनए पड़ै छैन। कहियो ने सुनने रहिऐ जे चरित्तर काकाकेँ माथो दुखाएल हेतैन। फेर ब्लड पेसर किएक बढ़ि गेलैन?

विहाने भेने सुति उठि कऽ चरित्तर काकासँ भेँट करए लेल विदा भेलौं। रस्तेमे नित्यक्रियासँ निवृत्त भेलौं। कक्काक घर हमरा घरसँ लगधक डेढ़ किलोमीटरपर। हमर घर गामक दछिनवरिया टोलमे सभसँ दच्छिन आ हुनकर घर उतरवरिया टोलमे सभसँ उत्तर छैन।

चरित्तर काका दलानक चौकीपर कम्मल ओढ़ि कऽ बैसल रहैथ। हम दलानक निच्चेसँ कहलयैन-

“काका गोड़ लगै छी।”

काका बजला-

“नीके रहह। आबह-आबह। केतए हेराएल छेलह हेन। एक-डेढ़ मासक वाद तोरासँ भेँट भेल हेन।”

कहलयैन-

“की कहब काका, एक्कोरत्ती फुरसत नइ भेटै छल। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे किसानक जिनगी केहेन होइ छइ। काल्हि गहुमक पहिल पटौनी समाप्त केलौं हेन। गहुमे पटबैतकाल फोचाइ कहलक जे काका बेमार भऽ गेला हेन। बुझू तखनेसँ अहाँक भेँट करैले मन कछमछ करै छल। सुति उठि कऽ एम्हरे विदा भऽ गेलौं।”

काका बजला-

"हँ, तेतेक ने टेंशन भऽ गेल अछि जे ब्लड पेसर बढ़ि गेल। आठम दिन डाक्टर रमेश जँचने रहए। कहलक जे नीचलका साए आ ऊपरका एकसाए साठि भऽ गेल अछि। दवाइ खाइ छी। काल्हि जँचबेलौं तँ कहलक आब ठीक अछि। तैयो परहेजसँ रहैले कहलक हेन। ठीक रहितो ऐ बेमारीमे दवाइ सभ दिन चलिते रहत सेहो कहलक। ठंढासँ बँचि कऽ रहैले कहलक हेन। भात आ नोन कम खाइले कहलक हेन।"

हमसभ गप करिते रही ताबेमे चरित्तर कक्काक पोती दूटा प्लेटमे चारि-चारिटा नमकीन बिस्कुट आ दूटा कपमे चाह दऽ गेल।

काका पुछलैन-

"पानियों पीबह?"

कहलयैन-

"हँ काका, पीब।"

काका पोतीकेँ कहलखिन-

"गइ रीना एकलोटा पानि आ एकटा गिलास नेने आ।"

रीना एक लोटा जल आ एकटा गिलास राखि गेल। हम बिस्कुट खा जल पीब चाहक चुस्की लेबए लगलौं। चाहो पीबी आ काकासँ गपो करी। हम पुछलयैन-

"काका, ऐबेर गहुमक खेती केते केने छी?"

तैपर काका जवाब देलैन-

"एक्को धुर नहि।"

कक्काक गप्पक हमरा कोनो अर्थे ने लगल। हम छगुन्तामे पड़ि गेलौं। सोचए लगलौं- काका जीवनी किसान छैथ। चारि-पाँच बिगहामे सभ साल गहुमक खेती करै छैथ। फेर एना किए बजला!

पच्चीसे नवम्बरकेँ विमल चौकपर भेटल रहए तँ कहने छल जे आइए गहुमक बाउग समाप्त केलौं। तैपर हम पुछनौं रहिऐ जे केतेक खेतमे गहुम बाउग केलह अछि। तैपर विमल कहने रहए पाँच बिगहामे। तैपर हम कहने रहिऐ-बड़ी अगता गहुमक खेती मारि लेलह। तैपर विमल बाजल रहए- रौ मीत पाँचो बिगहा खेतमे क्रान्ति धान रोपने रही। नारेपर कटबा लेलौं। फारबला ट्रेक्टरसँ एक दिन पाँचो विगहा खेतकेँ एक समार जोतबा लेलौं आ पाँच दिन रौद लगला बाद छठम दिन खाद आ बीआ छीटबा कऽ रोटावेटरसँ एक चास करा देलौं। आब की कोनो हर-बरदसँ खेती होइए जे बेसी समय लागत।

हम कहने रहिऐ- हँ से तँ ठीके कहै छीही। तोहर खेतो सड़के कातमे छौ, तँए ट्रेक्टर जाइक सुविधा छौ आ छह-सात बिगहा खेतो एकेठाम छौ।

विमल कहने रहए- हँ से तँ अछिए। एकेटा कमी अछि। बोरिंग नइ अछि। की करबै तीन-तीन ठाम लेअर जाँच करबौलिऐ मुदा 250-300 फीटसँ कमपर लेअरे ने भेटै छइ।

हम कहने रहिऐ- तोहर खेत तँ बिहुलो धारसँ पटि जाइ छौ। बोरिंगक खगतो तँ नहियेँ छौ।

विमल कहने रहए- हँ से तँ पटि जाइए।

हमरा सोचमे डुमल देख चरित्तर काका टोकलैथ-

“की सोचए लगलहक।”

कहलयैन-

“काका हमरा तँ अहाँ गपक कोनो अर्थे ने लागल। 25 नवम्बरकेँ विमल भाय कहने छला जे आइए पाँच बिगहा गहुम बाउग कऽ निचेन भेलौं हेन। ओ किए झूठ बाजल?”

तैपर काका बजला-

“ने विमले झूठ बाजल आ ने हमहीं गलत कहै छिअह।”

कक्काक बात सुनि हम आरो ओझरीमे पड़ि गेलौं। गपक कोनो भाँजे ने लागए। कहलयैन-

“काका, अहाँ की कहै छिऐ से तँ हमरा भाँजे ने लगैए।”

काका समझबैत बजला-

“सुनह, गहुम ठीके पाँच विगहामे बाउग केने छी। ओहो 25 नवम्बरकेँ। तोरा तँ बुझले छह जे गहुमक फसिलमे बाउग केलाक बीसम दिनसँ लऽ कऽ पच्चीसम दिन धरि पहिल पटौनी कऽ देबाक चाही। नहि तँ गहुमक गाछमे वृद्धि नै होइ छइ।”

मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से तँ ठीके। नहि तँ आखिरी पच्चीसम दिन धरि पहिल पानि देब अनिवार्य अछि।”

काका बिच्चेमे बजला-

“ठीके कहलहक। आब तोंही कहह जे हमरा गहुम बाउग केला पैंतीस दिन भऽ गेल हेन आ अखन धरि पटवन नै भेल। भेल एक्को धुर गहुम बाउग केनाइ? बुझह जे हाथो तरक गेल आ लातो तरक गेल।”

हम मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“से तँ ठीके कहै छिऐ। जँ गहुमक फसिलमे पटवन नै केलिऐ तब तँ सभ खर्चा आ मेहनत पानिमे चलि गेल। मुदा एना भेल किए?”

तैपर काका बजला-

“सभ साल बिहुल नदीसँ गहुमक पटवन भऽ जाइ छल। एमकी अगते बिहुल धार सुखि गेल।”

हम पुछलयैन-

“एना किए भेल? एतेक अगता धार किए सुखि गेल।”

काका बजला-

“सुनै छिऐ गोठ नरहिया लग एन.एच. 104मे पुल बनि रहल छै, तँए पुलक ठीकेदार धारकेँ गोठ नरहियासँ एक किलोमीटर उत्तर बान्हि देलक। तँए पानि एनाइ बन्न भऽ गेल आ धार सुखि गेल।”

हमरा चरित्तर कक्काक ब्लड पेसरक कारणक भाँज लागि गेल। समयपर गहुम नै पटलासँ कक्काक ब्लड पेसर बढ़ि गेल रहैन।

हम खड़ा होइत बजलौं-

“काका,जाइ छी। बड्ड काज अछि।”

ई कहैत हम विदा भऽ गेलौं।



शब्द संख्या : 1069

कटही साइकिल

"कतेक दिन ऐ पुरनका कठही साइकिलपर चढ़बह। कहह दुनियाँ केतए-सँ-केतए चलि गेल आ तूँ बीस-बाइस बर्खक ऐ पुरनका साइकिलपर चढ़ै छह!" -गेनालाल जियालालकेँ कहलकैन।

जियालाल हँसैत बजला-

"हौ भाय, तोहर बेटा सभ जे कमाइ छह ने, तँए तोरा हरियरी सुझै छह।"

तैपर गेनालाल बजला-

"आ तोरा जे कोचिंग सेन्टर आ चटिया सभकेँ टीशन पढ़ेलासँ आठ-दस हजारक महिनवारी आमदनी होइ छह से की करै छहक। कमतीमे एकटा सकेण्डो हेण्ड फटफटिया कीनि कऽ चढ़ह। हौ मरबह तँ किछ लऽ कऽ दुनियासँ नै जेबह। जेतबे सुख-मौज ऐ धरतीपर करबह ओतबे संग जेतह।"

जियालाल बजला-

"हौ भाय, अखन हमरा बड़ समस्या अछि तँए अखन हमरा अही साइकिलपर चढ़ह दएह।"

चाहक दोकानदारो दुनू संगीक गप सुनैत रहए ओ बाजल-

"मर्र! ऐ लोहाक साइकिलकेँ कठही साइकिल किए कहै छिऐ?"

तैपर गेनालाल बजला-

"ऐ साइकिलमे पाइडिल देखै छिऐ, काठक छी आ ऐ

साइकिलपर जखन चढ़बै तँ जहिना कठही बैलगाड़ीक धुरामे सोन-तेल नै रहलापर चलैकाल कों-काँए, पों-पाँएक अबाज निकलै छै तेनाहिये ऐ साइकिलसँ अबाज निकलै छइ।"

चाहक दोकनदार पुछलकैन-

"से अहाँ केना बुझलिऐ?"

गेनालाल जवाब देलखिन-

"एक दिन हम निर्मली बसेसँ गेल रही। एक बोरा नोन कीनि अही साइकिलपर राखि बस स्टैण्डपर गेल रही। बस स्टैण्डपर नोन रखि जखन साइकिल पहुँचाबए जियालालक कोचिंग सेन्टरपर गेलौं तँ बुझाएल जे ई लोहाक नहि, काठक साइकिल छी। तहियेसँ हम एकरा कठही साइकिल कहै छिऐ।"

जियालाल बजला-

"हौ भाय कनेको पलखैत नै भेटए जे साइकिलकेँ भंगठियो करा लेब। दू दिन भंगठी करैले मिस्त्री ओतए साइकिल छोड़ि देलिऐ मुदा साँझमे जखन साइकिल लाबए गेलौ तँ साइकिल ओहिनाक-ओहिना राखल।"

तैपर गेनालाल हँसैत कहलकैन-

"धुर्र बुड़ि, तोरा कपारमे सुख लिखले ने छौ। कमा-कमा पाइ बैंकमे जमा कर मुदा भोग तँ तोरा बेटाकेँ लिखल छौ।"

जियालाल हँसैत जवाब देलखिन-

"ठीके कहलीही भाय, हमरा भागमे सुख नै लिखल अछि।"

ई गप-सप्प गेनालाल आ जियालालक बीच भूतहा चौकपर चाहक दोकानमे होइत रहइ।

गेनालाल आ जियालाल हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक

संगी। गेनालालक घर झिटकी गाममे जखैन कि जियालालक घर नवटोली गाममे। दुनू गोरेक छठा किलाससँ एगारहम किलास धरि बनगामा हाइ स्कूलमे संगे पढ़लैथ। संगे मैट्रिक पास केलैन। मैट्रिक पास केला पछाइत दुनू गोरे निर्मली कौलेजमे इन्टरमे नाओं लिखौलैन। निर्मली कौलेजमे बी.ए. धरि दुनू गोरे संगे पढ़ला। गेनालाल पास कोर्सक विद्यार्थी छला जखैन कि जियालाल अंग्रेजी आनर्सक छात्र।

बी.ए. पास केला पछाइत गेनालाल नौकरीक लेल परियास करए लगला।मुदा तीन बर्ख धरि परियास केला बादो जखन नौकरी नहि भेलैन तँ खेती-गृहस्तीमे भीर गेला। ओ अपना बापक एकलौता बेटा। पाँच बिघा जोतसीम जमीनक मालिक। ऊपरसँ गाछ-कलम-बाँस-पोखैर सभ किछु। नौकरी नहियोँ भेलापर गुजर-बसरमे कोनो दिक्कत नहि होइन। गेनालालकेँ दूटा बेटेटा। जे मैट्रिक केला पछाइत दिल्लीमे काज करै छैन आ दरमाहा भेटलापर अपन खर्चा राखि बापक बैंक-खातामे पठा दइ छैन। बेटा सबहक कमाइ आ खेतक उपजासँ गेनालाल आनन्दपूर्वक जिनगी बितबै छैथ। सुखक जिनगी बितबैक कारण ई जे परिवार छोट छैन। दुनू बेटा अखन अविवाहिते छैन जे दिल्ली खटै छैन। घरपर मात्र अपने आ पत्नी। खेतो सभ मनकूतपर लगौने छैथ। हँ, दूध खाइ वास्ते एकटा दोगला गाए जरूर पोसने छैथ।

गेनालाल अपना बेटा सभकेँ मैट्रिकसँ आगाँ ऐ दुआरे ने पढ़ौलखिन जे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नौकरी नै भेटलापर समाजमे जे दुरगैत होइए से देखैत छथिन। जखन कि कम्मो पढ़ल-लिखल लोक दिल्ली, मुम्बइ, कलकत्तामे प्राइवेटो नौकरी कऽ शानसँ अपन जिनगी बितबैत अछि। मुदा जियालालक सोच ऐसँ बिलकुल भिन्न छैन। हुनकर कहब ई जे जइ पढ़ल-लिखल बेकतीमे टाइलेन्ट रहत ओ

विद्यार्थीके ट्यूशनो पढ़ा अपन जिनगी शानसँ चलौत। पटनामे एकसँ एक कोचिंग संस्था अछि जेकर आमदनी लाखोमे अछि।

जियालाल सीमान्त किसानक बेटा। हुनका बाबूजीकेँ मात्र अढ़ाइ बीघा खेत। जियालाल दू भाँइ। जेठ जियालाल अपने आ छोट पन्नालाल। पन्नालाल जखन मैट्रिकमे पढ़ैत रहैथ तखने हुनकर पिताजी परलोक चल गेला। मुदा पन्नालालकेँ पिताजीक स्वर्गवासक बादो पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो दिक्कत नै भेलैन। जेठ भाय जियालाल ट्यूशन पढ़ा छोट भाएकेँ माने पन्नालालकेँ एम.ए. धरि पढ़ौलकैन। एम.ए. पास केलाक तीनियेँ मासक पेसतर पन्नालालक बहाली शिक्षा मित्रक पदपर भऽ गेलैन।शिक्षा मित्रमे बहाल भेलाक दू मासक भीतर पन्नालालक बिआह एकटा डीलरक बेटीसँ भेलैन।

जियालाल अंगेजी आनर्सक संग बी.ए. केला पछाइत नौकरीक लेल काफी परियास केलखिन मुदा सफलता नइ भेटलैन। जइ समैमे सरकार शिक्षा मित्रक बहाली केलक ओइ समैमे जियालालक उमेर चालीस पार कऽ गेल रहैन। तँए शिक्षा मित्रमे बहाली होइसँ वंचित रहि गेला।

जखन सरकार शिक्षा-मित्रकेँ मानदेय पनरह साएसँ बढ़ा कऽ चारि हजार कऽ देलकैन आ एगारह मासक नौकरीकेँ साठि बर्खक उमर धरि स्थायी कऽ देलकैन तँ पन्नालालक पत्नी अपना दुल्हाकेँ सिखा-पढ़ा परिवारमे भीन-भिनौज करा देलकैन।

जखैन जियालाल आ पन्नालालमे भीन-भिनौजी भऽ गेलैन तँ जियालालकेँ एक बिघा जोतसीम खेत आर घराड़ी आ कलम-गाछी मिला कऽ पाँच कट्ठा हिसा भेल रहैन। हुनकर पाँच गोरेक परिवार। जेठ दूटा बेटी तैपर सँ एकटा बेटा आ दू परानी अपने। एक बिघा जोतसीम खेतसँ जखन परिवारक गुजर-बसरमे कठिनाइ होमए

लगलैन तँ जियालाल ट्यूशन पढ़ाबैपर बेसी जोर देलखिन। ओना तँ दस बर्ख पहिनहिसँ निर्मलीमे एकटा कोचिंग संस्थामे अंग्रेजी पढ़बैत रहैथ। कोचिंग आ ट्यूशनक कमाइसँ जियालाल अपन दुनू बेटीकेँ पढ़ा-लिखा कऽ बिआह कऽ देलखिन। दुनू बेटियो आ जमाइयो टी.इ.टी. पास कऽ शिक्षकमे बहाल छैन। एकटा बेटाकेँ नीक पढ़ाइ खातिर पटना बी.एन.कौलेजमे नाओं लिखौने छेलखिन। बेटो विवेक पढ़ैमे चन्सगर। ओ पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे एम.ए. कऽ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे लागल छथिन।

आइ फेर गेनालालक भेँट भूतहा चौकपर चाहक दोकानपर जियालालसँ भऽ गेल। गेनालाल चाहक दोकानपर पहिनेसँ बैसल रहैथ। जखन जियालाल निर्मलीसँ टीशन पढ़ा भूतहा चौकपर एला तँ चाह पीबैले चाहक दोकानक आगूमे साइकिल ठाढ़ करिते रहैथ कि गेनालालक नजैर जियालालपर पड़लैन, ओ बजला-

“कह भाय, समाचार। आबो धरि वएह पुरनका साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ पूरा दुनियाँ सुधैर जेतै मुदा तूँ नहि सुधरबेँ। हे मरिहेँ ने तँ सभ किछ लाधि कऽ नेने जइहेँ। पचपन-छप्पनक उमेरमे ऐ कठही साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ तोरा बुझाएब आ दिल्ली पएरे जाएब बरबैर अछि। आ-आ चाह पीब ले।”

जियालाल हँसैत कहलकैन-

“तोहर जे बेटा कमा-कमा पाइ पठा दइ छौ ने तँए तोँ मोछमे घी लगबै छेँ।”

तैपर गेनालाल बजला-

“आब तँ तोरो बेटाक पढ़ाइ खतम भऽ गेल छौ। तोँ तँ तेसरे साल कहने रहँ जे विवेक पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए.मे फस्ट क्लाससँ उतीर्ण भेल हेन।”

ई गप-सप्प होइते रहए कि एकटा स्कारपियो गाड़ी आबि चाह दोकानक बगलमे रूकल। ड्राइवर गाड़ीसँ निकैल बीचला गेट खोललक। एकटा युवक गाड़ीसँ निच्चाँ उतरल। ओ पैन्ट-कोर्ट-टाइ लगौने रहए। जखने ओइ युवकक नजैर जियालालपर गेलैन ओ दुनू हाथे पएर छुबि हुनका गोर लगलकैन।

"बौआ विवेक! अच्छा काकाकेँ गोर लगहुन।" –गेनालाल दिस इशारा करैत जियालाल बजला।

विवेक गेनालालोकेँ पएर छुबि गोर लगलकैन आ बजला-

"बाबूजी, हमर चौथे दिन ट्रेनिंग खतम भऽ गेल। परसू बीरपुर डी.एस.पी. पदपर योगदान केलौं हेन। काल्हि पटनामे मीटिंग छल। अखन पटनेसँ बीरपुर जा रहल छी। ऐ ठाम एलौं तँ मनमे भेल भऽ सकैए बाबूजी निर्मलीसँ घूमल हेता।"

गेनालालक बोलती बन्द। ओ कखनो जियालालकेँ देखैथ तँ कखनो विवेककेँ आ कखनो ओइ स्कारपियो गाड़ीकेँ।

जियालाल विवेकसँ पुछलखिन-

"माएसँ असिरबाद लेबए कहिया अबै छहक।"

तैपर विवेक कहलकैन-

"मनमे तँ रहए जे पटनासँ घुमतीमे अहाँ सभसँ आर्शीवाद लऽ लेब मुदा दरभंगेमे रही तँ बीरपुरक एस.डी.ओ. साहैब फोन केलैन। ओ कहलैन जेतेक जल्दी बीरपुर पहुँच सकी पहुँचू। तँए बीरपुर जल्दी पहुँचब जरूरी भऽ गेल। रबि दिन गाम आबि रहल छी।"

ई कहि ओ जियालाल आ गेनालालकेँ गोर लागि गाड़ीमे बसि कऽ चलि गेला।

गेनालाल बजला-

“भाय जियालाल, तोहर कठही साइकिलक मान रहि गेलौं। तोहर बेटा पढ़ि-लिख कऽ डी.एस.पी. भऽ गेलौ। वाह भाइ वाह!”

तैपर जियालाल बजला-

“भाय हमर बेटा कि तोहर बेटा नइ छियौ।”

ई सुनि गेनालाल, जियालालकेँ भरि पाँज कऽ पकैड़ छातीसँ लगा लेलखिन।



शब्द संख्या : 1193

सरकार हम पापी छी

धर्मराजजी महराज अपना कार्यालयमे गम्भीर मुद्रामे बैसल छला। ओसारपर बनल केबिनमे हुनकर स्टेनो चित्रगुप्तजी खाता-बहीक पन्ना उनटा रहल छेलखिन। बगलक कोठरीमे यमराजजी अपना दूत सभकेँ आदेश दऽ रहल छेलखिन।तरखने धर्मराजजीक टेबुलपर राखल फोनक घण्टी टनटनेलैन। धर्मराजजी फोन उठा बजला-

“हेल्लो के?”

ओमहरसँ अवाज आएल-

“हेल्लो धर्मराजजी प्रणाम्! हम इन्द्र बजै छी।”

धर्मराजजीक मुहसँ निकललैन-

“अच्छा, देवराज इन्द्रदेवजी, कहू की हाल-चाल अछि।”

इन्द्रदेवजी जवाब देलखिन-

“एम्हुरका सभ हाल-चाल पूर्ववते अछि, अपना दिसक हाल-चाल कहल जाए।”

धर्मराजजी-

“मृत्युलोकमे एकटा बस दुर्घटना भऽ गेल जइमे पच्चीस गोरे दुर्घटने स्थलपर कालकलवित भऽ गेला हेन आ किछ बेकती गम्भीर रूपसँ घायल छैथ जिनकर इलाज अस्पतालमे भऽ रहल छैन।”

इन्द्रदेवजी आगू पुछलखिन-

“ओइ पच्चीस गोरेमे केते बेकती स्वर्गक भागी हेता?”

तैपर धर्मराजजी कहलकैन-

“ओना, चित्रगुप्तजी बही-खाता उनटा रहला अछि, पान-सात मिनटक बाद ओ अपन रिपोर्ट पेश करता। रिपोर्ट देखलाक उपरान्ते पता चलत जे के स्वर्ग जेता आ के नर्क। मुदा जहाँ धरि हमरा पता अछि, ओइ पच्चीस गोरेमे बकला जेकर असल नाओं मंगल छिऐ स्वर्गक अधिकारी छैथ ओहूमे स्पेशल क्लासक।”

फोनपर गप होइते रहए तखने चित्रगुप्तजी अपन रिपोर्ट धर्मराजजीक टेबुलपर रखलखिन। धर्मराजजी फोनमे आगाँ बजला-

“ठीक छै कनेक कालक बाद फोन करै छी। ई कहि ओ फोन रखि रिपोर्ट पढ़ए लगला। पच्चीस गोरेमे तइस गोरे किछ कम तँ किछ बेसी पाप केने छला। मुदा दू गोरे एहेन छला जइमे बकला नामक बेकती बेसी पूण्य कमेने छला जखन कि धरमलाल नामक बेकतीकेँ बड़ पापी बतौल गेल छेलइ।”

धरमलाल आ बकला दुनूक घर बेलहा गाममे। धरमलालक छठिहारी नाओं विनोदानन्द। विनोदानन्दे नाओंसँ एम.ए; पी.एच-डी. कऽ मिथिला विश्वविद्यालय- दरभंगामे मनोविज्ञान विभागमे पी.जीक प्रोफेसर पदपर कार्यरत भेला। जखन दरभंगामे सपरिवार यानी पत्नी आ दुनू बाल-बच्चाक संग रहए लगला तँ पूजा-पाठकेँ धार्मिक काज बुझि पूजा-पाठपर बेसी जोर देलखिन। सकराँइते-सकराँइत सत्य नारायण भगवानक पूजा। मंगले-मंगल महावीरजीक स्थानमे बुनियाँ चढ़ाएब आ रइबे-रबि भोला बाबाकेँ आक-धथुर आ बेल पत्रसँ पूजा करै छला। तँए संगी-साथी आ महल्लाक लोक हिनका धरमलाल कहह लगलैन। एतबे नहि, सभ साल भादवमे कामौर लऽ कऽ बाबाधाम सेहो जाइ छला। नवरात्रमे दुर्गा पाठ सेहो करै छला।

बकलाक छठिहारी नाओं मंगल। जखन ओ पाँच बर्खक भेला तखने हुनकर पिताजी मंगलकेँ गरदैनमे कण्ठी बान्हि देलखिन। हुनकर पिताजी कबीर पंथी।जखन मंगल पनरह-सोलह बर्खक रहैथ-एक दिन हुनकर पिताजी एकटा आमक डारि जे नमैर कऽ खेतमे आबि गेल रहए आ हर जोतैमे दिक्कत होइ छेलै, काटैले कहलकैन। मंगल नमरलहा डारिपर बैस कऽ डारि काटए लगल। अदहा डारि कटि गेल रहै, तखने एकटा चरबाहा देखलक आ मंगलकेँ कहलक-

"रौ बकला, ई की करै छेँ। डारि लागल अपनो गिरमेँ आ देह-हाथ थौआ भऽ जेतौ।"

तहियेसँ मंगलक छठिहारक नाओं झँपा गेल आ बकला नाओं चालू भऽ गेल।गामक चेतनसँ लऽ कऽ बाल-बोध धरि सभ मंगलकेँ बकला कहह लगल।

बकला पढ़ै-लिखैक नाओंपर सोलह दूना आठ। हुनका लेल काला अक्षर भैंस बरबैर। एकदम भोला-भाला। छह-पाँच किछ ने बुझैत। जमीन जत्थाक नाओंपर बकलाकेँ पनरह धुर घराड़ीए-टा। ओना बकलाकेँ दू कट्ठा चौमासो छेलै आ ओइ चौमासक आड़िपर दूटा आमक गाछ सेहो रहइ जे बकला माए-बापक बेमारीमे बेच कऽ इलाज करौलक। ओही घराड़ीपर दूटा घर बनौने। अही फूसक घरमे दुनू परानियोँ आ दुनू बालो-बच्चा रहैत। पछबरिया घर लगा एकटा एकचारी देने जइमे एकटा गाए आ एकटा बकरी बन्हैत। एकचारीमे बाँसक मचान बनौने जइपर उठबो-बैसबो करैत आ सुतबो करैत। बकला भोला बाबूक चिमनीपर पजेबा उघैत। चिमनी बन्द भेलापर गाम-घरमे मजदूरी कऽ अपन गुजर करैत।

एक दिन बेलहा मिडिल स्कूलपर कवि सम्मेलनक आयोजन भेल छल। बकला कवि सम्मेलनकेँ कबीर सम्मेलन बुझि ओतए गेल।

जखन ओ पहुँचल तखन एकटा कवि अपन कविताक पाठ कऽ रहल छेलखिन। दोहा रहइ-

“सुनू यौ बाबू, सुनू यौ भैया
सुनू लगा कऽ धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ छैथ कियो
तीनू लोकमे आन यौ
माएकेँ बुझब माता पार्वती
पिताकेँ शंकर भगवान यौ
सुति उठि दुनूकेँ करबै
पएर छुबि प्रणाम् यौ
सभसँ पैघ पूजा, माए-बापक सेवा
राखब सदिखन धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नै छैथ कियो
तीनू लोकमे आन यौ।”

बकला मनमे ठानि लेलक जहाँ धरि हएत माए-बापक सेवा करब। हुनका सभकेँ कोनो दिक्कत होमए नहि देबइ। चाहे अपना जे करए पड़ए।

घोघरडीहामे यज्ञ भेल। गामक लोकक संगे बकलो यज्ञ देखए गेल। यज्ञमे वृन्दावनक रास सेहो आएल रहइ। जखन बकला गौंआँ संगे रास देखए गेल तखन ओइ मंचपर एकटा पण्डितजी प्रवचन दऽ रहल छेलखिन। बकला गौंआँक संगे प्रवचन सुनए लगल। पण्डितजी कहैत रहथिन-

“अठारहो पुराणमे व्यासजीक दूइयेटा प्रमुख बात अछि।

दोसरकेँ उपकार करब सभसँ पैघ पूण्यक काज भेल आ दोसरकेँ अहित करब सभसँ पैघ पाप भेल।”

बकला मने-मन कहलक जहाँ धरि हएत दोसराक उपकार करब आ भूलोसँ कहियो अनकर अहित नै करब। गाममे केकरो बेटीक बिआह हौ आकि केकरो माए-बापक सराध हौ, बकला बिनु बजौलो जा कऽ खटैत। बकलाक पिताजीकेँ क्षय रोग आ माएकेँ दमा भऽ गेलइ। बकला दुनू कट्ठा चौमास बेच माए-बाबूकेँ इलाज करौलक। अपना भोजन करैसँ पहिने माए-बाबूकेँ भोजन करबैत छला। बकलेक सेवा-बरदाइसक कारण हुनकर माए-बाप बेमार रहितो 70-72 बर्ख धरि जीवित रहलखिन। माए-बाबूक मुइलाक बाद बकला जहाँ धरि सकल हुनका सबहक भोजो-भात आ क्रियो-कर्म केलक।

बेलहासँ सटले पेता गाममे, बारह-एक बजे दिनमे अगिलग्गी भऽ गेल। चैत मासक समए, पछबा हवा जोरसँ बहैत रहइ। दूइए-तीन घन्टामे पूरा गाम जरि कऽ छौर भऽ गेल।

भोरमे बेलहा गामक लोक सभ जिज्ञासा करए पेता गेल। बकलो गेल। अगिलग्गी काण्ड देख सभ दुखी भऽ गेला। लत्ता-कपड़ा, अन्न किछ ने बँचल छल। धिया-पुता भूखे लहालोट छल। जे धनिकाहा लोक छल हुनकर कर-कुटम आ हित-अपेक्षित लत्ता-कपड़ा आ चाउर-चूरा लऽ कऽ आएल मुदा बीस-पच्चीस घर मुसहरी लोकक सुधि लइबला कियो नहि। बकला धिया-पुताकेँ भूखे कनैत देखलक। ओ गामपर आएल। बेटीक बिआहले जे किछ पाइ ओरियान कऽ रखने रहए। ओइ पाइमे सँ तीन हजार टका निकालि घोघरडीहा बजार जा एक क्विंटल चूरा दस किलो गुड़, नोन आ कँचका मिरचाइ कीनि पेता मुसहरीमे जा बाँटि आएल।

धर्मराजजी रिपोर्ट पढ़िते छला कि यमराजक दूत पच्चीसो मृत

आत्माकेँ नेने पहुँचल। धर्मराजजी यमराजसँ कहलखिन-

“बकला आ धरमलालकेँ छोड़ि बाँकी सभकेँ साधारण नरक भेज दियौ।”

यमराजजी तइसो गोरेकेँ नरक पठा देलखिन। तैबीच धर्मराजजी यमराजसँ पुन: कहलखिन-

“बकलाकेँ स्वर्ग आ धरमलालकेँ रौरब नरक भेजल जाए।”

धर्मराजक बात सुनि धरमलालक आत्मा बाजल-

“अँइ यौ धर्मराजजी, बकला कहियो सत्य नारायणो भगवानक पूजा नै केलक आ ने कोनो तीरथे गेल तेकरा अहाँ स्वर्ग भेजै छिऐ आ हम जे एतेक पूजा-पाठ आ तीरथ केलौं, साले-साल कामौर लऽ कऽ बाबा धाम गेलौं, सालमे पच्चास मुरते बबाजीक भण्डारा कऽ कम्मलो बँटै छेलौं, तेकरा रौरब नरक! ई सरासर अन्याय छी।”

तैपर धर्मराजजी कहलखिन-

“ऐ मूर्ख, तूँ ई बता जे अपना माए-बाप आ दीन-दुखीक की सेवा केलेँ। मोन पाड़ि कऽ बता।”

धरमलालक आत्मा सोचमे पड़ि गेल। ओकरा अपन केलहा बेवहार जे माए-बाप आ दीन-दुखीक संग केने छल सिनेमाक रील जकाँ आँखिक सोझमे आबए लगल।

धरमलाल साढ़े नअ बजे रातिमे पत्नीक संग बजारसँ डेरापर आएल तँ जेठका भायक संग माए-बाबूकेँ देखलक। देखते धरमलाल जेठका भायसँ पुछलक-

“की बात छिऐ। केतए अबै जाइ गेलह हेन।”

भाय कहलकैन-

“बाबूकेँ लकबा मारि देलकैन। तँए इलाजक खातिर अनलयैन

हेन। हमरा लग तँ ढौआ-कौरी कम्मे अछि। दोसर गप हमरा लहेरियासरायक कोनो भाँजे ने बुझल अछि जे कोन डाक्टर कोन बेमारीक इलाज करैत अछि। तोरा तँ सभ भाँज बुझल छह। तँए भोरमे कोनो नीक डाक्टरसँ बाबूजीकेँ देखा दहुन। जाबे दवाइ वीरो चलतै बाबूजीकेँ अपने लग रखिहह आ जखन बाबूजी नीक भऽ जेता तँ गाम पठा दिहक।"

तैपर धरमलाल बाजल-

"की कहलहक, ढौआ-कौरी कम्मे छह। पाँच बिगहा खेत जे छोड़ने छिअ से अही दुआरे ने जे माए-बाबूक सेवा-बरदाइस करिहह। हुनका सभकेँ बेर-बेमारीमे इलाज कराबिहह। आ तोँ कहै छहक जे ढौआ-कौरीक कमी अछि। ऐठाम की हम रूपैआ छापै छिऐ। हमर बेटा-बेटी बाहर पढ़ैए। आइये मुन्नाकेँ पच्चास हजार टका भेजलौं हेन। आ पिंकीकेँ पाइ भेजैले बाँकीए अछि। हमरा एतेक फुरसत अछि जे लहेरियासराय डाक्टर ओतए जाएब। भोरमे एकटा विद्यार्थीकेँ संग कऽ देबह। ओ डाक्टरसँ देखा सभ जाँच करा साँझमे दवाइ लिखा देतह। जँ पाइ बँचतह तँ दवाइयो कीनि देतह। जँ पाइ नै बँचतह तँ गाममे पाइक व्योंत कऽ घोघरडीहामे दवाइ कीनि लिहह। गामेमे पथ-परहेज आ दवाइ चलह दिहक। आब तँ बाबूजीक उमेरो 72-73 बर्ख भऽ गेल हेतैन। कोन जरूरी छेलै, दरभंगा अनबाक। ओतै घोघरडीहामे कोनो डाक्टरसँ देखा दैतहक।"

भीतरसँ धरमलालक पत्नी कहलखिन-

"घोघरडीहामे किएक देखौलखिन। ऐठाम जे धरमशाला बनौने छिऐ से कथीले। दोसर गप जे ऐठाम तँ खजाना छै किने।"

धरमलाल भायसँ पुछलखिन-

"खाना खेने छहक किने। ऐठाम तँ खेनाइयोपर आफत अछि।

गैसपर खेनाइ बनै छै आ गैस सठि गेल छइ। हमसभ होटलसँ खा कऽ एलौं हेन।”

भाय कहलकैन-

“चूरा अनने छी। हम चूरे खा लेब। मुदा माए-बाबूले दू-दूटा रोटी भऽ जइतै तँ ठीक होइतै।”

धरमलाल बाजल-

“कहलिअ ने गैस खतम भऽ गेल अछि। रोटी केना बनतै। माइयो-बाबूजीकेँ चुरे खुआ दहक।”

भोरमे धरमलाल एकटा विद्यार्थीकेँ संग लगा माए-बाबूजी आ भाएकेँ लहेरियासराय डाक्टर ओतए भेजैत भायकेँ कहलखिन-

“ऐ विद्यार्थीकेँ चाह-नास्ता, खेनाइ आ टेम्पू भाड़ा-ले एक साए टाका दऽ दिहक। साँझमे दवाइ कीनि ओमहरेसँ दरभंगा टीशन जा ट्रेन पकैड़ लिहह। ऐठाम कथी-ले एबह।”

पाइयक अभावमे धरमलालक पिताकेँ ठीकसँ इलाज नै भऽ सकलैन। ओ आर बेसी बेमार भऽ गेला। दिनो-दिन स्थिति खरापे होइत गेलैन। जेठका भाय, प्रो. धरमलालकेँ समाद-पर-समाद दैत रहलैन मुदा प्रो. साहैब माए-बाबूक सुधि लेबए कहियो गाम नै एला। जखन बाबूजी मरि गेलखिन आ हिनका खबर भेलैन तँ अंत्येष्टी करए गाम एला। अपन नामक बास्ते रसगुल्ला–लालमोहनक भोज जरूर केलैन। कहियो माए-बाबूकेँ एकटा टका वा एक बीत कपड़ा नै देलखिन।

धरमलालकेँ आगू मन पड़लैन-

दुर्गा पूजाक छुट्टीमे सासुर जाइ छेलौं तँ सासु-ससुर-ले पाँचो टूक कपड़ा लऽ गेनाइ नै बिसरै छेलौं। जखन कि ससुर उच्च

विद्यालयसँ सेवा निवृत शिक्षक आ दुनू बेटा बैंक मैनेजर छेलैन।

एक दिन प्रो. धरमलालक डेरापर एकटा भिखमंगा जेकर एकटा पएर कटि गेल रहइ, आएल। ओ प्रोफेसर साहैबसँ भोजन करए-लेल पाँचटा टका मंगलक, मुदा प्रोफेसर साहैब ओइ भिखमंगाकेँ धक्का मारि कऽ भगा देलक। प्रो.धरमलालकेँ अपना-आपपर ग्लानि होमए लगल। ओ धर्मराजजीक आगाँ हाथ जोड़ि कहलक-

“सरकार हम वास्तवमे पापी छी।”



शब्द संख्या : 1570

शिक्षाक अन्तिम उदेस

रामनगर डिग्री महाविद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहक आयोजन भेल। तीन दिवसीय कार्यक्रम रहए। पहिल दिन दू बजे दिनमे कार्यक्रमक उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री एवम् कुलपति संयुक्त रूपसँ केलैन। उद्घाटनक पछाइत पहिल सत्रमे कौलेजक इतिहासक संग कौलेजमे की कमी आ की बेसी, ऐपर विद्वान-वक्तालोकैन अपन-अपन विचार रखलैन। ई कार्यक्रम साँझक पाँच बजे धरि चलल।

दोसर सत्रमे साँझक छह बजेसँ कौलेजक छात्र-छात्रा नृत्य, प्रहसन आ गीतनाद प्रस्तुत केलैन।

दोसर दिन, दिनक एगारह बजे छात्र-छात्राक बीच भाषण प्रतियोगिताक आयोजन छल। जेकर विषय छेलै- 'लोक किए पढ़ै-लिखैए, शिक्षाक अन्तिम उदेस की अछि?'

प्रतियोगिताक जूरीमे कौलेजक प्राचार्य महोदय, शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्ष छला।

कार्यक्रममे कौलेजक शिक्षकगण, कर्मचारीगण आ पत्रकार, कौलेजक छात्र-छात्रा आ स्थानीय बुद्धिजीवी लोकैन सेहो उपस्थित छला।

अध्यक्षक आदेशसँ प्रतियोगिता प्रारम्भ कएल गेल। पहिल वक्ताक रूपमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ैत छात्र आलोक ठाढ़ भेला। ओ अपना भाषणमे बजला-

“पूज्यनीय अध्यक्ष महोदय, पूज्यपाद गुरुजन, उपस्थित वुजुर्ग आ वुद्धिजीवी लोकैन, छात्र-छात्रा लोकैन- आजुक समैमे पढ़ाइ-लिखाइक बड़ महत अछि। जँ ई कहल जाए जे शिक्षा रोशनी छी तँ कोनो अनुचित नहि हएत। बिनु पढ़ल-लिखल मनुख आँखि रहितो आन्हर छैथ। शिक्षाक मूल उदेस ज्ञानी बनब छी आ ज्ञानी बनि कऽ अपन चरित्र निर्माण करब थिक। ऐ सन्दर्भमे पूज्य बापू गाँधीजी कहने छैथ- शिक्षाक अन्तिम उदेस चरित्र निर्माण छी। चरित्र निर्माणक पश्चात राष्ट्र निर्माण करब सेहो छी और सभसँ पैघ बात ई जे चरित्र निर्माणक संग मानवक सेवा शिक्षित मनुखक सभसँ पैघ कतर्व्य अछि।”

ई कहि आलोक बैस जाइ छैथ। जोरदार थोपड़ी बजा श्रोता लोकैन हुनकर भाषणक समर्थन केलखिन।

दोसर वक्ताक रूपमे अंजली ठाढ़ होइ छैथ। अंजली बी.ए. द्वितीय वर्षक छात्रा छैथ, मैक पकैड़ सम्बोधनक पश्चात अंजली बजै छैथ-

“अखन जे पूर्व वक्ता आदरणीय आलोक भाय बजला जे शिक्षाक मूल उदेस चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण और मानवक सेवा थिक, हम हुनका विचारसँ बिल्कुल सहमत नइ छी।”

श्रोतामे वुद्धिजीवी लोकैनक कान ठाढ़ भऽ जाइ छैन। अंजली आगाँ बजै छैथ-

“हम तँ कहब शिक्षाक अन्तिक उदेस मात्र ढौआ कमेनाइ छी। देखियौ, लोक पढ़ि-लिख कऽ पैघ-सँ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर, कलक्टर, एस.पी; बी.डी.ओ; प्रोफेसर, मास्टर नहि जानि की की बनै छैथ। मुदा किनकोमे भी चरित्रक निर्माण कहाँ होइ छैन। घूस लऽ कऽ अकूत सम्पैत जमा करए लगै छथिन। डाक्टर सभ कमीशनक लेल

अनावश्यक जाँच, कमीशनबला दवाइ आ बिनु जरूरतक ऑपरेशन करै छैथ। प्रोफेसर सभकेँ डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहा भेटै छैन, मुदा की ओ सभ निष्ठा पूर्वक अपन कर्तव्यक निर्वहन करै छैथ? डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहाक बादो हुनका सभकेँ सन्तोख कहाँ छैन। ट्यूशनक पाछाँ बेहाल रहै छैथ। हम तँ कहब जे विद्वान से बेइमान आ जे डाक्टरसे डाकू!"

श्रोता दिससँ जोरदार थोपड़ी बजैत अछि।

अंजली आगू बजै छैथ-

"आलोक भाय बाजल छला- राष्ट्रक निर्माण...। यौ देखबे करै छिऐ जे पैघ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर ढौआक लेल अपन देश छोड़ि विदेश जाइ छैथ आ अपन गाम-घर, देश छोड़ि विदेशमे बसि जाइ छैथ। एकटा बात आलोक भाय आरो बाजल छला जे मानवक सेवा। यौ जे अपन बुढ़ माए-बापक सेवा नहि कऽ रहल छैथ ओ आन मनुखक सेवा केना करता। तखन मानवक सेवा केना भेल आ मानवताक की भेल? हँ, पत्नीभक्त भऽ सकैत छैथ। हमर अनुभव अछि जे विद्वान लोकैन माए-बापसँ बेसी मोजर पत्नीकेँ दइ छथिन।"

ई कहि अंजली बसि जाइ छैथ। हिनका भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहैत अछि।

तेसर वक्ताक रूपमे विवेक ठाढ़ होइत बजला-

"हम पहिलुका दुनू वक्ताक विचारसँ बिल्कुल असहमत छी।"

श्रोताक कान एकबेर फेर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

विवेक आगाँ बजै छैथ-

"शिक्षाक उदेस चौवनिया नेतागिरी केनाइ थिक। चौवनियाँ नेतागिरी कऽ ब्लौक, थानामे दलाली आ गाम-घरमे झगड़ा लगा अपन

उल्लू सोझ करब आइ-काल्हिक पढ़ल-लिखल लोकक मुख्य काज रहि गेल हेन। जेतए तक पाइ कमेबाक बात अछि तँ ओइ लेल शिक्षित भेनाइ जरूरी नहि छइ। हमरा ओतए एकटा डीलर अछि, हँ-हँ वएह डीलर जे जनताक चाउर-गहुम आ मटिया तेल दइ छै, मोशकिलसँ दसखत करए अबै छै, मुदा ढौआ कमाइमे बड़का-बड़का इंजीनियर-डाक्टरक कान काटै छइ। पाँच बर्ख पहिनेसँ बोलेरो गाड़ीपर चढ़ैत अछि। मनुखोक सेवा करिते अछि। केकरो बेटीक बिआहमे पान-दस लीटर मटिया तेल दऽ दइ छइ। पाँच-दस गोरेकेँ चौक-चौराहापर चाहो-पान करा दइते छइ। फगुआमे किछ गोरेकेँ दारूओ पियाइए दइ छइ।"

ई कहि विवेक बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर थोपड़ी बजैत अछि।

चारिम वक्ताक रूपमे अलका माइक पकड़ै छैथ। ओ अपना भाषणमे कहै छथिन-

"हम पहिलुका तीनू वक्ताक विचारसँ कनिक्को सहमत नै छी। यौ आजुक समैमे शिक्षाक अन्तिम उदेस बिआहमे बेसी-सँ-बेसी दहेज लेब थिक।"

वुद्धिजीवी लोकैन एक-दोसरक मुँह दिस देखए लगला। अलका आगू बजै छैथ-

"देखियौ, डाक्टरक बिआहमे केतेक दहेज भेटै छै, फेर इंजीनियरकेँ देखियौ, कलक्टर-एस.पी. आ बी.डी.ओ; सी.ओ.क तँ बाते किछु और छै जे लड़िका कौलेजमे पहुँच जाइत अछि बुझियो हुनकर माए-बापक लौटरी निकैल जाइत अछि। ओइ लड़काक बिआहमे दस-बीस लाख टका नगद एकटा मोटर साइकिल, दू चारि भरि सोन दहेजक रूपमे भेटब आम बात भऽ गेल अछि। तेतबे नहि,

डाक्टर-इंजीनियरकेँ बिना चारि चक्का गाड़ी आ कमतीमे बीस-पच्चीस लाख टका नगदसँ बिआहे ने होइत अछि। अहाँ कहबै ई तँ लड़काक बात भेल, लड़कीकेँ सुनू- पढ़ल-लिखल लड़कीक मांग बेसी छइ। जे मिडिलो पास लड़का छै ओहो अपन कनियाँ कमतीमे इन्टर पास तकै छइ। किए तँ नै बेसी तँ कम-सँ-कम इन्टर पास लड़की मास्टर तँ बनियेँ जाएत। पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहमे दहेजोमे किछु छूट भेटै छइ। यौ हम अपने परिवारक गप कहै छी। हम दू भाँइ आ दू बहिन छी। जेठ दुनू भैया छैथ। बड़का भैयासँ छोटका भैया एक बर्खक छोट छैथ। बड़का भैया छठा तक पढ़ि खेती गृहस्तीक काज देखए लगला। छोटका भैया कौलेजमे पढ़ै रहथिन। बड़का भैयापर जे बरतुहार सभ आबथिन आ हुनका सभकेँ जखन पता चलैन जे लड़का छठे धरि पढ़ल छै तँ ओ सभ जे आपस गाम जाथि से फेर घुमि कऽ नै आबैथ। मुदा छोटका भैयाक बिआहक लेल बरतुहारक लाइन लागल रहए। बड़का भैयाक बिआहमे बाबूजीकेँ अपना तरफसँ खर्च करए पड़ल रहैन। तँए हम कहै छी जे शिक्षाक उदेस दहेज लेब छी आर किछु नहि।”

ई कहि ओ बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहल।

भाषण प्रतियोगिताक प्रथम पुरस्कार अलकाकेँ भेटलैन। हम सोचै रही जे प्रथम पुरस्कार आलोक नहि तँ अंजलीकेँ भेटतैन। मुदा से नहि भेल। हम छगुन्तामे रही। सोचैत रही प्राचार्य महोदय भेटता तँ पुछबैन। संयोग नीक बैसल। एकटा कथा गोष्ठीमे प्राचार्य महोदय भेटला। हम पुछि देलिऐन-

“भाषण प्रतियोगितामे श्रीमान्, कोन आधारपर अलकाकेँ प्रथम पुरस्कार देलिऐन?”

प्राचार्य महोदय गम्भीर होइत बजला-

“शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्षक विचार प्रथम पुरस्कार आलोकेकेँ देबाक रहैन, मुदा हम अड़ि गेलिऐ आ हमरा आगाँ हुनका दुनू गोरेकेँ किछु ने चललैन।”

हम पुछलयैन-

“अपने कोन बिन्दुपर अड़ि गेलिऐ?”

तैपर ओ जवाब देलैन-

“हमरा अपन बेटाक बिआह मोन पड़ि गेल रहए, जखन हमरा बेटाक बिआहक लेल बरतुहार एला तँ हम स्पष्ट कहि देलिऐन- हमरा बेटाक इंजीनियर बनेबामे बारह लाख टाका खर्च अछि। तँए ओकरा बिआहमे कमतीमे पच्चीस लाख टका लेब। लड़कीबला सहर्ष पच्चीस लाख टका दइले तैयार भऽ गेल छला।”



शब्द संख्या : 1085

हमर लॉटरी निकलल

झंझारपुर रेलबे टीशनक बगलमे एकटा दवाइ दोकान अछि, नाओं छिऐ- नवीन फार्मेसी। ओइ दोकानक ई विशेषता छै जे निर्मलीक डाक्टरक पुरजा हुअए वा दरभंगाक डाक्टरक, फुलपरासक डाक्टरक पुरजा हुअए वा तमुरियाक डाक्टरक, सभ दवाइ भेट जाएत। तँए दोकानमे खरीदवालक भीड़ हरिदम लगले रहैत अछि।

हमरो पत्नीक इलाज चलि रहल अछि। डाक्टर साहैब कहने रहथिन जे छह मास धरि दवाइ खाए पड़तैन। पाँच मास तँ बीति गेल आब छठम मासक दवाइ चलतैन। तँए हमहूँ दवाइ कीनैले झंझारपुर विदा भेलौं। चारिये बजे भोरबामे उठि कऽ तैयार भऽ भपटियाही स्कूल लग मुख्यमंत्रीबला सड़कपर एलौं। ओइठामसँ टेम्पू पकैड़ परसा हाल्टपर पहुँचलौं। परसा हाल्टपर टिकट कटा छह बजिया ट्रेनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

बगलमे बैसल एक गोरे बाजल- “ट्रेन आइ निर्मली सबेर गेल अछि तँए छह बजे धरि ऐठाम पहुँच जाएत।”

मोबाइलमे समए देखलौं, पौने छह बजैत रहए। ठीक छह बजे ट्रेन परसा हाल्टपर पहुँचल। हम एकटा कोठरीमे चढ़ि गेलौं। सबेर रहितो ट्रेनमे भीड़ छल।

ट्रेन घोघरडीहा टीशन पहुँच कऽ रूकल। एकटा महिला जे सलवार-समीज पहिरने रहए, हमरे कोठरीमे माने जइ कोठरीमे हम बैसल रही, ओहीमे चढ़ल। घोघरडीहा टीशनपर ट्रेनमे भीड़ बढ़ि गेल

छल। ओ महिला जैठाम हम बैसल रही, ओहीठाम आबि चारू दिस हिया कऽ तकलक। केतौ खाली जगह नै देख हमरासँ कहलक-

"बाबा, कने हमरो बैसए दिअ।"

ओइ महिलाक बाबा कहब सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेलौं। आखिर हमरा ई औरत बाबा किए कहलक। भाइजी कहैत तँ ठीक छेलइ। कक्को कहैत तँ ओतेक सोच नहि होइतए। बाबा किए कहलक..!

हम हिया कऽ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि ओइ महिलाकेँ देखए लगलौं। तैबीच ओ फेर टोकलक-

"एना की निंगहारि-निंगहारि देखै छी। कहियो मौगी नै देखने छिऐ की? कनेक घुसकु ने।"

आब तँ भेल औरो पहपैट। हमरा भेल जेना कोनो चीज चोरि करैत पकड़ा गेलौं। हम कनी खिसैक गेलौं। ओ महिला हमरा देहमे सटि कऽ बैस गेली। दोसर कियो रहैत तँ ओइ महिलाक सटब नीके लगिते। धरमागती पुछू तँ हमरो नीक लगैत मुदा ओ औरत जे बाबा कहने छेली तही सोचमे डुमल रही। सोची जे एतेक बुढ़ भऽ गेलौं जे ई महिला हमरा बाबा कहलक..?

गाड़ी सीटी देलक आ ससरए लगल। एकटा बीस-बाइस बर्खक लड़की जेकरा कोरामे एकटा लकधक साल भरिक बच्चा रहै, ओ खिड़की लग प्लेटफार्मपर ठाढ़ छेली, ओइ औरतसँ बजली-

"मम्मी ठीकसँ जइहें। गाम पहुँचते फोन करिहें।"

फेर कोरैला बच्चासँ कहली-

"बौआ, नानीकेँ टा टा कऽ दियौ।"

ओ महिला खिड़कीसँ हाथ निकालि हिलबए लगली।

हमर मन खसल रहए। हम सोचैत रही, आखिर ई महिला हमरा बाबा किए कहलक! जखन कि ओकरो नाति-नातिन भेल छै जे अखने देखलौं हेन।

हम ओइ महिला दिस हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे ओकर केश रंगल छइ। सलवार-समीज तेतेक कसल रहै जे, शरीरक अंग, जे परदामे रहबाक चाही ओ अदहासँ बेसी वेपर्दा भऽ जाइ जखन ओ कनेको निहुरए। शरीरक रंग एकदम गोर। दोहारा हार-काठ। शरीर ने बेसी मोटे आ ने बेसी पातरे। एकदम छरहर। आँखिमे काजर लगौने, कानमे आधुनिक डिजाइनक बाली पहिरने। एन-मेन सोनाक लगइ। एकटा हाथमे गोल्डेन चेनबला टाटा क्वार्ज घड़ी। दोसर हाथमे कीमती चूरी। ठोरमे गाढ़ लाल रंगक लिपिस्टिक, नाकमे पाथर जड़ल छक, गरदैनमे मोतीक माला। आँगुर सभमे पाथर जड़ल औंठी। आँखिमे गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा। कन्हामे पर्स लटकल। हाथमे मेहदी लगौने। जखन ओकरा पएर दिस तकलौं तँ तकिते रहि गेलौं। दुनू पैरमे आरत लगौने जे ओकर पैरक सुन्दरतामे चारिचान लगबैत। हमरा कोनो कविक दोहा मोन पड़ि गेल-

"न पैरों में महावर रचाओ गोरी,

संगमरमर का कलेजा पिघल जाएगा।"

हम अन्दाज लगेलौं, ऐ महिलाक उमेर कमतीमे 40-42 बर्खसँ कम नै हेतइ। मुदा तेना कऽ मेन्टन केने अछि जे तीस-बत्तीस बर्खक लगैत अछि। की कहू, मन घोर-घोर भऽ गेल रहए। किछु सोहेबे ने करए। ताबत ऐगला टीशनपर पहुँच ट्रेन रूकल। हम उतैर गेलौं। पानक दोकानपर जा ऐनामे अपन चेहरा निंगहारि कऽ देखलौं तँ बुझाएल जे अदहासँ बेसी केश पाकि कऽ उज्जर भऽ गेल अछि। सोचलौं, सुआइत ई महिला हमरा बाबा कहलक। फेर सोचलौं,

ओकरो केश तँ रंगले रहइ। फेर ऐनामे देखलौं तँ अपन गाल पचकल बुझाएल जखन कि ओइ महिलाक गाल पुआ जकाँ फूलल छेलइ। तहूमे सेब जकाँ लाल। फेर ऐनामे देखलौं तँ आँखि एक हाथ तरमे बुझाएल। पानक दोकानदार टोकलक-

“पान खाएब की? केहेन पान खाइ छी, मीठा पत्ता आकि... ।”

बिच्चेमे हम कहलिऐ-

“नै यौ बाबू, पान नइ खाएब।”

दोकानदार पुछलक-

“एना किए कननमुँह जकाँ बजै छी? की कियो रूपैआ-तुपैआ नहि तँ निकालि लेलक हेँ?”

“से तँ नै भेल अछि।”

ई कहैत हम ससैर कऽ मोसाफिर खानामे आबि एकटा ब्रैंचपर बैस गेलौं। मन हुअए बोम फारि कऽ कानए लागी। हमरा कौलेजक समैक गप मन पड़ि गेल। की जिनगी छल। फिल्मी हीरोक स्टाइलमे रहै छेलौं। अमिताभ बच्चनक स्टाइलमे बाबरी राखी। अन्दर सुटिंग करि पेन्ट-सर्ट पहिरैत रही। आँखिमे करिक्का चश्मा रहैत छल। कौलेजक लड़की सभ हमरा राजेश खन्ना कहए। एक दिनक घटना मोन पड़ि गेल। एकटा लड़की जेकर नाओं अलका रहइ, ओ एकटा कागज हमरा कॉपीमे रखि देलक। हम कॉपी खोललौं तँ ओ कागज देखलिऐ। ओइमे लिखल रहै- आइ लव यू आ निच्चाँमे अलकाक दसखत रहइ। हम बुझू अकासमे उड़ए लगल छेलौं, किएक तँ अलकाकेँ कौलेजक छौड़ा सभ कौलेज क्वीन कहैत छेलइ। ओ बड़ सुन्दर छेली। दोसर दिनसँ अलका कौलेज नइ अबैत रहए। पता चलल जे अलका बेमार पड़ि गेल अछि। बादमे पता चलल ओकर बाबूजी जे पीएनबी बैंकमे मैनेजरक पदपर काज करै छला, हुनकर

प्रमोशन क्षेत्रीय प्रवंधकक पदपर दरभंगामे भऽ गेलैन हेन। तँए ओ सपरिवार दरभंगा चलि गेला। अलका आब दरभंगेमे पढ़त। एक मास तक हम अलकाक गममे गमगीन रहलौं।

ताबेतमे ट्रेनक सीटी सुनलौं। मुसाफिरखानासँ बाहर एलौं, गाड़ी टीशनपर पहुँच चुकल छल। गाड़ीमे चढ़ि गेलौं।

परसा हाल्टपर ट्रेनसँ उतैर टेम्पू पकैड़ गाम आबि गेलौं। धोती-कुरता पहिरनहि ओछाइनपर जा पड़ि रहलौं। पत्नी चूल्हि लग छेली, ओ देखली तँ लगमे आबि पुछली-

“मर! की भेल हैं जे एना बिना कपड़े बदलने पड़ि रहलौं। मन-तन ठीक अछि किने?”

हम किछु नहि बजलौं। हमरा हुअए जे बोम फारि कऽ कानए लागी।

पत्नी फेर पुछली-

“दवाइ आनलिऐ की?”

हम तैयो किछु ने बजलौं।

पत्नी सोचए लगली आन दिन जे झंझारपुर दवाइ आनए जाइ छला तँ अढ़ाइ-तीन बजे धरि घुमि कऽ गाम अबै छला। आइ साढ़े दसे बजे आपस आबि गेला। भरिसक पाकेटमार रूपैए नहि तँ निकालि लेलकैन। बजली-

“रूपैआ ने तँ पॉकेटमारी भऽ गेल?”

हम फेरो किछ ने बजलौं।

हमर पत्नी सोचली जे आखिर ई बजैत किए ने छथिन। ओ हमरा माथपर हाथ दैत पुछलैन-

“माथ ने तँ दुखाइत अछि?”

हम किछु ने बजलौं। हमर पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ बड़ प्यारसँ बजली-

“अहाँक हमर सप्पत छी, कहू की भेल। एना किए उदास भऽ कऽ पड़ल छी।”

हम कनैत जकाँ बजलौं-

“की हम बुढ़ भऽ गेलिऐ।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“किए, से किएक पुछै छी। के अहाँकेँ बुढ़ कहैत अछि। हम तँ आइ धरि नै कहलौं हेन।”

हम कहलिऐ-

“आइ ट्रेनमे एकटा मौगी हमरा बाबा कहलक।”

हम ओइ औरतक पूरा हुलिया अपना पत्नीकेँ बता देलिऐ।

हमर पत्नी ठहक्का लगा कऽ हँसल। हँसैत बाजल-

“तँ ई बात छिऐ!”

हम कहलिऐ-

“अहाँ दिल खोलि कऽ हँसै छी। हमरा मन होइए जे भोकारि पाड़ि कऽ कानए लगी।”

पत्नी बजली-

“ऐमे केकर दोख। केतेक दिन कहलों जे समराट बनि कऽ रहू। मुदा अहाँ छी जे खादीक धोती, झोलंगाबला कुरता पहिर कन्हापर गमछा लऽ केतौ विदा भऽ जाइ छी। ने दाढ़ी कटबै दी आ ने केशे सीटै छी। तँ बाबा नै कहत तँ बौआ कहत।”

हम कहलिऐ-

"सम्राट जे कहै छिऐ से कोनो हम राजा महराजाक बेटा छी जे सम्राट बनि कऽ रहब।"

तैपर हमर बेटी जे टीशन पढ़ि कऽ आएले छल, बाजल-

"पापा, मम्मी सम्राट नहि स्मार्ट कहैत अछि।"

तैपर हमर पत्नी बजली-

"हँ, हँ की कहलीही, बुच्ची असमाट?"

हमर बेटी जे आइ.एस-सी.मे पढ़ैत अछि बाजल-

"असमाट नै स्मार्ट।"

हम पत्नीकेँ कहलिऐ-

"अहूँ तँ कहियो काल कहैत रहै छी जे, आब अहाँकेँ के पुछत?"

पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ बजली-

"उ तँ प्यारसँ मजाकमे कहै छी।"

तैपर हम बजलिऐ-

"के कहलक, मजाकमे कहै छी आकि... ।"

बिच्चेमे हमर पत्नी हमर बात कटैत बजली-

"अहाँक देह छुबि कऽ कहै छी जे ई गप हम मजाकमे कहै छेलौं। आब मजाकोमे नै कहब। उठू, मुँह-हाथ धोउ ताबत हम चाह बना कऽ नेने अबै छी।"

बजलौं- "अखन हमरा चाह-पान किछ ने सोहाइत अछि।"

तैपर पत्नी तोष दैत बजली-

"अहाँ एक्को मिसिया मनमे टेंशन नै लिअ। एक्के मासमे अहाँकेँ गोविन्दा जकाँ हीरो बना देब। फेर देखबै जे सोलह सालक लड़की अहाँसँ केहेन बेवहार करैत अछि।"

बिहाने भने हमर पत्नी हमरा संग केने निर्मली एली। पहिने डाक्टर रमेश बाबूक क्लीनिकपर अनली। डाक्टर साहैबकेँ हमरा देखबैत हमर पत्नी बजली-

“डाक्टर साहैब, हिनकर तेना कऽ इलाज करि दियौन जे गाल पुआ जकाँ फुलि जाइन।”

तैपर डाक्टर साहैब कहलखिन-

“गाल फुलबेटा नहि करतैन बल्कि सेब जकाँ लालो भऽ जेतैन मुदा दवाइक संग खानो-पान नीक हेबाक चाही।”

पत्नी बजली-

“डाक्टर साहैब, अहाँ जे-जे कहबै से-से खुएबैन मुदा गाल फुलबाक चाही।”

डाक्टर साहैब किछु केप्सूल आ तीन फाइल टॉनिक लिख, खेनाइमे की-की हेबाक चाही से सभ हमरा पत्नीकेँ समझा देलखिन।

डाक्टर साहैबक क्लिनीकसँ निकैल हम सभ बजार गेलौं। बजारमे एक किलो मनक्का, पाँच किलो सेब, पाँच किलो बदाम कीनि पत्नी झोरामे रखली। तेकर बाद क्लॉथ इंपोरियममे जा विमल सूटिंग-सर्टिंगक दू-दूटा पैन्ट-शर्टक कपड़ा सेहो किनलैन। कपड़ा लऽ कऽ हम सभ मॉडर्न टेलरमे जा कऽ नाप दऽ कपड़ा सिबए लेल देलिऐ। पत्नी टेलर मास्टरकेँ कहलकैन-

“फिटिंग एकदम ठीक-ठाक हेबाक चाही।”

तैपर टेलर मास्टर जवाब देलखिन-

“मैडम, अहाँ एक्को रत्ती चिन्ता जुनि करू, कपड़ा पहिरलाक बाद सर बिल्कुल गोविन्दा जकाँ लगथिन।”

दर्जीकेँ कपड़ा देलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ हनुमान

रेडीमेडपर एली आ सेल्समेनकेँ हमरा देखबैत कहलखिन-

“हिनका लेल दूटा नीक जीन्स पैन्ट आ दूटा टी-शर्ट निकालू।”

सेल्समेन पुछलकैन-

“की रेन्जमे निकाली मैडम?”

तैपर पत्नी बजली-

“रेंजक चिन्ता नै करू। स्टेनडरसँ स्टेनडर निकालू।”

सेल्समेन पच्चीस-तीस पीस जीन्स पैन्ट आ पच्चीस-तीस पीस टी-शर्ट हमरा सबहक आगाँमे पसारि देलक। ओइमे सँ एकटा ग्रे कलरक आ एकटा ब्लू कलरक जीन्स पैन्ट पसिन केलौं। तेनाहिये एकटा लाल रंगक टी-शर्ट आ दोसर ब्लू रंगपर उज्जर धारीवला टी-शर्ट पसिन केलौं। चारि हजार टकाक बिल बनल। दोकानदारकेँ बिल भुतान कऽ चश्माक दोकानपर गेलौं। ऐठाम गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा खरीदली। चश्मा खरीदलाक बाद जूता दोकानपर जा एक जोड़ा खादिम कम्पनीक लेदरबला फूल जूता आ एक जोड़ा सैन्डिल खरीदली।

ई सभ खरीदलाक बाद पत्नी पुछली-

“आर किछ बाँकी तँ नइ रहल ने।”

हम कहलिऐ-

“दूटा रूमाल, दूटा कोठारी गंजी आ एकटा टाई।”

पत्नी बजली-

“ठीके, चलू पंसारी रेडीमेड सेन्टरमे ई सभ लऽ लइ छी।”

गंजी, टाइ आ रूमाल कीनलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ मुम्बइ सैलूनमे गेली। ओइठाम पत्नी हजामसँ कहली-

“हिनका फिल्मी असटाइलमे बाबरी छाँटि दियौन आ केशो रंगि

दियौन।"

जाबे हजाम हमर केश बनौलक ताबेमे पत्नी एकटा नीक रेजर, एक पैकेट टोपाज ब्लेड, ब्रश बा बढ़ियाँ क्रीम आ फेयर इन लवली क्रीम सेहो कीनि कऽ आनली।

सभ समान कीनलाक बाद हम सभ मुन्ना होटलमे मासु-भात खेलौं आ कनीकाल मोसाफिर खानामे अराम कऽ चारि बजेमे टेम्पू पकैड़ आपस गाम आबि गेलौं।

दोसर दिनसँ भोरमे अढ़ाइ साए ग्राम सेबक फलाहार करी। फल खेलाक एक घन्टाक पछाइत गुड़क संग साए ग्राम औंकुरल बदाम खाइ। फेर एक गिलास दूध पीबी। खानामे पालकक साग सेहो खाइ। रातिमे सुतैसँ पहिने मनक्का देल एक गिलास दूध पीबी। आ तेकर बाद डाक्टर साहैबक लिखल केप्सूल आ टॉनिकक सेहो सेवन करी। पनरह दिनपर केश रंगी आ तेसरा दिनपर दाढ़ी बनाबी। जहिया केतौ जेबाक हुअए तँ जाइसँ पहिने दाढ़ी बना कऽ फेयर इन लवली क्रीम लगौनाइ नहि बिसरी।

एक मास बीतैत-बीतै हमर गाल पुआ जकाँ तँ नहि फूलल मुदा सटकलो नहियेँ रहल। चिकनाए गेल। चेहरापर रोहानी आबि गेल।

संयोगसँ पितियौत सारक बिआहमे सासुर जेबाक रहए। गेलौं। बरियाती जाइ काल जखन ब्लू जीन्स पैन्ट आ ललका टी-शर्ट पहिर गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा लगा विदा भेलौं तँ हमर सारि जे एम.ए.मे पढ़ै छैथ, बजली-

"पाहुन तँ गोविन्दा जकाँ लगै छथिन।"

तैपर हमर पत्नी बजली-

"गइ छौरी, एना नहि हमरा दुल्हाकेँ आँखि लगाबही।"

सारिक बात सुनि बुझू हमर मन तँ अकासमे उड़ए लगल। बिआहसँ पहिने जखन बरमाला भऽ रहल छल तँ दुल्हिनक संग चारि-पाँचटा लड़की सभ बरमालाबला मंचपर ठाढ़ छेली। ओइ चारि-पाँचटा लड़कीमे एकटा सत्तरह-अठारह बर्खक बड़ सुन्नैर जे एन-मेन करीना कपुर जकाँ लगै छेली ओ एकटकसँ हमरे दिस निहारि रहल छेली। जखन हमर आँखि हुनकर आँखिसँ मिलल तँ ओ हँसए लगली।

बरमालाक बाद जखन ओ दुल्हिनक संग जाए लगली तँ हमरा लग आबि बजली-

"हेल्लो, फेर भेँट हएब।"

ई कहि ओ आगाँ बढ़ि गेली।

हमरा भेल जेना लाख टकाक लॉटरी भेट गेल।



शब्द संख्या : 1995

टेट्रा हीरो

समय दिनक एगारह बजि कऽ पनरह मिनट होइत रहइ। स्थान रामनगर डिग्री कौलेज। कौलेजमे छात्र-छात्रा लोकैन पहुँच रहल छल। अलका आ अंजली पहुँच चुकल छेली।हुनका सबहक प्रथम घण्टीमे हिन्दीक क्लास छेलैन, मुदा हिन्दीक प्रो. अनील बाबू छुट्टीपर छला। तँए क्लास स्थगित छल।

अंजली अलकासँ कहलक-

“चल कॉमन रूममे चलि कऽ पेपर-पत्रिका देखैत छी।”

दुनू गोरे कॉमन रूम पहुँच पेपर-पत्रिका पढ़ए लगली। कनीकालक बाद एकटा बुलेट मोटर साइकिलक अवाज सुनाइ पड़ल। अंजली बजली-

“आबि गेल टेट्रा हीरो!”

अलका पुछलक-

“के टेट्रा हीरो! ई टेट्रा हीरो के छी दीदी?”

अंजली जवाब दैत बजली-

“देखही ने कौलेज पहुँचते सीधा कॉमन रूमक गेटपर पहुँचत। विक्रम नाओं छिऐ।”

दुनू छात्रा गप करिते छेली आकि एकटा बुलेट मोटर साइकिल ठीक कॉमन रूमक गेटक आगूमे आबि कऽ रूकल।

एकटा लड़का जीन्स पैन्ट आ भेस्ट पहिरने, कारी चश्मा लगौने,

कानमे इअर-फोन लगौने मोटर साइकिलसँ उतरल। गाड़ी खड़ा कऽ आँखिसँ चश्मा हटा माथपर लगौलक आ जेबीसँ सिगरेटक पाइकेट निकालि ठोरसँ लगा लाइटरसँ जरा पीबए लगल। सिगरेट पीब कऽ धुइयाँक छल्ला बना मुहसँ निकालए लगल। सिगरेट पीबैत कॉमन रूमक गेटपर पहुँच भीतर तकलक। ओकर नजैर अलकापर जा कऽ अँटैक गेल। ओ अलकाकेँ तजबीज कऽ देखए लगल।

अलका ओकरालेल अजनबी लड़की छल। ओ सोचए लगल जे ऐ लड़कीकेँ तँ ऐ कौलेजमे कहियो नइ देखने रहिऐ। ई लड़की तँ गजब सुन्नैर आ हसीन अछि। ऐ कौलेजमे जेतेक भी लड़की पढ़ैत अछि ओइ सभमे सभसँ सुन्नैर ई लड़की अछि। दऽ वेस्ट गर्ल ऑफ दीस कालेज कहल जाए तँ कोनो गलत नै हएत। फेर सोचलक नै एकरा कौलेजक क्वीन कहल जाए। मुदा ई छी के? कोन इयरक छात्रा छी? की नाओं छिऐ एकर? सोचलक अंजलीसँ पुछै छिऐ। ओकरासँ तँ गप-सप्प अछिए। ओ बाजल-

"हेल्लो अंजली?"

अंजली जवाब दैत बजली-

"हेल्लो विक्रम!"

विक्रम फेर बाजल-

"अंजली की हाल-चाल अछि।"

अंजली जवाब देलक-

"सभ ठीक-ठाक अछि। अहाँ अप्पन सुनाउ। बहुत दिनपर देखलौं हेन।"

विक्रम जवाब देलक-

"हँ, पनरह दिनसँ पटनामे रही। पेपरमे तँ देखनइये हेबै।

बाबूजीकेँ मंत्री-मण्डलमे शामिल कएल गेलैन हेन। हुनका बिजली मंत्री बनौल गेलैन हेन।"

अंजली बजली-

"हमरा तरफसँ बधाइ।"

विक्रम बाजल-

"धैनवाद। अच्छा अंजली ई नव छात्रा?"

अंजली जवाब दैत बजली-

"ई अलका छी। हमर ममेरी बहिन।"

विक्रम पुछलक-

"पहिने तँ ई ऐ कौलेजमे नै छेली।"

अंजली कहलक-

"हँ, पहिने ई मोतीहारी कौलेजमे छेली। अलकाक बाबूजी यानी हमर मामा ओतए इलाहाबाद बैंकमे मैनेजर छलाह। एक मास पहिने हुनक बदली भोपाल भऽ गेलैन। तँए अलका मोतीहारी कौलेजसँ टी.सी. लऽ रामनगर कौलेजमे एडमीशन करा लेली। आब ओ बी.ए. फाइनल अही कौलेजसँ करती।"

विक्रम अलका दिस घुमि कऽ बाजल-

"हेल्लो अलका।"

अलका बजली-

"हेल्लो।"

ताबेमे घन्टी बजल। अंजली आ अलका अपन-अपन क्लास दिस विदा भऽ गेली। विक्रम मने-मन बाजल-

"देखब अहूँ के देखब।"

ओ कौलेजक कैन्टीन दिस विदा भऽ गेला।

अंजलीक घर रामेनगरमे। ओ रामेनगर कौलेजसँ इन्टर केलक आ रामेनगर कौलेजमे हिन्दी विषयमे बी.ए. आनर्समे नाओं लिखौलक।

अलकाक बाबूजी इलाहाबादसँ बदली भऽ मोतीहारी एला तँ अलका मोतीहारी कौलेजसँ इन्टर कऽ मोतीहारीए कौलेजमे हिन्दी आनर्समे नाओं लिखौलक। मैट्रिक ओ इलाहाबादेसँ केने छेली। जखन हुनकर पिताजीक बदली भोपाल भऽ गेलैन तखन अलका मोतीहारी कौलेजसँ टी.सी. लऽ रामनगर कौलेजमे नाओं लिखा लेली। दुनू कौलेज एके विश्वविद्यालयमे पड़ैत अछि तँए कोनो परेशानी नै भेल।

अलका आ अंजली ममियौत-पिसियौत बहिन। अंजली जेठ आ अलका छोट। अलका अपना पीस ओतए रहि कऽ पढ़ए लगली।

रातिमे जखन अलका आ अंजली सुतए गेली तँ अलका पुछलक-

“दीदी तों विक्रमकेँ टेट्रा हीरो किए कहै छीही? हीरो सुनैत छी, डबल हीरो सेहो सुनैत छी। मुदा ई टेट्रा हीरो तँ पहिल बेर सुनलौं हेन!”

अंजली जवाब दैत बजली-

“हमहींटा नहि, पूरा कौलेज विक्रमकेँ टेट्रा हीरो कहैत अछि। देखलीही नहि केहेन स्टाइल बनौने रहए आ केहेन स्टाइलमे सिगरेटक धुआँ मुहसँ बहार करए। ओकर चरित्र बड़ गड़बड़ छइ।”

अलका पुछलक-

“की चरित्र गड़बड़ छइ?”

अंजली बजली-

“विक्रम कौलेजक लड़की सभकेँ बड़ टॉर्चर करै छइ। कोनो लड़कीक ओढ़नी खींच लइ छै तँ कोनो लड़कीसँ भद्दा मजाक सेहो करए लगैत अछि। लड़की सभ ओकरासँ डरल रहैत अछि।”

अलका बजली-

“की दीदी, तोहूँ ओकरासँ डरै छीही?”

अंजली जवाब देली-

“हम कोन बड़का बापक बेटी छी। प्रिंसिपल साहैबक बेटी सेहो ओकरासँ डरैत अछि।”

अलका पुछलक-

“आखिर एहेन कोन बात छै जे सभ ओकरासँ डरैत अछि?”

अंजली बजली-

“विक्रम कौलेजक मुख्य दाताक परिवारसँ विलौंग करैत अछि। ओकरे दादा दीनदयाल बाबू दस बीगहा जमीन दऽ कौलेजक स्थापना करबौने रहथिन।हुनके नाओंपर कौलेजक नाओं- दीनदयाल जनता महाविद्यालय- रामनगर अछि। विक्रमक पिताजी प्रभुदयाल बाबू कौलेजक प्रबन्ध समितिक अध्यक्ष छथिन। प्रभुदयाल बाबू दस बर्खसँ रामनगर विधान सभा क्षेत्रसँ विधायक छथिन। एमकी मंत्री-मण्डलमे हुनका बिजली विभागक कैविनेट मंत्रीक पद देल गेलैन हेन। कौलेजक सभ प्रोफेसर आ कर्मचारी विक्रमसँ डरैत अछि। बहुत प्रोफेसर आ कर्मचारीसँ तँ विक्रम रंगदारी सेहो तसिलैत अछि।”

अलका बजली-

“ऐँ गे दीदी। बड़का बापक बेटा छी तँ कौलेजमे गुण्डपनी करत! की विक्रमक क्रिया-कलाप प्रभुदयाल बाबूकेँ नै बुझल छैन। प्रिंसिपल साहैब हुनका किएक ने सभ गप कहै छथिन।”

अंजली कहलक-

“असलमे विक्रम अपना बापक एकलौता बेटा छी। तँए बेसी दुलारू रहल अछि। मंत्रीजी हुनका पटना डेरापर रहए लेल कहैत छथिन मुदा ओ नालायक ओतए रहए नै चाहैत अछि।”

अलका बजली-

“पटनामे गुण्डपनी थोड़ेक चलत। पटनामे गुण्डपनी करत तँ मुख्यमंत्री लग शिकायत हएत। बेटाक चलते बापोकेँ मंत्री पदसँ हाथ धुअए पड़त।”

अंजली-

“हँ, तँए ओ पटनामे नै रहि रामेनगरमे रहैत अछि। एकटा गप और छइ।”

अलका पुछलक-

“ओ की दीदी।”

अंजली कहए लगली-

“ओ की कोनो कौलेजक नियमित छात्र छी। ओ तँ दू बेरसँ बी.ए. फाइनलमे फेल कऽ रहल अछि। खाली लड़कीकेँ अपना चंगुलमे फंसबै खातिर कौलेज अबैत अछि। ओ दसटा लड़काक गिरोह बनौने अछि। ओकरा सभकेँ चाह-नाश्ता, दारू-मुर्गा खियबैत-पियबैत रहैत अछि।”

अलका बजली-

“दीदी एहेन गुण्डासँ तों गप किएक करै छैं? एहेन आदमीसँ तँ नफरत करबाक चाही।”

अंजली बजली-

“हम तँ डरे गप करै छी। ओकरा ई नै बुझाइ जे हम ओकरासँ

नफरत करै छी। जखन कि वास्तवमे हम ओकरासँ नफरत करै छी। जहियासँ विभाबला घटना बुझलिऐ।”

बिच्चेमे अलका पुछलक-

“की विभाबला घटना? कनी फरिछा कऽ कह ने।”

अंजली कहए लगली-

“सुन। विभाक बाबूजी कौलेजक चपरासी छी। ओकर घर विक्रमक घरक बगलेमे पड़ैत अछि। विक्रमेक बाबूजी विभाक पिताजी–दीना भाय–कैँ कौलेजमे चपरासीक नौकरी दियौलकैन।”

अलका पुछलक-

“विभाक पिताजीकैँ दीना भाय किए कहलीही? की ओ तोहर रिलेटीव छियौ?”

अंजली कहली-

“नै गे। तों नव-नव कौलेजमे एलही हेन तँए तोरा नै बुझल छौ। दीना भाइक पूरा नाओं दीना नाथ वर्मा छिऐन। मुदा तेतेक नीक सोभाव आ बेवहार हुनकर छैन जे प्रिंसिपल साहैबसँ लऽ कऽ सभ प्रोफेसर, कर्मचारी आ छात्र-छात्रा हुनका दीना भाय कहि कऽ सम्बोधित करै छैन। खाली विक्रमेटा हुनका दीनू वर्मा कहैत छैन।”

अलका फेर पुछलक-

“अच्छा विभाबला घटना बता। की भेल रहै विभाक संग।”

अंजली-

“एक दिन विभा पएरे कौलेजसँ घर जाइत छेली। विक्रम देखलक तँ ओ फटफटिया गाड़ी लऽ कऽ ओकरा लग जा कऽ कहलक- ‘आ गाड़ीपर बैस। हमहूँ घरे चलैत छी। तोरा तोहर घर लग उतारि देबौ।’

तैपर विभा बजली- ‘नै अंकल हम पएरे चलि जाएब। अहाँ जाउ।’

विक्रम जोर दैत बाजल- ‘बैस ने। कतेक नखरा करै छें। एक दिस अंकल कहैत छें दोसर दिस डरैत छें। की कियो अपना अंकलोसँ डरैत अछि।’

विभा बजली- ‘नै अंकल से बात नै छइ। कियो देखत तँ की कहत। अहाँ जाउ हम पएरे आबि जाएब। पनरह-बीस मिनटमे तँ पहुँचिये जाएब।’

मुदा विक्रम नै मानलक। ओ बाजल- ‘तों हमरा बातकेँ ठोकराबै छें। एकर अंजाम बुझै छीही।’

आखिरमे विभा ओकर मोटर साइकिलपर बैसल। बैसल तँ मुदा विक्रमसँ चारि इंच पाछाँ घुसैक कऽ। विभाकेँ फटफटियापर बैसते विक्रम गाड़ी स्टार्ट केलक आ ततेक स्पीडमे गाड़ी चलौलक जे विभाकेँ हारि कऽ विक्रमकेँ भरि पाँजकेँ पकड़ए पड़ल। नै तँ ओ गिर जाइत।

विभा बाजल- ‘अंकल गाड़ी रोकू। मुदा विक्रम विभाक बातकेँ अनसुना करैत गाड़ीक स्पीड आर बढ़ा देलक। गाड़ीकेँ रामनगर बाजार दिस नहि लऽ जा कऽ नेशनल हाइबे दिस मोड़ि देलक। विभा डरे सर्द भऽ गेली। ई तँ संयोग नीक रहए जे ओमहरसँ विक्रमक पिता- विधायकजी अबैत छलाह। विधायकजी गाड़ीएमे सँ विक्रमकेँ देखलखिन। ओ ड्राइभरसँ कहि गाड़ी सड़कपर रोकि कऽ उतैर गेला। ओ विक्रमक मोटर साइकिलपर विभाकेँ देख नेने रहथिन। विभो विधायकजी केँ देख नेने रहए। ओ जोरसँ हल्ला केलक- ‘बाबा बचाउ। विक्रम अंकल हमरा जबर्दस्ती नेने जाइत अछि।’

विक्रमो अपना पिताकेँ सड़कपर खड़ा देखलक तँ मोटर साइकिल रोकि देलक।

विभा मोटर साइकिलपर सँ कूदि कऽ उतैर गेल आ विधायकजी लग जा कऽ कानए लगल। विधायकजी सभ गप बुझि गेला। बुझबो केना ने करितैथ। परोक्ष रूपसँ तँ विक्रमक गुण्डागर्दीक खबैर हुनका होइते रहै छेलैन। ओ विभाकेँ गाड़ीमे बैसौलक आ अपना घर-रामनगर एला। तैबीच विधायक जीक मोबाइलक घन्टी बजल। ओ मोबाइल रिसिव करैत बजला- 'हलो, के बजै छी।'

ओमहरसँ अवाज आएल- 'सर हम दीना बजै छी। विक्रमबाबू विभाकेँ मोटर साइकिलपर बैसा कऽ नेशनल हाइवे दिस लग गेला हेना।'

ई कहि ओ कानए लगल। विधायकजी फोनपर कहलखिन- 'जुनि कानू दीनाजी। विभा सुरक्षित हमरा लग अछि। अहाँ हमरा घरपर आबि जाउ।

दीना भाय, विधायक प्रभुदयाल बाबूक ओइठाम पहुँचला। दीना भायकेँ देखते विभा जोरसँ कानए लगल। कनैत बाजल- 'बाबूजी जँ आइ विधायक बाबा नै भेटितैथ तँ अहाँकेँ हमर लाश भेटैत।'

विभा सभ घटना अपन बाबूजी आ विधायकजीकेँ बता देलकैन। विधायकजी विभा आ दीना भायसँ बेटाकेँ तरफसँ गलती मानैत हुनका सभकेँ वापस घर भेज देलखिन।

ऐ घटनाक बाद विभा कौलेज एनाइ छोड़ि देलक। ओ हमर बड़ नजदीकी बहिना छी। हमरा किछ बुझले ने रहए। एक दिन दीना भायसँ पुछलिऐ तँ ओ बतौलैन- 'विभा बीमार अछि।'

हम विभाकेँ देखए ओकरा घर गेलिऐ तँ विभा हमरा सभ बात बतौलक आ कहलक- 'बहिना विक्रमक चालिमे कहियो ने फँसिहेँ। ओइ दिनसँ हम विक्रमसँ नफरत करए लगलौं।"

अलका बाजल-

“ठीक छै दीदी। हम ओकरासँ नै डरब आ ने ओकरासँ गपे करब।”

अंजली बजली-

“विक्रमसँ दूरे रहैमे फायदा छौ।”

मंगल दिनक गप छी। अंजली आ अलका कॉमन रूमसँ निकैल अपन-अपन क्लासमे जाइ छेली आकि विक्रम पहुँचल। ओ मोटर साइकिल रोकि कऽ बाजल-

“हेल्लो अंजली।”

अंजली बाजल-

“हेल्लो। हेल्लो विक्रम।”

विक्रम फेर बाजल-

“हेल्लो अलका।”

मुदा अलका किछ जवाब नै देलक। ओ जोर-जोरसँ चलैत अपना क्लास दिस बढ़ि गेल। तैपर विक्रम बाजल-

“देख लेबो। तोरो देख लेबो अलका। जे गति-लीलाकेँ केलिऐ सएह गति तोहर नै केलियो तँ हमर नाम विक्रम नहि।”

अंजली डरि गेली आ सोचए लगली। ठीके बीस-पच्चीस दिनसँ लीलाकेँ नै देखै छिऐ। ओ सोचए लगली लीला साथे कोनो अनहोनी तँ नै भऽ गेलै हेन!

अलका आ अंजली जखन कौलेजसँ वापस घर अबैत छेली तँ अलका पुछलक-

“दीदी ई लीला के छी। ओकरा साथे विक्रम कोन घटना केलक हेन।”

अंजली जवाब देलक-

“लीला हमरे संगे हिन्दी आनर्सक छात्रा छी। ओकर बाबूजी फौजमे नौकरी करै छला। कारगिलमे शहीद भऽ गेला। लीला पढ़ैमे चन्सगर अछि। ओ स्वभिमानी सेहो अछि। देखबा-सुनबामे बड़ सुन्नैर। बड़ कम बजएवाली। एक दिन विक्रम ओकरो मोटर साइकिलपर बैसैले कहने छल मुदा लीला ओकरा चालिमे नै फँसल। मुदा बीस-पच्चीस दिनसँ ओ कौलेज नै आबि रहल अछि। जखन कि एको दिन अवसेन्ट नै रहै छेली।”

अलका बजली-

“दीदी विक्रम हमरा धमकी देलक जे, जे तोरो गति लीला जकाँ नै बना दियौ तँ हमर नाओं विक्रम नहि।”

अंजली कहलक-

“हँ गे, हमरा तँ तोरो चिन्ता भऽ रहल अछि। तहूँ तँ विचित्र छेँ। विक्रम तोरा हेल्लो कहलकौ तँ तोंहू ओकरा हेल्लो कहि दैतहिन। ऐमे तोहर की चल जइतौ।”

अलका बाजल-

“दीदी तों चिन्ता जुनि कर। पहिने चल तँ लीलाक घरपर, देखिऐ ओकर की हाल-चाल छइ।”

दुनू बहिन लीलाक घर गेली। लीलाक माए आ लीला अँगनेमे छेली। लीलाक चेहरा एकदम पीयर भऽ गेल रहए। लीला अंजलीसँ बतौलक-

“जे एक दिन विक्रम बजारसँ हमरा एकटा बोलेरो गाड़ीमे उठा कऽ एकटा सुनसान जगहपर लऽ जा कऽ बलात्कार केलक, आ कहलक जँ केकरो कहबीहीन तँ तोहर नग्न फोटो पूरा कौलेज आ

बाजारमे बाँटि देबौ। हारि कऽ तोरा आत्महत्या करए पड़तौ।”

ई कहि लीला आ लीलाक माए कानए लगली।

अंजली लीलासँ पुछलक-

“ऐ घटनाक सूचना तों थानामे नै देलहीन?”

लीलाक माए बजली-

“गइ बुच्ची, थाना-कोर्ट सब तँ ओकरे छिऐ। कोनो फायदा नै होइत। उल्टे बदनामी।”

अलका बाजल-

“लीला बहिन, धैर्य राखू। अहाँक साथे जे घटना भेल ओ हमरो साथे भऽ सकैत अछि। हम सभ मिलि कऽ ऐपर विचार करब।”

ऐगला दिन अंजली आ अलका कौलेजक कैन्टीनसँ क्लास जाइत छेली। विक्रम अलकाकेँ रास्ता रोकि कहलक-

“बड़ घमण्ड छौ तोरा।”

ई कहि ओ अलकाक ओढ़नी पकैड़ कऽ खींचलक। अलकाकेँ जुडो कराटाक नीक प्रैक्टीस छल। ओ तीन-चारि करार्टामे विक्रमकेँ जमीनपर गिरा देलक। तीन-चारिटा विक्रमक चमचा अलकापर झपटल, मुदा अलका ओहो तीनू-चारू लड़काकेँ जमीनपर गिरा वेहोश कऽ देलक। पूरा कौलेजमे जंगलक आगि जकाँ ई घटनाक खबर पसैर गेल।

कौलेजक सभ लड़की अलकाकेँ घेर लेलक। ओइमे सँ किछ लड़की अलकाकेँ उठा प्रिंसिपल साहैबक चेम्बर दिस बढ़ल। अलका बहिन जिन्दावादक नारासँ पूरा कौलेज गुंजयमान होमए लगल।

जखन प्रिंसिपल साहैबकेँ ऐ घटनाक खबर भेलैन तँ हुनका किछु फुरबे ने करैन। ओ सोचथिन जे विक्रम मंत्रीजीक बेटा छी।

हमरापर कोनो-ने-कोनो कार्रवाइ जरूर हएत। एमहर कौलेजक छात्र-छात्रा, प्रोफेसर, कर्मचारी, सभ मिलि कऽ प्रिंसिपल साहैबकेँ विक्रम आ ओकर चमचापर कार्रवाइ करबाक लेल दबाब बनौलक।

अलका प्रिंसिपल साहैबकेँ कहलक-

"गुण्डा सभकेँ गिरफ्तार कराउ। नै तँ हम सभ चेम्बरसँ नै निकलए देब।"

सभ छात्र-छात्रा, प्रोफेसर, कर्मचारी अलकाक बातक समर्थन केलक। हारि कऽ प्रिंसिपल साहैब थाना फोन केलखिन। दरोगा अपन दल-बलक संगे कौलेज आएल मुदा विक्रमकेँ गिरफ्तार करएमे आना-कानी करए लगल। पिंसिपल साहैब ऐ घटनाक सूचना विक्रमक पिताजीकेँ फोनपर देलखिन। मंत्रीजी कहलखिन-

"हम एक घन्टामे कौलेज पहुँच रहल छी।"

मंत्रीजी रामनगरसँ चालीस किलोमीटर दूरीपर एकटा पावर ग्रिड स्टेशनक उद्घाटन कार्यक्रममे छला।

ठीक एक घन्टाक बाद ओ कौलेजपर पहुँचला। कौलेजक हॉलमे सभ छात्र-छात्रा, प्रोफेसर-कर्मचारीक संगे मंत्रीजी आ प्रिंसिपल साहैब बैसला।

मंत्रीजी अलकाकेँ धैनवाद दैत विक्रमक बद्-तमीजीक लेल माफी मंगलखिन।

अलका कहलक-

"माननीय मंत्री महोदय आ प्रिंसिपल साहैब, अपने सभ कियो हमरा संगे लीला बहिनक ओइठाम चलू।"

मंत्रीजी संगे अंजली, अलका आ प्रिंसिपल साहैब, लीला ओइठाम पहुँचल।

लीला, मंत्रीजीकेँ अपना संगे घटल सभ घटना बतौलक।

अलका बाजल-

“माननीय मंत्रीजी, जँ लीला अपनेक बेटी रहैत तँ अपने की करितिऐ?”

मंत्रीजीक बोलती बन्द भऽ गेलैन। थोड़ेकालक बाद ओ बजला-

“लीला बेटीक संगे जे घटना भेलै ओ जघन्य अछि आ विक्रम जे घटना केलक ओ अक्षम्य अछि। बाजू अलका बेटी एकर की समाधान हेतै आ विक्रमकेँ कोन दण्ड देल जाए।”

अलका बाजल-

“विक्रमकेँ लीला बहिनक संग बिआह कऽ दियौ।”

अलकाक प्रस्तावकेँ स्वीकारैत मंत्रीजी कहलखिन-

“विभाक बिआह सेहो हएत। प्रिंसिपल साहैब, अहाँक नजैरमे कोनो लड़का हुअए तँ बाजू। विभाक कन्यादान हम स्वयं करब। देहेज तँ नै मुदा किछ उपहार देब।”

काल्हि बिआह पंचमी छी। ऐगला दिन पूरा कौलेज दुल्हनक भाँति सजौल गेल। कौलेजक फील्डमे पण्डाल बनल। विक्रम आ लीलाक बिआह आ संगे विभाक संग दीपककेँ सेहो बिआह करौल गेल। प्रिंसिपल साहैब लीलाक आ विधायकजी विभाक कन्यादान केलखिन। कौलेजक सभ छात्र-छात्रा तथा प्रोफेसर-कर्मचारी उपस्थित छला। सभ कियो लीला आ विक्रमक संग दीपक आ विभाकेँ बधाइ देलक। दीपक रामनगरे कौलेजमे किरानी-पदपर कार्यरत छैथ। अलकाकेँ पकैड़ लीला बोम फाड़ि कऽ कानए लगली।

मंत्रीजी बजला-

"बेटी हुअए तँ अलका जकाँ।"

अलका विक्रमक लग जा पुछलक-

"विक्रम भैया अपनेकेँ भाइजी कहू आकि पहुना?"

विक्रम जवाब देलक-

"भाइयेजी नीक रहत। एमकी राखीमे अहाँक घरपर आएब।"

"नै भाइजी अहाँ नहि तोरा कहियो। तोरामे अपनत्वक बोध होइत अछि।"- अलका बजली।

"अच्छा, तोरा घरपर राखीमे ऐबौ।" – विक्रम बाजल।

"हम अखने अहाँ हाथमे राखी बान्हब।"

ई कहि अलका अपना ओढ़नीकेँ फाड़ि विक्रमक हाथपर बान्हि देली। विक्रम अलकाकेँ एकटा पाँच साए टकाक नोट देलक।

विक्रम, अलका, अंजली आ लीलाक संगे विभाक आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल।



शब्द संख्या : 2482

मरजादक भोज

निर्मली-घोघरडीहा लिंक रोडपर कोसी प्रोजेक्ट कालोनीसँ पच्छिम एकटा चाहक दोकानपर चाह पीबैत रही। हमरा संगे राजदेवजी आ महेशजी सेहो चाह पीबैत रहैथ। राजदेवजी पुछला-

“की यौ रायजी, दुर्गा बाबूक बेटाक बियाहमे बरियाती जेबै की?”

हम कहलयैन-

“यौ बरियाती जाइमे तँ बड़ परेशानी छइ। रातिमे जाउ भोजन करू आ तुरन्ते गाड़ीमे बैसू आ आपस आउ। कनेको आराम नहि। मुदा नै जेबै सेहो नइ बनैए। जाए तँ पड़बे करत किने।”

तैपर महेशजी बजला-

“आइसँ तीस-पैंतीस बर्ख पहिने जे बरियाती जाइ छेलौं, ओइ बरियातीमे केहेन आनन्द अबै छल। रातिमे बरियाती जाइ छेलौं, विहान भने रूकै छेलौं, घरवारी (कन्यागत) मरजादक भोज खुअबै छला आ तेसर दिन जलखै खुआ कऽ बरियातीक विदाइ करै छला।”

मर्यादासँ मरजाद होइत अछि तँए मरजादक भोजक अपन अलग महत्त अछि। मरजादक भोजक नाओं सुनि हमरा दूटा मरजादक भोज मोन पड़ि गेल।

08 मार्च 2016 कैँ रामबाबूक बेटीक बिआह बड़ धूम-धामसँ भेल। बरियातीमे बोलेरो, क्वालिस, स्कार्पिओ आ टाटा सूमो मिला कऽ

एगारह गोट गाड़ी आएल छल। एकर अलाबे दूटा मैक्सी आ एकटा टेक्टर सेहो आएल छल। भी.आइ.पी. टाइप बरियाती बोलेरो, स्कारपिओ, क्वालिस आ टाटा सूमो गाड़ीमे आएल छला, जखन कि गाम-घरक साधारण लोक दुनू मैक्सीमे आएल छला। भार आ डाल-दौरा आदि समान टेक्टरमे आएल छल। बरियातीमे बैण्ड बाजाक आलाबे डी.जे. सेहो आएल रहए। डी.जे. बाजापर नचैले बरियातीक युवक आ गौंआँ युवकक बीच मारि-पीट भऽ जइतए मुदा रच्छ रहल ई जे दुल्हाक पिता श्रीलालजीकेँ ऐ बातक खबर भऽ गेलैन आ ओ आबि कऽ डी.जे बाजा बन्न करा देलखिन आ कल जोड़ि कऽ गौंआँ आ बरियातीक बीच ठाढ़ भऽ कहलखिन-

“आब डी.जे. बाजा बन्न रहत। अहाँ सभ बैंड बाजाक आनन्द लिअ। मुदा कियो नाचू जुनि।”

सभ कियो हुनकर बात मानि लेलकैन।

धमौरा गाममे सोने लालक परिवारक गिनती प्रतिष्ठित परिवारमे होइ छैन। किएक तँ सोने लालक पिताजी गेनालाल बड़ पैघ जमीन्दार छला। तीन-तीन गाममे कामत छेलैन। तीन साए बिगहासँ बेसी जोतसीम जमीन रहैन तेकर अलावे दस बिगहामे पोखैर, बाँस आ कलम रहैन। दरबज्जापर पतियानी लगा कऽ बखारी रहैन। जेहेन घोड़ापर गेनालाल चढ़ै छला ओहन घोड़ाक दाम अखन लाख टकासँ कम नै हएत। सोने लालो अपना अमलदारीमे जीप रखने छला।

सोने लाल बापक श्राद्धमे दिल खोलि कऽ भोज केने छला। भोजो की आजी-गुजी रहए? नहि। सभा परहक भोज रहए। ओहोमे खाजा-लड्डूक भोज। शुद्ध घीमे बनल। एक मास धरि भोज होइते रहल। किए तँ एक दिनमे एक्के गामक पंचकेँ खुआबै छेलखिन। अखनो बुढ़-पुरान लोक ओइ खाजा-लड्डुक भोजक चर्च करैत नइ

अघाइ छैथ।

ओही सोनेलालक माझिल बेटा रामबाबूक बेटीक बिआह छेलैन। रामबाबूक एकटा बेटा एम.ए. पास कऽ गैमन इण्डियामे भण्डारपाल पदपर नौकरी करै छथिन। पाइ कमा कऽ टाल लगा देने छथिन।

रामबाबूक दूटा बेटीक बिआह तँ बापेक अमलदारीमे भऽ गेल छेलैन। मुदा तेसर बेटी भारतीक आइ बिआहक मरजाद छी। आब तँ रातिमे बरियाती अबैत अछि आ रातियेमे खा-पीब कऽ चल जाइत अछि। बड़ भेल तँ बरक संगे बरक बाबूजी आ चारि-पाँच गोटेक आर रहला जिनका कन्यागत जलखै खुआ कऽ विदा कऽ दइ छथिन। जँ लग-पासक बरियाती रहल तँ भोजनो करबै छथिन।

मुदा रामबाबू बरक पिता श्रीलालजीकेँ कहने रहथिन-

“ई धमौरा छी, तहूमे हम सभ खबास पट्टी छी। हम बरियातीकेँ मरजाद राखब। मरजादक विहान भने जलखै खुआ कऽ डाली-पाती देब तखन बेटीक विदागरी करब।”

तैपर बरक पिता श्रीलालजी कहने रहथिन-

“अहाँक शर्त्त हमरा मंजूर अछि मुदा गाड़ी-घोड़ा जे दू-दिन अँटकत तेकर भाड़ा अहाँकेँ देमए पड़त।”

तैपर रामबाबू कहने रहैन-

“हम डालीमे गाड़ी-घोड़ा, गाजा-बाजाक खरचा जोड़ि कऽ देब।”

सूर्यास्तसँ पहिने मरजादक भोज शुरू भेल। अँगनासँ लऽ कऽ दरबज्जा तक बरियाती आ सर-कुटुम खेनाइ खाइले बैसला। गामक नतहारी खरिहाँनमे बैसला। मरबापर बर, बरक पिताजी, बरक माम,

बरक बहनोइ आ बरक संगी-साथी मिला कऽ एगारह गोरे भोजन करए बैसला। सबहक आगाँमे फाइवरबला प्लेट, कटोरा आ गिलास परसल गेल। तुलसी फूल चाउरक भात, राहैड़क दालि, भाँटा-अल्लू आ सजमैन-कोबीक तरूआ, अल्लू-कोबीक तरकारी, तिलौरी, चरौरी, अमलाक अचार, तरलाहा मेरचाइक संग टमाटरक चटनी, सलाद, पापड़ आ शुद्ध देशी घी परसल गेल। तदोपरान्त भोजन शुरू भेल। जखन लोक दालि खेनाइ बन्न कऽ देलक तखन बैगन-अदौरी परसल गेल। बैगन-अदौरीक बाद बरी-झोरी चलल। अँगनामे दोहरा-तेहरा कऽ बरी-झोरी बाँटल गेल मुदा दरबज्जापर बारीक एक्केबेर बरी-झोरी बाँटि कऽ चलि गेल। कियो देखनिहार नै छल। अँगनेमे सँ दही-चीनी आ सकरौरी बाँटब शुरू भेल। जखन दरबज्जापर दहीक बारीक आएल तँ रामबाबूक बहनोइ मुरहद्दीबला श्यामलाल बजला-

"दरबज्जापर आ खरिहाँनमे एक्केबेर बरी-झोरी बाँटल गेल अछि। खेनहार सभ झोरी मंगिते अछि।"

रामबाबू दहीक बारीक संगे छला। श्यामलालक बात सुनिते देरी हुनकर टीक ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ बहनोइकेँ कहलखिन-

"की कहलिऐ, झोरी मंगिते अछि? हँ यौ, जे भोज नै करै छै, से दालि बड़ खाइ छइ। यौ के आइ-काल्हि मरजाद रखै छइ। हमरो गाममे एकसँ एक भूप सभ छैथ मुदा बरियातीकेँ रातियेमे विदा कऽ दइ छथिन।"

तैपर मुरहद्दीबला श्यामलाल बजला-

"छोड़ू ने, कियो अपन नाओं करैत अछि। अहाँ बरियातीकेँ मरजादक भोज खुएलौं तँ अपन नाओं केलौं। दोसर गप्प जे भगवान अहाँकेँ सकरता देने छथिन। तँए मरजाद रखलौं।"

रामबाबू बजला-

“हमरोसँ बेसी सकरताबला लोक अही धमौरा गाममे अछि। देखै छिऐ जे रातियेमे विदागरी कऽ दइ छथिन। किएक तँ जँ विहान भने विदागरी करथिन तँ दस-बीस कप चाह आ किछ गोरेकेँ जलखैयो खुआबए पड़तैन किने।”

श्यामलालकेँ सारक बात विसाइन जकाँ बुझेलैन ओ बजला-

“अच्छा जेतए लोक जे करैए तेकरा छोड़ू आ आब चूप रहू। बरियातीमे सभ तरहक लोक छथिन, सुनता तँ की कहता?”

रामबाबू बजला-

“की कहता? कियो ने किछु कहता। हँ, वएह किछु कहता जे कहियो भोज नै केने हेता।”

श्यामलाल सोचलैन जे जँ आगा किछु बजै छी तँ ई आओर बेसी बजता तइसँ नीक जे चुप्पे रही आ एतए-सँ ससैर जाइ। ओ चुपचाप ओतए-सँ जाए लगला।

मुदा रामबाबू चुप नै रहला ओ आगाँ बजला-

“देखब अहूँकेँ। एक्केटा बेटी अछि। देखब केतेक खर्च करै छी आ केहेन बर-बरियातीक स्वागत करै छी।”

ई गप श्यामलालो सुनलखिन मुदा चुप्पे रहब उचित बुझलैन। तँए चुप्पे रहला। ओ दलानपर जा कऽ पड़ि रहला। रहि-रहि कऽ हुनका सारक बात ‘देखब अहूँकेँ...।’ कानमे गुंजए लगलैन।

दलानपर एला श्यामलालकेँ दू-तीन मिनट भेल हेतैन कि अँगनामे हल्ला सुनलैन। ओ हड़बड़ा कऽ उठला आ अँगना पहुँचला। अँगनामे रामबाबू जोर-जोरसँ बजैत रहथिन-

“कहू तँ अहाँ सभ केतेक दही जिआन कऽ देलिऐ। कोनो कि ई दही पोडरक छी? फुल क्रीम सुधा दूधक दही छी। चालीस रूपैये लीटर

दूध कीनि कऽ दही पौड़ल गेल अछि।”

तैपर बरक पिताजी बजला-

“यौ समधी, भोज-काजमे किछ-ने-किछ जिआन हेबे करै छइ। की करबै अहिना होइ छइ।”

रामबाबू बजला-

“अहाँ कहै छिऐ, की करबै? केहेन-केहेन लोककेँ बरियाती अनने छी जे हमरा बेइज्जत करैपर वीर्त अछि। अहीं कहू जे एकटा पातमे दही घटि जाइत तँ हमर प्रतिष्ठा रहैत?”

श्रीलालजी बजला-

“आब हल्ला केलासँ कोन फेदा। एतेक खरचा केलौं तइले कोनो बात नहि आ दू-चारि सेर दही जिआन भऽ गेल तइले तामस करै छी। लिअ हमरेसँ लगती भेल। हमहीं माफी मंगै छी। मुदा बरियातीकेँ किछ ने कहियौन। ओ सभ फेर अपनेक दरबज्जापर नइ औता। हम अपनेक कुटुम भेलौं, केतेको बेर आएब।”

रामबाबूकेँ अपन गलती महसूस भेलैन। ओ बजला-

“नै समधी, अपनेसँ कोनो गलती नै भेल। हमरासँ बड़का भूल भेल। हम सभ बरियातीसँ माफी मांगै छी।”

श्रीलालजी जल्दी-जल्दी हाथ धोइ कऽ भरि पाँजमे रामबाबूकेँ लऽ छातीसँ लगा लेलखिन।

तीन भाँइक भैयारीमे रामबाबूकेँ एक्केटा बहिन सुगाबती जे तीनू भाएसँ छोट छली। सुगाबतीक बिआह मुरहद्दी गाममे भेल रहए। ओकर दुल्हा श्यामलालजी जमानाक मैट्रिक पास मुदा कोनो प्राइवेट वा सरकारी नौकरी नै करैत। पाँच बिगहा जोतसीम जमीन। श्यामलालजी खेती-गृहस्ती कऽ आ चटिया सभकेँ टीशन पढ़ा अपन

परिवारिक गाड़ीकेँ खींचैत दुनू बेटाकेँ बी.ए. पास करौलैन। हुनकर जेठका बेटा दिल्लीमे प्राइवेट नौकरी करैत अछि आ छोटका बेटा पंचायतेमे पंचायत शिक्षक। जेठका बेटा विवाहित जे अपन परिवार दिल्लीए-मे संगे रखैत। छोटका बेटा कुमारे। सभसँ छोट बेटी रीता जे झूमक महासेठ महिला कौलेज- मधुबनीमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ै छैथ। श्यामलालजीक दुनू परानीक मनमे छेलैन जे छोटको बेटाक बिआह कऽ ली। मुदा छोटका बेटा कहलकैन जाबे रीताक बिआह नै हएत ताबे अपन बिआह हम नै करब।

श्यामलालकेँ सासुरमे सार रामबाबूक बातक बड़ आनि लागल छेलैन। हुनका दिमागमे हरदम रामबाबूक बात नचैत रहैन। 'देखब बेटीक बिआहमे बरियातीक केहेन स्वागत करै छी।'

ओ मने-मन संकल्प केने छला जे सरबेटीक बिआहमे बरियातीक जे स्वागत भेल रहए तइसँ नीक स्वागत रीताक बिआहमे बिरयातीक करब। रामबाबू जेहेन खेनाइ बरियातीकेँ खुऔने रहथिन तइसँ नीक खेनाइ खुआएब। बरियातीक मरजादो राखब। फरवरीमे रीताक बी.ए. फाइनल-परीक्षा हएत। ऐगला मार्चमे ओकर बिआह कऽ देब। जुग-जमाना खराप छइ। जवान बेटीकेँ राखब नीक बात नहि। कोनो ऊँच-नीच भऽ जाएत तँ खनदानक नाक कटि जाएत।

श्यामलालजी आगू सोचैत रामबाबूक बेटा तँ गैमन इंडियामे नौकरी करै छै जे ढौआ कमा कऽ टाल लगा देने छइ। बेटेक कमाइपर रामबाबू एहेन डील-डालसँ बेटीक बिआह केलैन। मुदा हमरा तँ से नै अछि। एकटा बेटा परिवारक संग दिल्लीमे प्राइवेट नौकरी करैत अछि ओ रीताक बिआहमे बड़ सहयोग करत तँ लाख टकासँ बेसी थोड़े करत। छोटका पंचायत शिक्षक छी। ओहो बड़ देत तँ दूसँ अढ़ाइ लाख देत। गोटेक लाख अपना लग अछि। कुल मिला कऽ चारि-साढ़े

चारि लाख टाका देखै छी। बेटा सभकेँ जखने कहब जे बरियातीक मरजाद राखब तखने बेटा सभ कहत जे अहाँकेँ कुकुर कटने अछि जे बरियातीक मरजाद राखब। आब मरजाद के रखै छै, जे अहाँ राखब। मामक बेटाकेँ तँ दू नम्बरबला ढौआक कमाइ छैन तँए मरजाद राखि अपन नाओं केलैन। मुदा हमरा सभकेँ कोन दू नम्बरक कमाइ अछि। हमरा सभकेँ नाओं नइ करबाक अछि। रामबाबू आगाँ सोचैत मुदा किछु भऽ जाएत मरजाद रखबे करब। आ नीकसँ स्वागत-बात करबे करब।

धमौरासँ एलाक तेसर दिन बेरु पहर ओ गहुमक खेत दिस जाइत रहैथ। रस्तामे एकटा दू बिगहाक पोखैर अछि जइमे केचली भरल छेलइ। पोखैरक महारपर पहुँचला कि हुनका सारक बात मोन पड़ि गेलैन- 'देखब अहूकेँ एक्केटा बेटी अछि, बरियातीक केहेन स्वागत करै छी...।'

ओ महारपर ठाढ़ भऽ गेला। किछु जेना फुरबे ने करैन। नजैर पोखैरमे भरल केचलीपर पड़लैन। दसो बर्खसँ ई पोखैर मरना भऽ गेल अछि। तेकर कारण छल पोखैरक फटेदारक आपसी झंझट। ओ सोचला जँ ई पोखैर कोनो तरहेँ लीजपर हमरा भेट जाए तँ ऐमे माछ पोसि कऽ दू-चारि लाख टकाक उपार्जन भऽ सकैत अछि। ऐ पोखैरमे चारिअना फाँट हमरो अछि। ओ मने-मन सोचि लेलैन- जेना जे करए पड़त, करब मुदा ई पोखैर लीजपर लेब।

श्यामलाल चोट्टे घुमि गेला। गामपर एला पछाइत पोखरिक पाँचो फटेदारक बैसार केलैन। पाँचो फटेदारकेँ चाह-पान सेहो करौलखिन। चाह-पानक बाद कहलखिन-

"पोखैर हमरा दऽ दइ जाउ। जे उचित ढौआ हएत हम देब मुदा बाबा-परबाबाक खुनाएल पोखैरकेँ बर्बाद जुनि करै जाउ।"

किछु काल तँ बड़ धोल-फचक्का भेल मुदा अन्तमे पच्चास हजार रूपैआ सलानापर तीन बर्खक लेल श्यामलालकेँ पोखैर देबाक लेल सभ कियो सहमत भेला।

श्यामलाल पोखैरक केचली साफ करा जाल गिरौलैन। केचली साफ करबैमे जेतेक ढौआ लागल छेलैन जंगलिया माछसँ ओतेक आमद भऽ गेलैन। पोखैरक केचली नीकसँ साफ करा पोखैरमे चून गिरौलखिन। अगते अद्रा नक्षत्रमे तमुरिया हेचरीसँ माछक जीरा आनि कऽ पोखैरमे देलखिन।

माछक खोराकी लेल खइर, गोबर आ मूर्गी फार्मसँ मूर्गीक बिष्टा समय-समयपर पोखैरमे गिरबैत रहलखिन।

सुतरलैन, कातिक पूर्णिमाक विहान भने मलाह बजा पोखैरमे घुमौआ जाल फेकबौलखिन। एक्के छापमे दस-बारहटा दू साए ग्रामसँ आधा किलो धरिक माछ जालमे फँसि कऽ ऊपर भेल।

श्यामलालक मन खुशीसँ नाचए लगलैन। हुनका भेलैन जे आब हमर सपना साकार भऽ जाएत। सार जे कहने रहए 'देखब अहूँकेँ' ओ मोन पड़लैन। सोचए लगला फागुनमे रीताक बिआह करब। मलाहसँ पुछलखिन-

"अदहा फागुनमे ई माछ केतेक-केतेक टा भऽ जाएत?"

मलाह कहलकैन-

"पनरह फागुनमे ई माछ सभ कमसँ कम अदहा किलो भाकुर आ बिकेट एक किलोसँ सबा किलो धरिक भऽ जाएत।"

श्यामलाल आगाँ पुछलखिन-

"अदहा फागुनमे ऐ पोखैरसँ केतेक माछ ऊपर हएत आ ओइसँ केतेक ढौआक आमदनी हएत?"

तैपर मलाह कहलकैन-

"कमसँ कम पनरह क्विंटल माछ निकलत जइसँ दू लाखसँ बेसी ढौआक आमदनी हएत।"

9 मार्चकेँ रीताक बिआहक दिन तय भेल। एक मार्चकेँ पोखैरमे महजाल गिरा माछ बेच कऽ दू लाख पच्चीस हजार टका श्यामलालजीकेँ आमदनी भेलैन। पच्चास हजार टका पोखैरक फटेदारकेँ दऽ एक लाख पचहत्तर हजार रूपैआ श्यामलालजी रखलैन।

पहिने तँ दुनू बेटा बरियातीकेँ मरजाद रखैक विरोध केलकैन मुदा श्यामलालजी जखन धमौराक घटना सुनौलखिन तँ दुनू बेटा मरजाद रखैले सहमत भऽ गेलैन। बरक सरोमानक भार दुनू भाँइ अपना माथपर आ खेनाइ-पीनाइ आ स्वागतमे खर्च भार श्यामलालजी अपना ऊपर लेलैन।

रातिमे रीताक बिआह छल। रामेबाबूक समैधक दोसर बेटा जे रेलबेमे इंजीनियर पदपर कार्यरत छथिन हुनकेसँ बड़ धूम-धड़क्कासँ रीताक बिआह भेल। एक साएसँ ऊपर मरकड़ी रोडपर लगौल गेल छल। ताजमहल जकाँ पण्डाल बनौल गेल छल। रौतुका खेनाइमे पुरी-तरकारी, सलाद, तैपरसँ माछ आ अन्तमे सुधा दूधक बनल रसभरी आ वैष्णवक लेल पुरी, तरकारी, पलाउ, दालि फ्राइ, सलाद, पापड़ आ अन्तमे रसभरीक बेवस्था छल। आइ जलखैसँ पहिने बरियाती सभकेँ फलहार करौल गेलैन। फलहारमे सेब, समतोला, दारीम, अंगुर आ पँच-पँच छिम्मी मालभोग केरा छेलइ।

जलखैमे कचौरी-सब्जीपर चारि तरहक खीर जइमे चननचूर चाउरक खी, मखानक खीर, सेवइक खीर आ सबुरदानाक खीर तैपरसँ गाजरक हलुआ छेलइ। मरजादक भोजमे एगारहटा तरकारी,

अदौरी, बरी, घी, पापड़ सलाद, फूल क्रीम सुधा दूधक दही आ नारीयल, छोहाड़ा, किसमिस, इलायची देल सकरौरी सेहो खुऔल गेल। बरियाती सभ श्यामलालकेँ दिल खोलि कऽ यश देलकैन। दुल्हाक माम रामबाबूकेँ कहलकैन-

"ओना तँ धमौरामे बर-बरियातीक बड़ स्वागत भेल छल मुदा मुरहद्दीमे जे बरियातीक स्वागत भेल ओइ आगाँ अहाँ अठारह भेलौं आ श्यामलाल बाबू बीस भेला।"

तैपर रामबाबू बजला-

"यौ समधी श्यामलालो बाबू तँ हमरे बहनोइ छैथ किने। ओहो तँ धमौरेक अंग भेला किने।"

श्यामलालजीकेँ बरक मामक बात सुनि मनमे सबुर भेलैन जे बिआहक सभ खर्च ऊपर भऽ गेल। होइतो अहिना छै किने जे जखन कियो भोज-भनडारा करैत अछि आ भोज-भनडारा केनिहारकेँ यश भेट जाइ छै तखन हुनका संतोख हेबे करै छैन।

श्यामलालजी बजला-

"यौ समैध हम जे अपने लोकैनकेँ कण-साग लऽ कऽ स्वागत केलौं से सभ हिनके सबहक[1] आर्शीवाद छिऐन।"

बहनोइक बात सुनि रामबाबूक छाती सूप सन भऽ गेलैन, हुनका पैछला बात जे भारतीक बिआहमे बहनोइकेँ कहने रहथिन, ओ मोन पड़ि गेलैन। श्यामलालजीक महानता देख हुनका आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलैन।



शब्द संख्या : 2195

---

[1] रामबाबूक



नन्द विलास राय

जनम- २ जनवरी १९५७ ई.मे। पिताक नाओं- स्व. बच्चा राय, माता- स्व. दुर्गा देवी आ श्रीमती परमेश्वरी देवी। गाम+पोस्ट- भपटियाही, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार) मोबाइल नम्बर- ९९३१९०९६७१

जीविकोपार्जन- कृषि।

शैक्षणिक योग्यता- बी.एस-सी।

प्रशैक्षणिक योग्यता- आइ.टी.आइ. (टर्नर)

साहित्यिक कृति- (१) सखारी-पेटारी- लघु कथा संग्रह, (२) मरजादक भोज- लघु कथा संग्रह, (३) छठिक डाला- कविता संग्रह, (३) बहिनपा- एकांकी संचयन।



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-55-1